CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दू गौरव
२९३ गान

Raj Guru Math Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

8.2

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हिन्दू-गौरव-गान

[आर्य हिन्दू धर्म के सुखकारी पदों का संग्रह]

909

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gu

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ॐ

हिन्दू - गौरव - गान

[आर्य हिन्दू धर्म के सुखकारी पदों का संग्रह]

卐

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रकाशक—
अ० भा० आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ,
पो० बिरला लाइन्स, सब्जी मंडी, दिल्ली

सचित्र

वेद, उपनिषद् गीता, नीति, धम्मपद,
सन्तों की वाणी तथा संगठन-पद संयुक्त

संशोधित परिवर्धित दशम संस्करण, ४०००
२०१६ वि०

मुद्रक—
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
नई दिल्ली

मूल्य अजिल्द १)
" सजिल्द १।)

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

निवेदन

आजकल देखा जाता है कि बहुत से आर्य-धर्मियों को अपने धर्म की बातों का कुछ भी ज्ञान नहीं है, इसका कारण धार्मिक-शिक्षा और उपदेश का अभाव है। धार्मिक ज्ञान के अभाव के कारण ही हिन्दू-जाति छिन्न-भिन्न होती चली जा रही है। हिन्दू चाहे बौद्ध हों, सिक्ख हों, जैन हों, आर्य-समाजी हों, सब एक ही जाति के मनुष्य हैं। "महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा" से लेकर हरिश्चन्द्र, राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, ऋषभाचार्य, श्री शंकराचार्य, श्रीरामानुजाचार्य, श्रीनानकदेव, विक्रमादित्य, सम्राट् अशोक, सम्राट् चन्द्रगुप्त, शालिवाहन, शिवाजी और गुरु गोविन्द आदि सभी हिन्दू थे और हिन्दू लोग उनको अपना पूर्वज मानते हैं। इस प्रकार सब एक जाति के हैं और जाति की रक्षा के लिए सब एक हो सकते हैं।

समान धर्म

प्राचीन आर्य-धर्मी हिन्दू-जाति का एक समान धर्म है और वही हिन्दू-धर्म है। हिन्दुओं में इस समय कई साम्प्रदायिक धर्म हैं, पर सब के सिद्धान्त एक हैं। जिन्हें हम आज साम्प्रदायिक धर्म समझते हैं, वे वास्तव में हिन्दू-धर्म से स्वतन्त्र कोई भिन्न धर्म नहीं हैं। जिन महापुरुषों के नाम पर ये साम्प्रदायिक धर्म चले हैं, उन्होंने स्वयं कोई अलग अपना धर्म चलाना नहीं चाहा था। हिन्दू-धर्म के जो सर्वमान्य सिद्धान्त हैं और उनके अनुकूल जो आचरण हैं, वह जब-जब दूषित हुए हैं, तब-तब महात्माओं ने एक वा अधिक सिद्धान्तों पर जोर दिया है। इसका प्रमाण यही है कि हिन्दू-धर्म के आज जितने भी सम्प्रदाय हैं उनके भी सिद्धान्तों में विरोध नहीं है। हिन्दुओं में तीन चौथाई सनातनियों

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

की संख्या है और उनका धर्म हर प्रकार से एक है, इसमें तो कोई संदेह नहीं कर सकता। आर्य समाजियों का धर्म भी वही है जो सनातनियों का, इसे स्वयम् आर्य समाजी भी मानते हैं। दोनों का धर्म वैदिक धर्म है। अब रह गये जैनी और बौद्ध। कुछ लोगों की यह धारणा है कि ये दोनों धर्म अवैदिक हैं, अतएव ये हिन्दू-धर्म से भिन्न हैं। पर वास्तव में यह भूल है। इन धर्मों के उन्नति-काल की अवस्था जानने और उनके धार्मिक ग्रन्थों के पढ़ने से ही यह ज्ञात हो जायगा कि उनके धार्मिक सिद्धान्त भी वे ही हैं जो वैदिक हिन्दुओं के हैं। वेद ने "अहिंसा परमो धर्मः" माना है, इनका भी अहिंसा परम धर्म है। फिर इनका धर्म वेद-विरुद्ध कैसे कहा जा सकता है ? सच बात तो यह है कि इन्होंने वेदों की निन्दा नहीं की थी। वेद के नाम पर जो अधर्म हो रहा था उसकी निन्दा की थी। बुद्ध को सभी हिन्दू अवतार मानते हैं। परम कृष्णभक्त जयदेव ने भक्तिपूर्ण मधुर राग में गाया है–

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।
सदय – हृदय – दर्शित – पशुघातम् ।
केशव धृतबुद्धशरीर, जय जगदीश हरे ॥

सभी हिन्दू बुद्ध की भक्ति इसी प्रकार करते हैं। बुद्ध ने वेदाज्ञा के बहाने होने वाली पशुहत्या और अन्य धार्मिक अन्धेरों की निन्दा की थी, वेद की नहीं, वेद-धर्म की नहीं। अतएव बौद्ध-धर्म 'हिन्दू' धर्म से भिन्न नहीं है। इसके बाद सिक्ख-धर्म है, जो आज हिन्दू-धर्म से अलग-सा समझा जाता है। पर इसकी उत्पत्ति भी हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही हुई थी। खालसा पंथ के संस्थापक गुरु गोविन्द सिंह की वाणी "सकल जगत में खालसा पन्थ गाजै। जगै धर्म हिन्दू सकल द्वन्द भाजै" सिक्ख-सम्प्रदाय का उद्देश्य बतलाने के लिये पर्याप्त है। इस प्रकार यह प्रत्यक्ष है कि किसी धर्माचार्य

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

की इच्छा अलग-अलग स्थायी सम्प्रदाय स्थापित करने की नहीं थी; सभी हिन्दू-धर्म की रक्षा चाहते थे। पर अब ये सम्प्रदाय स्थायी हो गये हैं। उपासना के भाग में इनमें कुछ विभिन्नता है। पर इन सम्प्रदायों की एकता आज भी ज्यों की त्यों है। सभी सम्प्रदाय प्रणव-वाचक ॐ का जप करते हैं। सभी "आचारप्रभवो धर्मः" का सिद्धान्त मानते हैं। सभी आर्य-धर्मी हिन्दू सम्प्रदाय का यह विश्वास है कि उपासना का केवल वही एक मार्ग नहीं है जिसे हम मानते हैं। "आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति" के सिद्धान्त को सभी मानते हैं, सबका पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास है, सभी कर्म-फल के कायल हैं। मोक्ष या निर्वाण का सिद्धान्त आर्य धर्म के भीतर ही है। इसके सिवा अन्य कितने समान सिद्धान्त सब सम्प्रदायों के हैं। ये ही हिन्दू-धर्म के सिद्धान्त हैं। ये किसी अन्य धर्म के सिद्धान्त नहीं हैं। यह हिन्दू-सम्प्रदायों की और मूल आर्य-धर्म की विशेषता है। इसकी रक्षा करना सभी सम्प्रदायों का तथा हिन्दू जाति का कर्तव्य है। इसलिए इस धर्म की रक्षा के लिए सब हिन्दू संगठित हो सकते हैं।

तीसरा आधार समान जन्म-भूमि है। सभी हिन्दू सम्प्रदायों की जन्मभूमि भारत है। यहीं इनका वासस्थान है, यहीं इनके पूर्वज और धर्मसंस्थापक उत्पन्न हुए हैं। इसलिए आसेतुहिमाचल और सिंधु नदी से बंगसागर तक यह समग्र हिन्दुस्थान देश समस्त हिन्दूजाति का अखण्ड और पवित्र तीर्थ-स्थान है। यह जन्मभूमि प्रत्येक हिन्दू के लिए 'स्वर्गादपि गरीयसी" है। जिसके विषय में "धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे" की धारणा है, वह भारतभूमि प्रत्येक हिन्दू की जन्म-भूमि और धर्म-भूमि है। उसकी रक्षा के लिए सब हिन्दू एक हो सकते हैं। इसके सिवा समान संस्कृति और समान इतिहास भी संगठन के आधार हैं। हिन्दू-जाति की संस्कृति प्रत्येक हिन्दू-सम्प्रदाय की संस्कृति है और भारतीय इतिहास सब का इतिहास है। उस संस्कृति और इतिहास का गौरव रखना हिन्दू मात्र का कर्तव्य है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हिन्दू-धर्म में स्वार्थी और मूर्खों के कारण परस्पर साम्प्रदायिक द्वेष-भाव हो जाने से शिव, विष्णु की निन्दा के प्रकरण आ घुसे हैं। इसी तरह बौद्ध, जैन और ब्राह्मण-धर्मों में परस्पर निन्दा की बातें आ गई हैं। उचित दृष्टि से देखते हुए, ये बातें हमारे धर्मोद्यान के सुन्दर फलपुष्प नहीं, किंतु उस उद्यान के बिगाड़ने वाले कांटे हैं। इसलिए इन बातों की सर्वथा उपेक्षा करनी चाहिए, क्योंकि अज्ञान से धर्म के मर्म को न समझने के कारण ही साम्प्रदायिक द्वेष फैला कर हिन्दू जाति इस समय सब प्रकार से क्षीण हो रही है। यदि हम अपने आर्य-धर्म के सच्चे तत्वों को समझने लग जायं तो फिर से प्राचीन समय की भांति यह हिन्दू-जाति संसार में शिरोमणि बन सकती है। प्रत्येक हिन्दू-संतान का धर्म-प्रचार करने का पवित्र कर्तव्य है, क्योंकि इस ज्ञान-रूप अमृत का दान करने पर मनुष्यमात्र की भलाई हो सकती है। किन्तु यह काम तभी हो सकता है, जब हम हिन्दू लोग अपने आपको इसके योग्य बना लें। देश में जितना शीघ्र विद्या और धर्म का प्रचार होगा उतना ही शीघ्र हम लोग योग्य बन सकेंगे।

अन्य जितने अनार्य, ईसाई और मुसलमान आदि मत हैं, वे दो सहस्र वर्षों के भीतर के ही बने हुए हैं। कुरान, बाइबल में ऐसी अनेक बातें बतलाई गई हैं, जो तर्क और बुद्धि से सिद्ध नहीं हो सकतीं, जैसे उन मतों में पुनर्जन्म नहीं माना गया है। उनके अनुसार जब एक बार मनुष्य मर जाता है तो वह प्रलय तक कब्र में पड़ा रहता है, एक दिन प्रलय होने पर सब मुर्दे एक बार ही उठ कर खुदा के सामने अपने शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने के लिए खड़े होंगे। इस प्रकार की अनेक बातें उन मतों में हैं।

ईसाई मुसलमानी मतों में मुक्ति का मार्ग भी नहीं है, उनको योग आदि विद्या का भी पता नहीं, उनके पास अध्यात्म-विद्या, उच्च-कोटि के दर्शन-शास्त्र,सांख्य, वेदान्त जैसे परिपूर्ण ज्ञान के ग्रंथ भी नहीं हैं, इस कारण पुनर्जन्म, कर्मवाद और मोक्ष तत्त्व-ज्ञान के सिद्धान्तों को वे नहीं समझते।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वेद, उपनिषद्, गीता, धम्मपद, सन्त-वाणी आदि ग्रंथों के पढ़ने से यही पता चलता है कि हमारे महापुरुषों ने अध्यात्म सत्य को किस पूर्णता तक पहुंचा दिया है ।

हिन्दू-गौरव-गान के इस संस्करण में आर्य-धर्म के प्राचीन काल से लेकर आधुनिक महात्माओं और सज्जनों के सुखकारी पदों का संग्रह है । इस भांति, ज्ञान और वैराग्य के अतिरिक्त सामाजिक और वीरता-सम्बन्धी भजन भी इसमें दिये गये हैं, क्योंकि यह स्मरण रखना चाहिए कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति के बिना धर्म की रक्षा नहीं हो सकती । आशा है कि यह पुस्तक धर्म-प्रेमी सज्जनों और संगीत-प्रेमियों तथा लोकसमुदाय के लिए लाभकारी होगी । प्रस्तुत संग्रह के लोक-प्रिय एवं उपादेय होने का सब से बड़ा प्रमाण यही है कि थोड़े समय के अन्दर अधिक मांग के कारण पुस्तक का दशम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । आशा है हिन्दू जनता इसे पहले की तरह अपनायेगी ।

—सम्पादक

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विषय--सूची

विषय	पृष्ठ
निवेदन	आरम्भ
वेद-वाक्य	१
वेद में उन्नति का मूल पुरुषार्थ है	२
वैदिक सुभाषित	६
ईश-चिन्तन	७
ब्रह्मस्तोत्र	१०
दर्शनशास्त्रोपदेश	११
उपनिषद् वाक्य	१४
श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश	२१
नीति-धर्म	२५
दुर्गा सप्तशती	३१
भगवान् बुद्ध की वाणी	३३
वर्ण-व्यवस्था, प्राचीन ब्राह्मण, ब्रह्म सायुज्य लाभ	४४
सन्त कबीरदास जी के शब्द	४८
गोस्वामी तुलसीदास जी के भजन	६७
सन्त रैदास के पद	७८
गुरु नानक जी के पद	८४
भक्त सूरदास जी के पद	९४
तपस्विनी मीरा बाई के पद	१०५
सन्त दादूदयाल जी के भजन	११५
मलूकदास जी की वाणी	११९
सुन्दरदास जी के पद	१२१
भूषण शिवाबावनी	१२९

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

गुरु गोबिन्दसिंह की वाणी	१३१
सन्त चरणदास जी के पद	१४०
सहजोबाई के पद	१४३
गुजराती भजन	१४५
मराठी पद	१४७
कविवर रवीन्द्रजी के बंगाली पद	१४९
स्व० महामना पं० मदनमोहनजी मालवीय कृत उपदेश	१५०
आर्य समाज के पद	१५२
मारवाड़ी भजन	१५५
महात्मा बाबा रामनाथ जी के वचनामृत	१५८
जयपुराधीश महाराज रामसिंह जी कृत छप्पय छन्द	१५८
जैन-पद संग्रह	१६१
फुटकर पद	१६३
आर्य-गान	१७५
नाम-ध्वनि	१७९

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ॐ

हिन्दू-गौरव-गान

वेद-वाक्य

इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव
यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन्त्सो
अङ्ग वेद यदि वा न वेद ।

हे अंग ! जिससे यह नाना प्रकार की सृष्टि प्रकाशित हुई है और जो इसका धारण और प्रलय करता है, जो इसका अध्यक्ष है और जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति और लय को प्राप्त होता है, वही परमात्मा है। उसको तुम जानो और दूसरे किसी को (जड़ प्रकृति आदि को) सृष्टिकर्ता मत मानो। उपनिषद् भी यही कहते हैं:–

–ऋग्वेद

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवंति। तत्प्रयंत्यभिसंविशंति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म।

जिस परमात्मा से यह सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है, जिसमें यह जीवित रहती है और जिसमें फिर लय को प्राप्त हो जाती है, वही परब्रह्म परमात्मा है। उसको जानने की इच्छा करो।

–तैत्तिरीयोपनिषद्

कया नश्चित्र आभुव
दूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

परमात्मा ने इस मन्त्र में प्रश्नोत्तर रूप से जीवों को यह उपदेश दिया है कि परमात्मा की अनुकूलता अच्छे, बुद्धियुक्त बर्ताव से ही हो सकती है, अतः हमको चाहिये कि हम सदा ऐसे कामों में लगे रहें, जिन से प्रतिदिन बुद्धि की उज्ज्वलता होती रहे। परमात्मा तो न्यायकारी है, वह मोह और ज्ञान से सदा दूर रहने वालों की ही सहायता करता है।

—सामवेद अ० १ मं० ३

अप्रतीतो जयति सं धनानि
प्रतिजन्यान्युत या-सजन्या ।
अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे
राजा राजा तमवन्ति देवाः ॥

जो (अ-प्रति- इतः) पीछे नहीं हटता वह पुरुषार्थी मनुष्य ही (जयति) विजय प्राप्त कर सकता है। वही (प्रतिजन्यानि) व्यक्तिविषयक तथा (सजन्या) समूह अथवा समाजविषयक (धनानि) धनों को (संजयति) विजय से प्राप्त करता है।

ऋ० ४।५०।९

* * *

वेद में उन्नति का मूल पुरुषार्थ है

न ऋते श्रांतस्य सख्याय देवाः

"(श्रांतस्य ऋते) परिश्रम किये बिना (देवाः) देव (सख्याय न) मित्रता नहीं करते।" अर्थात् जो परिश्रम करेगा उसी की समृद्धि, उन्नति और वृद्धि होती है। जो पुरुषार्थ नहीं करता उसकी उन्नति नहीं हो सकती है।

ऋ०. ४।३३।११

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

व्यायाम करने से शरीर के अवयव पुष्ट होते हैं और दमन करने से इन्द्रियों की शक्ति बढ़ती है, एकाग्रता का अभ्यास करने से मन का सामर्थ्य वृद्धिगत होता है अर्थात् अपने शरीर के इन्द्रियरूपी देव भी उसी समय सहायता करते हैं, जिस समय इन्द्रियों के द्वारा उत्साहपूर्ण प्रबल प्रयत्न होता है। जो सुस्ती से बैठेगा उसके अंग वैसे सुडौल नहीं बनते जैसे व्यायाम करने वाले के बनते हैं।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि।
महोऽसि महो मयि धेहि।
सहोऽसि सहो मयि धेहि॥

"हे परमात्मन्! तू तेजस्वी है, मुझ में तेज स्थापन कर; तू वीर्यवान् है, मुझ में वीर्य स्थापन कर; तू बलवान् है, मुझ में बल स्थापन कर; तू समर्थ है, मुझ में सामर्थ्य स्थापन कर; तू उत्साहमय है, मुझ में उत्साह स्थापन कर; तू महत्ववाला है, मुझमें महत्त्व (बड़प्पन) स्थापन कर; तू सहन-शक्ति से युक्त है, मुझमें श्रम सहन करने की शक्ति स्थापित कर।" यह वैदिक प्रार्थना है।

—यजु० १९।९

रक्षा मा किर्नो अघशंस ईशत॥
मा नो दुःशंस ईशत॥
मा नो अद्य गवां स्तेनो माऽवीनाँ वृक ईशत॥

(Let not a malicious, spiteful ill-wisher master us.)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

(किःअघशंसः) कोई भी पापी दुष्ट हम सब पर शासन न करे। कोई दुराचारी हमारे पर आज्ञा न चलावे।

—अथर्व० १९।४।७।६

यो नः सोम सुशंसिनो दुःशंस आदिदेशति।
वज्रेणास्य मुखे जहि स संपिष्ठो अपायति॥

"(यःदुःशंसः) जो दुष्ट मनुष्य (सुशंसिनः) उत्तम विचारों से युक्त रहने वाले हम सब को (आदिदेशति) आदेश करने लगेगा, (अस्य मुखे वज्रेण जहि) उसके सिर पर शस्त्र चलाओ, (संपिष्टः स अपायति) चूर्ण होने से ही वह दूर होता है।"

जो दुर्जन सज्जनों को अपने अधीन रखता है और इस प्रकार सज्जनों को कष्ट पहुंचाता है, वह वधदण्ड के योग्य है।

—अथर्व० ६।६।२

अजिताः स्याम शरदः शतं॥

—तै० आ० ४।४२।५

अदीनाः स्याम शरदः शतं॥

—यजु० अ० ३६।२४

"हम सब सौ वर्ष पर्यन्त पराजित न होते हुए जीवित रहें तथा हम सौ वर्ष तक अदीन अर्थात् उत्साही जीवन युक्त रहें"—यह वैदिक धर्म की आकांक्षा प्रसिद्ध है। हरएक मनुष्य को उचित है कि वह सदा ऐसे पुरुषार्थ करता रहे कि जिससे वह कभी पराजित न हो सके। पराजय होने से सब प्रकार की आपत्तियां प्राप्त होती हैं। पराजितों को ही सब कष्ट भोगने पड़ते हैं। पराजितों के सद्गुण बुरे समझे जाते हैं। विजय का इतना प्रभाव है, इसलिए विजय प्राप्त करने का प्रयत्न हरएक को करना उचित है। विजय किस प्रकार मिलती है, इस प्रश्न के उत्तर में वेद कहता है:—

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जातीय संगठन के लिये वेद-वाक्य

important

संगच्छध्वं संवदध्वं,
सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे,
संजानाना उपासते ॥

अर्थ—हे मनुष्यों ! (संगच्छध्वम्) एक पथ पर चलो । (संवदध्वम्) परस्पर मिलकर संभाषण करो, (सं वः मनांसि) तुम्हारे मन उत्तम भावों से युक्त हों, (पूर्वे) पहले के (संजानाना देवाः) उत्तम ज्ञानी लोग (यथा) जिस प्रकार (भागं) अपने कर्त्तव्य की (उपासते) पालना करते हैं, या करते आये हैं, वैसा ही तुम भी करो ।

—ऋग्वेद १०।१९१।१

आत्म-संरक्षण बल

ओजोऽस्योजो मे दाः स्वाहा, सहोऽसि सहो मे दाः स्वाहा, बलमसि बलं मे दाः स्वाहा, आयुरस्यायुर्मे दाः स्वाहा, चक्षुरसि चक्षुर्मे दाः स्वाहा, परिपाणमसि परिपाणं मे दाः स्वाहा ।

अर्थ—तू शारीरिक सामर्थ्य है, मुझे शरीर-सामर्थ्य दे । तू सहनशक्ति से युक्त है, मुझे सहनशक्ति दे । तू बलस्वरूप है, मुझे बल दे । तू जीवन-शक्ति है, मुझे जीवन-शक्ति दे । तू श्रवण-शक्ति है, मुझे श्रवण-शक्ति दे । तू दर्शन-शक्ति है, मुझे दर्शन-शक्ति दे । तू परित्राता है, मुझे आत्मरक्षण करने की शक्ति दे ।

—अथर्ववेद सूक्त १७

* * *

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

वैदिक सुभाषित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।	सम्पूर्ण जगत् को आर्य-धर्मी अर्थात् सत्य-धर्मी बनाओ ।
ईशावास्यमिदं सर्वम् ।	सब जगत् में ईश्वर व्याप्त है ।
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ता-च्छुक्रमुच्चरत् ।	वह ज्ञानियों का हित करने वाला दिव्य शुद्ध प्रकाश पहले से ही उदय है
भद्रं वद पुत्रैः ।	लड़कों के साथ उत्तम भाषण करो।
भद्रं वद गृहेषु च ।	घरों में शुभ विचार बोलो ।
वाचं वदत भद्रया ।	उत्तम वाणी से बातचीत करो ।
मनो दानाय चोदयन् ।	मन दान के लिये प्रेरित करो ।
मनो यज्ञेन कल्पताम् ।	मन को सत्कर्म में लगाओ ।
प्राणो यज्ञेन कल्पताम् ।	प्राण को सत्कर्म में लगाओ ।
वाग् यज्ञेन कल्पताम् ।	वाणी को सत्कर्म में अर्पित करो
उत्तिष्ठत अवपश्यत ।	उठो, चारों ओर देखो ।
अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः ।	जो अमंगल है उसे छोड़ो ।
आपश्च विश्वभेषजीः ।	जल में सब दवाइयां हैं ।
अग्निं च विश्वशंभुवम् ।	अग्नि से सब कल्याण होता है ।
आपो अमीव चातनीः ।	जल रोगों को दूर करता है ।
गुप्ता वः सन्तु मागृधः ।	सुरक्षित रहो, लालच छोड़ो ।
अवहितं देवा उन्नयथा पुनः ।	हे विद्वानों ! तुम धर्म से पतित हुए को उठाओ ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ईश-चिन्तन

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः
स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवै-
र्वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदै-
र्गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा
पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा
देवाय तस्मै नमः ॥

अर्थ—ब्रह्मा, वरुण, इंद्र, रुद्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा जिसकी स्तुति करते हैं, सामवेद के गानेवाले अंग, पद, क्रम, और उपनिषदों सहित वेदों द्वारा जिनका गायन करते हैं, योगिजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिसका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिसके अन्त को नहीं जानते, उस (परमपुरुष) देव के लिए मेरा नमस्कार है ।

त्वमादिदेवःपुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्ताऽसि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥

a]Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अर्थ—आप आदिदेव और सनातन पुरुष हैं, आप इस जगत् के परम आश्रय और जानने वाले तथा जानने योग्य और परम धाम हैं। हे अनन्त रूप! आप से यह सब जगत् व्याप्त है।

—गी० अ० ११-३८

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥

अर्थ—आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा तथा प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी पिता हैं, आप के लिए सहस्रों वार नमस्कार होवे। आप के लिए फिर भी वारम्वार नमस्कार होवे!

—गी० अ० ११-३९

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥

अर्थ—हे अनन्तसामर्थ्यवाले! आप के लिए आगे से और पीछे से भी नमस्कार होवे। हे सर्वात्मन्! आप के लिए सब ओर से ही नमस्कार होवे, क्योंकि अनन्त पराक्रमशाली आप सब संसार को व्याप्त किये हुए हैं, इससे आप ही सर्वरूप हैं।

—गी० अ० ११-४०

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अर्थ—आप इस चराचर जगत् के पिता और गुरु से भी बड़े गुरु एवं अति पूजनीय हैं। हे अतिशय प्रभाववाले ! तीनों लोकों में आपके समान दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक कैसे होवे ।

—गी० अ० ११-४३

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥

अर्थ—इससे हे स्तुत्य ईश ! मैं शरीर झुका चरणों में प्रणाम करके प्रार्थना करता हूँ कि मुझ पर कृपा करो। हे देव ! पिता जैसे पुत्र को, सखा जैसे मित्र को, पति जैसे प्रिय स्त्री को क्षमा करता है, उसी प्रकार मुझे क्षमा करो ।

—गी० अ० ११-४४

* * *

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ब्रह्म स्तोत्र

नमस्ते सते सर्वलोकाश्रयाय
नमस्ते चिते विश्वरूपात्मकाय ।
नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय ।।

अर्थ—हे सत् ! सब लोकों के आश्रय ! नमस्ते । हे चित्स्वरूप आत्मा जिससे विश्वरूप संबंधित है, नमस्ते । हे अद्वैत तत्व ! मुक्तिदाता ! नमस्ते । हे सर्वव्यापक, निर्गुण ब्रह्म ! नमस्ते ।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्कारणं विश्वरूपम् ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृप्रहर्तृ
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।

अर्थ—तू ही शरण में आये हुए की रक्षा करने वाला, तू ही सर्वोत्तम, तू ही विश्वरूप जगत् का कारण है । तू ही जगत् का कर्त्ता, रक्षक, प्रहार करने वाला, तू ही परब्रह्म, निश्चल और निर्विकल्प है ।

परेश प्रभो सर्वरूपप्रकाशिन्
अनिर्द्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य ।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्ततत्व
जगद्भासकाधीश पायादपायात् ।।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अर्थ—हे परम ईश प्रभु ! आप सब रूपों में प्रकाशित हैं। आप का वर्णन नहीं हो सकता। हे सत्य ! आप तक इंद्रियों की पहुंच नहीं हो सकती। हे अचिन्त्य अक्षर ! सर्वव्यापक, अव्यक्त-तत्व जगत्-प्रकाश अधीश्वर ! हानि से हमारी रक्षा करो।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः
तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः।
तदेकं निधानं निरालम्बमीशं
भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥

अर्थ—हम उस एक का ही स्मरण करते हैं। उस एक का ही जप करते हैं। उसी एक जगत्साक्षिरूप प्रभु को प्रणाम करते हैं। उस सत् एक आश्रय, निराधार, भवसागर के जहाज रूप ईश्वर की शरण जाते हैं।

ओं नमस्ते परब्रह्म नमस्ते परमात्मने।
निर्गुणाय नमस्तुभ्यं सद्रूपाय नमोनमः ॥

दर्शन-शास्त्रोपदेश

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। —योगदर्शन सू० २

चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम योग है।

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। —योगदर्शन सू० २५

ईश्वर में संपूर्ण ज्ञान का बीज वर्त्तमान है।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाऽभिनिवेशाः पंच क्लेशाः ॥ —यो० द० द्वितीय पाद ३

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश यह पांच प्रकार के क्लेशों के भेद हैं। इसमें से अविद्या ही मुख्य क्लेश है।

तस्य हेतुरविद्या । —योग दर्शन सू० ४०

अर्थ—आत्मा के बन्धन का हेतु अविद्या है।

समीक्षा—जितने दुःख हैं उन सब का मूल कारण महर्षि पतंजलि की सम्मति में अविद्या है। अतः हम सब को चाहिये कि अविद्या का नाश करने के लिये पूर्ण यत्न करें।

अत्यन्तदुःखनिवृत्या कृतकृत्यता ।

अर्थ—मनुष्य अपने को कृतकृत्य तभी समझे, जब अपने पुरुषार्थ द्वारा त्रिविध तापों से अत्यन्त निवृत्ति पा चुके।

—सांख्य अ० ६ सू० ५

त्रिविध ताप निम्नलिखित हैं:—

आध्यात्मिक—शारीरिक और मानसिक व्याधियों से होने वाले दुःख।

आधिभौतिक—सिंह, सर्पादिक हिंसक जीवों या चोर, डाकू और शत्रुओं से होने वाले दुःख।

आधिदैविक—अतिवृष्टि, अनावृष्टि और विद्युदादि द्वारा होने वाले दुःख।

समीक्षा—उपरोक्त तीन प्रकार के दुःखों से अत्यन्त निवृत्ति तभी प्राप्त हो सकती है, जब मनुष्य धर्म का सेवन करे। धर्म का लक्षण कणाद मुनि ने अपने वैशेषिक दर्शन में इस प्रकार किया है—

यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः

अर्थ—जिस काम के करने से लौकिक और पारलौकिक सिद्धि प्राप्त हो, वही धर्म है। (वैशेषिकदर्शन, अध्याय १ स० २)

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

समीक्षा—ऐसे कर्म जिन से हम इस लोक में विद्या, ऐश्वर्य, निरोगिता और स्वतन्त्रता आदि सात्विक पदार्थों की प्राप्ति करते हुए मरण पीछे क्रमशः परमोत्तम गति (मोक्ष) को प्राप्त हों, वे धर्म शब्द से बोले जाते हैं। गौतम मुनि ने अज्ञान-निवृत्ति से मोक्ष का होना माना है, सो भी ठीक ही है, क्योंकि जब मनुष्य का मिथ्या ज्ञान दूर होगा, तभी वह धर्म में प्रवृत्त होगा।

तन्निष्ठस्य मोक्षोपदेशात् —वेदान्त-दर्शन

अर्थ—उस परमात्मा में निष्ठा रखने वाले पुरुष के लिए ही मोक्षोपदेश किया गया है।

* * *

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उपनिषद् वाक्य

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

वह परमेश्वर पूर्ण है, अखण्ड है, यह जगत् स्वसत्ता में पूर्ण है। पूर्ण भगवान् से ही यह पूर्ण जगत् उदय होता है । पूर्ण परमेश्वर का पूर्ण स्वरूप लेकर फिर भी भगवान् सर्वत्र पूर्ण ही रह जाता है ।

—ईशावास्योपनिषद्

ईशावास्यमिदं सर्वं,
यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः,
मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

यह दृश्यमान् सब ओर जो कुछ भी जगत् है वह सब ईश्वर से आच्छादित है, ईश्वर से बसने योग्य है, उसमें ईश्वर विद्यमान है । हे उपासक ! तू इस भावमय त्याग से (ईश्वर से सम्पूर्ण लोक आच्छादित है, भगवान् के शासन में सारा जगत् है) पदार्थों को भोग । सब भोग भगवान् की देन जान । मत ललचा । किसका धन है ? सब पदार्थ परमेश्वर के हैं ।

उपासक सारा जगत् भगवान् से आच्छादित जाने, सब रचना में ईश्वर की सत्ता को शासन करती हुई समझे, सब भोज्य पदार्थों को परमेश्वर का दान माने, इस समर्पण रूप त्याग से भोग भोगे, धन भगवान् का प्रसाद जानकर लालच न करे ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

विद्या और अविद्या दोनों को—जो इकट्ठे जानता है, जो ज्ञान और कर्म को एक साथ आराधता है, परा और अपरा विद्या तथा कर्म-काण्ड का एक साथ साधन करता है, वह कर्मकाण्ड से मृत्यु को तर कर परा विद्या से अमृत मोक्ष को प्राप्त होता है । भक्तियुक्त कर्म निर्वन्ध का कारण होता है । इसलिए निष्काम कर्म-कर्त्ता भक्त मृत्यु को पार कर, परा विद्या से परमपद-मोक्ष को प्राप्त करता है ।

ॐकेनेषितं पतति प्रेषितं मनः
केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः ।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति,
चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥

शिष्य ने गुरु से पूछा कि यह मन इष्ट वस्तु के प्रति किस से प्रेरित होकर जाता है ? मुख्य प्राण किस से जुड़ा हुआ विशेषता से चलता है ? इस वाणी को किस की प्रेरणा से बोलते हैं ? आंख कान को कार्यों में कौन जोड़ता है ? इंद्रियों का प्रेरक, संचालक और नियन्ता देव कौन है ? यही ऊपर के प्रश्नों में पूछा गया है ।

—केनोपनिषद्

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो,
यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ।
चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः,
प्रेत्यास्माल्लोकादमृताः भवन्ति ॥

गुरु ने उत्तर में कहा कि सब इंद्रियों का प्रेरक आत्मा है । वह कान का कान है, मन का मन है, निश्चय से वाणी की वाणी है, वह

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

प्राण का प्राण है, आंख की आंख है। बुद्धिमान् पुरुष ऐसा जानकर इस लोक से मरकर अमृत-युक्त हो जाते हैं।

आत्मा ही सब इंद्रियों का प्रेरक है। वह श्रोता, मन्ता और द्रष्टा है, इंद्रियां केवल साधन हैं। देखने, सुनने और जानने वाला आत्मा है। प्राण भी उसी की प्रेरणा से आता जाता है। आत्मा चेतन ज्ञानरूप है। उसी की चेतन-सत्ता का प्रकाश इंद्रियों में होता है। जो बुद्धिमान् पुरुष आत्मा के स्वरूप को समझ जाते हैं, आत्म-सत्ता के पूरे विश्वासी हो जाते हैं, वे मृत्युलोक से छूटकर अमर-पद पा लेते हैं।

यच्छ्रोत्रेण न श्रृणोति,
येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि,
नेदं यदिदमुपासते ॥

जो कान से नहीं सुनता किन्तु जिससे यह कान सुना गया है अर्थात् जो कर्णेन्द्रिय का कर्त्ता है, उसी को ब्रह्म जान। ब्रह्म का जैसा वर्णन शब्द मात्र से करते हैं, वैसा ब्रह्म नहीं है। —केनोपनिषद्

परमेश्वर कान से नहीं सुनता है, किन्तु आत्मसत्ता से सब कुछ जानता है। कानों के नियम को नियत करने वाला वही है। गुरु ने शिष्य से कहा कि तू उसी को ब्रह्म जान। ब्रह्म का जैसा वर्णन शब्द मात्र से करते हैं, वैसा ब्रह्म नहीं है।

यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥

जो श्वांस से नहीं जीता, किन्तु जिससे श्वांस आता जाता है, तू उसी को ब्रह्म जान। इस ब्रह्म का जैसा वर्णन प्राणोपासना वाले करते हैं, वैसा ब्रह्म नहीं है। —केनोपनिषद्

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्राण-वायु परमेश्वर नहीं है। वह प्राण-अपान के नियम का नियत करनेवाला है। गुरु ने शिष्य से कहा, कि तू उसी को ब्रह्म जान। प्राण-अपानरूप पवन की उपासना करने वाले ब्रह्म का जैसा वर्णन करते हैं, वैसा ब्रह्म नहीं है। —केनोपनिषद्

यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेवापि
नूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रुपं।
यदस्य त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु
मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम्॥

यदि तू ऐसा मानता है, कि मैं ब्रह्म का पूरा स्वरूप जानता हूँ, तो निश्चय तू अल्प ही जानता है। जो इस ब्रह्म का स्वरूप तू जानता है और जो इसका स्वरूप देवों(विद्वानों) से जाना जाता है, वह भी स्वल्प ही है। इस कारण जो तू ने जाना है, वह तुझे मनन ही करना चाहिये, यह मैं मानता हूँ।

ब्रह्म का स्वरूप अनन्त है। उसकी लीला अपार है। उसके जानने का अभिमान नहीं करना चाहिये। गुरु ने शिष्य से कहा, कि यदि ब्रह्मज्ञान का तू अभिमान करता है तो तू बहुत थोड़ा जानता है। क्योंकि अनन्त स्वरूप ईश्वर मानुषी मति की सीमा में बंध नहीं सकता। उसका जो प्रकाश तुझ में है और जो देवों में पाया जाता है, वह भी अल्प ही है। इस कारण, मेरी मति में तुझे ब्रह्म का चिन्तन ही करना चाहिए। तू विश्वासी बन, परन्तु ब्रह्मज्ञान का अहंकार न कर। —केनोपनिषद्

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्तद् वेद तद् वेद नो न वेदेति वेद च॥

गुरु के कथन को सुनकर शिष्य ने कहा— मैं ऐसा नहीं मानता कि मैं ब्रह्म के स्वरूप को भली प्रकार जानता हूँ और न ही कि

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

नहीं जानता, किन्तु जानता हूँ। जो हममें से उसको जानता है, वह जानता है, वह यही जानता है कि मैं नहीं जानता हूँ, किंतु जानता हूँ।

ब्रह्म-ज्ञान का अभिमान करना तो निरा अहंकार है। परन्तु ब्रह्म नहीं है यह भी विश्वास नहीं मानता। अनन्त शक्तिमय ब्रह्म है, इतना स्वीकार ही समीचीन है। शिष्य गुरु को यह दर्शाता है कि अनन्त का होना मैं स्वीकार करता हूँ, परन्तु उसके ज्ञान का अभिमान मैं नहीं करता।

यस्यामतं तस्य मतं, मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ॥

जिसका वह ब्रह्म अमत है—नहीं जाना हुआ है—उसका जाना हुआ है। जिसका जाना हुआ है वह नहीं जानता। ज्ञानियों से वह अविज्ञात है और न जाननेवालों से जाना हुआ है।

मनन, चिन्तन और वर्णन में अनन्त तथा अगम्य ब्रह्म का पूर्ण स्वरूप नहीं आता। इस कारण जो जन उसे अनन्त, परम सूक्ष्म, और अलक्ष्य जानते हैं, वे ही उसे जानते हैं। ज्ञानाभिमानी मनुष्य उसे नहीं जानते। —केनोपनिषद्

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं,
तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्,
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् ॥

अर्थ—ईशों के परम महेश्वर, देवों के परम देव, पतियों के परम पति ऐसे उस देव-श्रेष्ठ जगदीश को हम जानते हैं।

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अर्थ—एक ही देव सब भूतों में गुप्तरूप से छिपा हुआ, सर्वव्यापी, सर्वभूतों का अन्तरात्मा, कर्म का अध्यक्ष, सर्व-भूत-निवासी, साक्षी, चैतन्य, केवल और निर्गुण है।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् ६—११

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनाना-
मेको बहूनां यो विदधाति कामान् ।
तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं
ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ॥

अर्थ—नित्यों में नित्य, चेतनों में चेतन, बहुतों में एक, कामनाओं का पूर्णकर्त्ता, जो सांख्य एवं योग से प्राप्त होता है, उस कारणदेव को जान कर जीव सब बेड़ियों से छुटकारा पा जाता है।

—श्वे० ६-१३

अणोरणीयान्महतो महीया-
नात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको
धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

अर्थ—आत्मा, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, बड़े से भी बड़ा है, प्राणी के हृदय में वह स्थित है। निष्काम पुरुष विधाता के प्रसाद से आत्मा की महिमा शोक-रहित होकर देखता है।

—कठोपनिषद् २—२०

बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं
सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति ।
दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च
पश्यत्स्विहैव निहितं गुहायाम् ॥

aGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अर्थ—वह महान् है, दिव्य, अचिन्त्य, सूक्ष्म से सूक्ष्म वह चमकता है वह दूर से भी दूर और समीप से समीप है। वह देखने वाले के लिये हृदय-गुफा में प्रतिष्ठित है।

—मुण्डकोपनिषद् ३-

स ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः
सोऽक्षरः परमः स्वराट्।
स एव विष्णुः स प्राणः
स कालोऽग्निः स चन्द्रमाः॥

अर्थ—सर्वशक्तिमान् और समस्त जगत् का प्रकाशक वह परमात्मा है ब्रह्मा (सृष्टिकर्त्ता) है, वही शिव (विनाशक शक्ति) है, वही विष्णु (पालन करने वाली शक्ति) है, वही इन्द्र है, अविनाशी है, वही सर्वव्यापक है, वही जगत् का जीवनाधार है, वही काल है, वही अग्नि है, वही चन्द्रमा है।

—कैवल्य उपनिषद् १।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।
यस्य भूमिः प्रमाः अन्तरिक्षम् उतोदरम्
दिवं यस्य के मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥

—अथर्व वे

अर्थ—सर्वानन्दमय उस महान् ब्रह्म के लिये नमस्कार है, जो भूत भविष्यत्, वर्तमान सभी पदार्थों में सर्वदा व्यापक रूप से विद्यमान रहता है। उस महान् ब्रह्म के लिये नमस्कार है, जिसकी प्रमा भूमि है और जिसका उदर आकाश है तथा स्वर्ग जिसका मस्तक है

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेश

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।
असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥

अर्थ—हे अर्जुन ! इससे तू अनासक्त होकर निरन्तर निष्काम कर्म कर, क्योंकि अनासक्त पुरुष निष्कामभाव से कर्म करता हुआ परम पद को प्राप्त होता है। —गीता अ० ३-१९

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि ॥

अर्थ—जनक आदि ज्ञानीजन भी आसक्तिरहित कर्म द्वारा ही परमसिद्धि को प्राप्त हुए हैं। इसलिये लोकसंग्रह को देखता हुआ भी, तू कर्म करने योग्य है। —गीता अ० ३-२०

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥

अर्थ—श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है, अन्य पुरुष भी उसके ही अनुसार वर्तते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, अन्य भी उसी का अनुकरण करते हैं। —गीता अ० ३-२१

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत ।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥

अर्थ—हे भारत ! कर्म में आसक्त हुए अज्ञानीजन जैसे कर्म करते हैं, वैसे ही अनासक्त हुआ विद्वान् भी लोकसंग्रह को चाहता हुआ कर्म करे। —गीता अ० ३-२५

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसंगिनाम् ।
जोषयेत्सर्वकर्म्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ॥

अर्थ—ज्ञानी पुरुष को चाहिये कि कर्म में आसक्त अज्ञानियों की बुद्धि में भ्रम अर्थात् कर्मों में अश्रद्धा उत्पन्न न करे, किन्तु आप स्वयं योगयुक्त होकर सब कर्मों को अच्छे प्रकार करते हुए लोगोंसे भी करावे। —गीता अ० ३-२६

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥

अर्थ—हे अर्जुन ! इंद्रियां, मन और बुद्धि इसके वास स्थान कहे जाते हैं और यह क्रूर काम ही इन मन, बुद्धि और इंद्रियों द्वारा ज्ञान को आच्छादित करके इस जीवात्मा को मोहित करता है।
—गीता अ० ३-४०

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥

अर्थ—इसलिये हे अर्जुन ! तू पहले इंद्रियों को वश में करके ज्ञान और विज्ञान के नाश करने वाले इस काम पापी को निश्चयपूर्वक मार।
—गीता अ० ३-४१

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

अर्थ—इंद्रियों को श्रेष्ठ, बलवान् और सूक्ष्म कहते हैं, इंद्रियों से परे मन है और मन से परे बुद्धि है तथा बुद्धि से जो अत्यन्त परे है, वह आत्मा है। —गीता अ० ३-४२

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥

अर्थ—इस प्रकार बुद्धि से परे अर्थात् सूक्ष्म तथा बलवान् और श्रेष्ठ अपने आत्मा को जानकर और बुद्धि के द्वारा मन को वश में करके हे महाबाहो ! अपनी शक्ति को समझ कर इस दुर्जय काम रूप शत्रु को मार। —गीता अ० ३-४३

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥

अर्थ—जिसके सम्पूर्ण कार्य कामना और संकल्प से रहित हैं, उस ज्ञानरूप अग्नि द्वारा भस्म हुए कर्मों वाले पुरुष को ज्ञानीजन पंडित कहते हैं। —गीता अ० ४-१९

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

अर्थ—हे अर्जुन ! सुन, जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सब के आत्म-स्वरूप मुझ को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मेरे ही अन्तर्गत देखता है, उसके लिये मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह मेरे लिये अदृश्य नहीं होता है। —गीता अ० ६-३०

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥

अर्थ—अर्जुन ने कृष्ण भगवान् से कहा, कि हे महाराज ! यह मन बड़ा चंचल और प्रमथन स्वभाव वाला है; बड़ा दृढ़ और बलवान् है। इसलिये उसका वश में करना मैं वायु की भांति अति दुष्कर मानता हूँ। —गीता अ० ६-३४

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

अर्थ—श्री भगवान् ने कहा—हे महाबाहु अर्जुन ! इसमें सन्देह नहीं कि मन चंचल है और उसका निग्रह करना कठिन है। परन्तु कौन्तेय ! अभ्यास अर्थात् बार बार प्रयत्न करने से और वैराग से वह वश में किया जा सकता है। —गीता अ० ६-३

गीता में ब्रह्मनिर्वाण

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥

जो पुरुष इस संसार में, शरीर छूटने के पहले ही, काम और क्रोध से उत्पन्न हुए वेग को सह सकता है, वही मनुष्य योगी है, वही सुखी है। जो अपने अन्दर ही सुख मानता है और उसी में रमता है, तथा आत्मा के अन्दर जो प्रकाश है, उसी से जो प्रकाशित है, वह ब्रह्म को प्राप्त होकर उसी में लीन होता है। जिनके पाप सत्कर्मों से क्षीण हो चुके हैं, जिन्होंने सब द्विविधाओं को छोड़ दिया है, अपने आप को जीत लिया है, जो सम्पूर्ण संसार के उपकार में लगे रहते हैं, वही ऋषि मोक्ष पाते हैं। —गीता अ० ५-२३-२४-२

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नीति-धर्म

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने शाठ्यं सदा दुर्जने ।
प्रीतिः साधुजने स्मयः खलजने विद्वज्जने चार्जवम् ॥
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने नारीजने धूर्तता ।
इत्थं ये पुरुषाः कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः ॥

अपने लोगों के साथ उदारता, दूसरों पर दया, दुर्जनों के साथ शठता, साधुओं पर भक्ति, दुष्टों के साथ अभिमान, विद्वानों के साथ नम्रता, शत्रुओं के साथ शूरता, बड़े लोगों के साथ क्षमा, स्त्रियों के साथ चतुरता—इस प्रकार जो मनुष्य बर्ताव करने में कुशल हैं, वे ही संसार में रह सकते हैं और उन्हीं से संसार रह सकता है।

चाणक्य नीति

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते न महत्योऽपि सम्पदः ।
पुर्णेन्दुः किं तथा वन्द्यो निष्कलंको यथा कृशः ॥

अर्थ—सब स्थानों में गुण पूजे जाते हैं, सम्पत्ति नहीं। पूर्णिमा का पूर्ण चन्द्रमा भी क्या वैसा वन्दित होता है जैसा बिना कलंक के द्वितीया का चन्द्रमा ?

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि अन्नमापः सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

अर्थ—पृथ्वी पर जल, अन्न और प्रिय हितकारी वचन तीन ही रत्न हैं, परन्तु मूर्खों ने पाषाण के टुकड़ों को रत्न गिना है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धनहीनो न हीनश्च धनिकः स सुनिश्चयः ।
विद्यारत्नेन हीनो यः स हीनः सर्ववस्तुषु ॥

दोहा—हीन नहीं धनहीन जन, धन स्थिर नाहिं प्रवीन ।
हीन न और बखानिए, विद्या-हीन सुहीन ॥

मुहूर्त्तमपि जीवेच्च नरः शुक्लेन कर्मणा ।
न कल्पमपि कष्टेन लोकद्वयविरोधिना ॥

अर्थ—उत्तम कर्म से मनुष्यों को मुहूर्त भर का जीना भी श्रेष्ठ है, दोनों लोकों के विरोधी दुष्ट कर्म से कल्प (कई लाख वर्ष) का भी जीना उत्तम नहीं है।

को देशः कानि मित्राणि कः कालः कौ व्ययागमौ ।
कश्चाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ॥

अर्थ—कौन देश है ? कौन मित्र है ? कौन सा समय है ? कितनी आय और कितना व्यय है ? मैं कौन हूँ और मेरी शक्ति कितनी है ? इन बातों को बार बार सोचते रहने से मनुष्य मात्र का कल्याण होगा।

आततायियों और दुष्टों का दलन

अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः ।
क्षेत्रदारापहर्ता च षडेते ह्याततायिनः ॥
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् ।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन ॥

अर्थ—आग लगाने वाले, विष देने वाले, शस्त्रधारी डाकू, धन अपहरण करने वाले, भूमि और नारी का हरण करने वाले को आततायी

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहते हैं। नीति कहती है कि आततायियों को आते देख बिना सोच विचार किये ही मार देना चाहिए, ऐसा करने से वधकर्ता को किसी प्रकार का दोष-पाप नहीं होता।

चाणक्य सूत्र

शठे शाठ्यं समाचरेत्—शठों के प्रति शठता करो।

कृते प्रति कृतं कुर्यात् हिंसिते प्रति हिंसनम्।

जो जैसा बर्ताव करे उससे वैसा ही व्यवहार करो। जो हिंसा करे उसके साथ हिंसा करो।

नीचेषु विश्वासो न कर्तव्यः—नीच का विश्वास मत करो।

सूपूजितोऽपि बाधते दुर्जनः।

शिरसि प्रस्थाप्यमानो वह्निर्दहत्येव ॥

अर्थ—दुष्टों की पूजा की जाय तो भी वे कष्ट देते हैं, जैसे अग्नि को सिर पर भी धारण करें अर्थात् उच्च स्थान दें तो भी वह जलाती ही है।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥

अर्थ—दुर्जन यदि विद्या से युक्त हो तो भी उसका त्याग करने में ही कल्याण है, क्योंकि वह तो भयंकर है, जिस प्रकार सर्प मणि से भूषित रहते हुए भी विषधारी भयावना है।

पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अर्थ—सांप को दूध पिलाने से उस में विष की ही वृद्धि होगी, ऐसे ही मूर्खों तथा दुष्टों को उपदेश देने से उनकी मूर्खता तथा दुष्टता ही बढ़ती है।

वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षम् ।
यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ॥वेद॥

अर्थ—जो (अस्माकं) हमारे (इदं मनः) इस मन को (हिनस्ति) हानि पहुंचाता है, तं (कुलिशेनेव वृश्चामि) उसे इस प्रकार काट डालो जैसे कुल्हाड़ी वृक्ष को काटती है।

विदुर नीति

इदं च त्वां सत्यपरं ब्रवीमि,
पुण्यं पदं तात महाविशिष्टम् ।
न जातु कामान्न भयान्नलोभा-
द्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ॥

अर्थ—हे तात (प्यारे) तुमसे एक यह अत्युत्तम मत कहता हूँ कि काम से, लोभ से, भय से और जीवन के लिये भी कभी धर्म को नहीं छोड़ना चाहिये। और जो लोक तथा परलोक दोनों में हितकर हो वही धर्म है।

नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये ।
जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ॥
त्यक्त्वाऽनित्यं प्रतिष्ठस्व नित्ये ।
संतुष्य त्वं तोषपरो हि लाभः ॥

क्योंकि, धर्म नित्य है और सुख-दुख अनित्य हैं अर्थात् कभी आते हैं, कभी चले जाते हैं। जीव (अपने शुद्ध स्वरूप से) नित्य है। इसको

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बंधन में रखने वाली शरीरादि उपाधियां अनित्य हैं। इसलिये हे राजन्, अनित्य वस्तुओं में मन न लगाकर नित्य की ओर ध्यान दो।

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तंद्रा भयं क्रोधो आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥

अर्थ—उन्नतिशील व्यक्तियों को चाहिये कि निद्रा, तन्द्रा (ऊंघना), भय, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता अर्थात् ढीलापन इन छः शत्रुओं का त्याग कर दें।

धन्वन्तरि—नीति

हरिं हरीतकीं चैव सावित्रीं च दिने दिने।
आरोग्यार्थी च मोक्षार्थी, भक्षयेत् कीर्त्तयेत् सदा ॥

अर्थ—मोक्ष प्राप्ति की इच्छा रखने वाले पुरुष को प्रति दिन हरिकीर्तन व गायत्री का जप करना चाहिये तथा स्वस्थ रहने की इच्छा रखने वाले पुरुष को प्रति-दिन हरड़ सेवन करना चाहिये।

भोजनांते पिवेत् तक्रं,
वासरांते पिवेत् पयः।
निशांते च पिवेत् वारि,
त्रिभी रोगो न जायते ॥

अर्थ—भोजन के पश्चात् तक्र (मट्ठा) पीना चाहिये; शयन समय दूध का सेवन करना चाहिये; प्रातःकाल (ब्राह्ममुहूर्त) में जल पीना चाहिये; ऐसा करने से रोग नहीं होते।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वामशायी द्विभुंजानः षण्मूत्री द्विपुरीषकः ।
स्वल्पमैथुनकारी च शतं वर्षाणि जीवति ॥

अर्थ—बायें पार्श्व सोने वाला, दिन में दो बार भोजन करने वाला, प्रति दिन छः बार मूत्र त्याग व दो बार मल त्याग करने वाला तथा बहुत कम भोग करने वाला पुरुष सौ वर्ष तक जीता है।

आदौ चित्ते ततः काये,
सतां सम्पद्यते जरा ।
असतां तु पुनः काये,
नैव चित्ते कदाचन ॥

अर्थ—सत्पुरुषों के पहले मन में वैराग्य उत्पन्न होकर शरीर में बुढ़ापा आता है, परन्तु इसके विपरीत असत् पुरुषों का शरीर तो जीर्ण हो जाता है, परन्तु मन कभी बूढ़ा नहीं होता।

पात्रे त्यागी गुणे रागी,
भोगी परिजनैः सह ।
भावबोद्धा रणे योद्धा,
प्रभुः पंचगुणो भवेत् ॥

अर्थ—सुयोग्य अधिकारी पुरुष को दान, गुणग्राही अर्थात् दूसरों के गुणों में अभिरुचि, अपने आश्रितों के साथ पदार्थों का उपभोग, तत्त्व को समझना तथा संग्राम में शूरता ये पांच गुण प्रभुता-सम्पन्न पुरुष में होने चाहिये।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दुर्गा सप्तशती

परमात्मा पिता भी है और माता भी। इसी परमात्मा की महा-माया त्रिगुणात्मक रूप से सारे विश्व को चला रही है। उसी परमात्मा की स्तुति माता रूप से दुर्गा सप्तशती में की गयी है :—

नमो दैव्यै महादैव्यै शिवायै सततन्नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम् ॥

अर्थ—कल्याण-रूप दिव्य गुणवाली महादेवी सर्वश्रेष्ठ प्रकृति माता को हम नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

अर्थ—जो देवी सभी प्राणियों में बुद्धि रूप से स्थित है उसको हम मन, वचन, कर्म से प्रणाम करते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥

अर्थ—जो देवी समस्त प्राणियों में शक्तिरूप से स्थित है उसको हम बार बार प्रणाम करते हैं।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेत्तत्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥

अर्थ—हे अनन्त वीर्यवती देवि ! तुम वैष्णवी शक्ति तथा इस विश्व की बीज रूप परम माया हो। तुमसे यह समस्त संसार मोहित किया हुआ है। तुम प्रसन्न होकर मुक्ति प्रदान करती हो।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विद्याःसमस्तास्तव देवि भेदाःस्त्रियःसमस्ताःसकला जगत्सु
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।

अर्थ—हे देवि ! समस्त विद्याएं तुम्हारे ही भेद हैं, समस्त स्त्रियां तुम्हारे ही रूप हैं। मातृरूप होकर अकेली ही तुमने विश्व का पालन किया है। तुम्हारी सर्वोत्तम स्तुति का क्या वर्णन किया जाय ?

* * *

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भगवान् बुद्ध

सत्तर कोटि हिन्दुओं (आर्य-धर्मियों) की बौद्ध-शाखा के प्रवर्तक तथा ज्ञान, दया, प्रेम और तप की मूर्ति, भगवान् बुद्ध ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

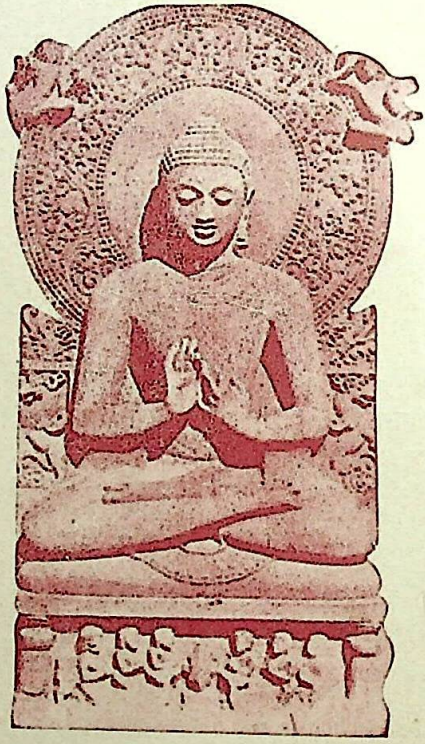

भगवान् बुद्ध

पण्डित जन आर्यों के बतलाये हुए धर्म में रमण करते हैं।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भगवान् बुद्ध की वाणी

बौद्ध धर्म और हिन्दूधर्म एक ही वृक्ष की दो शाखायें हैं। वास्तव में बौद्धधर्म और हिन्दू-धर्म एक ही है। हिन्दू लोग भगवान् बुद्ध को अवतार मानते हैं। आज प्रत्येक धार्मिक और मांगलिक कार्य के समय तथा पूजा संध्या के प्रारम्भ में भगवान् बुद्ध का स्मरण किया जाता है। यथा—"जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्य्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलि-प्रथम-चरणे बुद्धावतारे"

भगवान् बुद्ध का उपदेश

भगवान् बुद्ध के उपदेशों में प्रायः वही बातें हैं, जो अन्य उच्च कोटि के गीता आदि आर्य सद्ग्रंथों में हैं। बुद्ध ने स्वयं भी यही कहा है कि मैं आर्य-धर्म कह रहा हूँ, सनातन धर्म कह रहा हूँ। किन्तु उनके उपदेशों में निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति को ही प्रधानता दी गई है। इसलिये त्याग, वैराग्य और मन तथा इंद्रियनिग्रह पर ही अधिक बल दिया गया है।

बौद्ध और हिन्दू

भारत के बाहर यूरोप, अमेरिका आदि देशों में भी बुद्ध को प्रायः सभी जानते हैं। समस्त संसार में भगवान् बुद्ध का जैसा आदर और जैसी ख्याति है, वैसी किसी भी महापुरुष की नहीं है। उनके अनुयायियों की संख्या भी संसार में अधिक है, अर्थात् हिन्दुओं और बौद्धों की मिल कर अस्सी कोटि है। किन्तु हिन्दुओं के लिये यह आश्चर्य और खेद की बात है कि अपने इस नवम अवतार के कार्यों तथा उपदेशों के सम्बंध

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

में जो ढाई सहस्र वर्ष की ही बात है, बहुत कम मनुष्यों को ही कुछ कुछ जानकारी है। अपने उन बौद्ध भाइयों के सम्बंध में तो जो चीन, जापान, लंका, तिब्बत, बरमा, स्याम आदि में पैंतालीस करोड़ की संख्या में बसते हैं—हिन्दुओं का ज्ञान नहीं के बराबर ही है।

मूल धर्म के अंग

आवश्यकता इस बात की है कि अपने सहधर्मी यथा शैव, शाक्त, वैष्णव, आर्य, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि स्वदेश या विदेश में कहीं भी हों उनमें परस्पर घनिष्टता तथा सहानुभूति रहनी ही चाहिये। देश-काल के भेद से भाषा-भेद, रीति-रिवाज, खान-पान के भेद होते हुए भी ये सभी सम्प्रदाय मूल में महान् और सच्चे सनातन आर्य-धर्म के ही अंग हैं।

बौद्ध सिद्धान्त

भगवान् बुद्ध के सम्बंध में उनके 'धम्मपद' ग्रंथ से कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते हैं। पाठक उनको पढ़ कर देखेंगे कि कैसी सुन्दर वाणी में उन्होंने उस समय की पाली भाषा में प्राचीन आर्य-धर्म का ही प्रचार किया है।

भगवान् बुद्ध का अनुशासन

सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं एतं बुद्धान सासनं॥

सर्वपापस्याकरणं कुशलस्योपसम्पदा।
स्वचित्तपर्यवदानम् एतद्बुद्धानुशासनम्॥

अर्थ—संपूर्ण पापों का परित्याग करके पुण्य लाभ करो, अपने चित्त की शुद्धि करो, यही भगवान् बुद्ध का आदेश है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बालवग्गो

मधू व मञ्ञति बालो याव पापं न पच्चति ।
यदा च पच्चती पापं अथ बालो दुक्खं निगच्छति ॥

मध्विव मन्यते बालो यावत् पापं न पच्यते ।
यदा च पच्यते पापं अथ दुःखं निगच्छति ॥१०॥

अनुवाद—अज्ञ (जन) जब तक पाप का परिपाक नहीं होता, तब तक उसे मधु के समान मधुर जानता है । जब पाप का परिपाक होता है, तो वह दुःखी होता है ।

न हि पापं कतं कम्मं सज्जु खीरं व मुच्चति ।
डहन्तं बालमन्वेति भस्मच्छन्नोव पावको ॥

नहि पापं कृतं कर्म सद्यः क्षीरमिव मुञ्चति ।
दहन् बालमन्वेति भस्माच्छन्न इव पावकः ॥१२॥

अनुवाद—ताजे दूध की भांति किया पाप-कर्म (तुरन्त) विकार नहीं लाता । वह भस्म से ढकी आग की भांति दग्ध करता हुआ अज्ञ जन का पीछा करता है ।

पंडितवग्गो

धम्मपीति सुखं सेति विप्पसन्नेन चेतसा ।
अरियप्पवेदिते धम्मे सदा रमति पण्डितो ॥

धर्मपीती सुखं शेते विप्रसन्नेन चेतसा ।
आर्यप्रवेदिते धर्मे सदा रमते पंडितः ॥४॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अनुवाद—धर्म (रस) का पान करने वाला प्रसन्नचित्त हो सुखपूर्वक सोता है, पंडित (जन) आर्यों के बतलाये धर्म में सदा रमण करते हैं।

अत्तवग्गो

अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया ।
अत्तना हि सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं ॥

आत्मा हि आत्मनो नाथः कोहि नाथः परः स्यात् ।
आत्मना हि सुदान्तेन नाथं लभते दुर्लभम् ॥४॥

अनुवाद—(पुरुष) आप ही अपना स्वामी है, दूसरा कौन स्वामी हो सकता है ? अपने को भली प्रकार दमन कर लेने पर (वह एक) दुर्लभ स्वामी (अर्थात् परम पद-निर्वाण) को पाता है। इसी भाव के निम्नलिखित गीता के श्लोक हैं—

भगवद्गीता—अध्याय ६

"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥४॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्" ॥६॥

लोकवग्गो

यथा बुब्बुलकं पस्से यथा पस्से मरीचिकं ।
एवं लोकं अवेक्खन्तं मच्चुराजा न पस्सति ॥

येथा बुद्बुदकं पश्येद् यथा पश्येत् मरीचिकाम् ।
एवं लोकमवेक्षमाणं मृत्युराजो न पश्यति ॥४॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अनुवाद—जैसे कोई बुलबुले को देखता है या जैसे मरु-मरीचिका को देखता है, इस लोक में वैसे ही जो (पुरुष) देखता है, उसकी ओर यमराज आंख उठाकर नहीं देख सकता।

एथ पस्सथिमं लोकं चित्तं राजरथूपमं
यत्थ बाला विसीदन्ति नत्थि संगो विजानतं ॥

एत पश्यतेमं लोकं चित्रं राजरथोपमम्।
यत्र बाला विषीदन्ति नास्ति संगो विजानताम् ॥५॥

अनुवाद—आओ, विचित्र राजरथ के समान इस लोक को देखो, जिसमें मूढ़ आसक्त होते हैं, ज्ञानी जन आसक्त नहीं होते।

अन्धभूतो अयं लोको तनुकेत्थ विपस्सति।
सकुन्तो जालमुत्तो व अप्पो सग्गाय गच्छति ॥

अन्धभूतोऽयं लोकः तनुकोऽत्र विपश्यति।
शकुन्तो जालमुक्त इवाल्पः स्वर्गाय गच्छति ॥८॥

अनुवाद—यह लोक अंधे जैसा है, यहाँ देखने वाले थोड़े ही हैं। जाल से मुक्त पक्षी की भांति विरले ही स्वर्ग को जाते हैं!

न वे कदरिया देवलोकं वजन्ति
बाला हवे न प्पसंसन्ति दानं।
धीरो च दानं अनुमोदमानो
तेनेव सो होति सुखी परत्थ ॥

न वै कदर्या देवलोकं व्रजन्ति
बाला ह वै न प्रशंसंति दानम्।
धीरश्च दानं अनुमोदमान-
स्तेनैव स भवति सुखी परत्र ॥११॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

अनुवाद—कंजूस देवलोक नहीं जाते, मूढ़ दान की प्रशंसा नहीं करते धीर दान का अनुमोदन कर उसी कर्म से परलोक में सुखी होता है।

बुद्धवग्गो

किच्छो मनुस्सपटिलाभो
किच्छं मच्चान जीवितं ।
किच्छं सद्धम्मसवणं
किच्छो बुद्धानं उप्पादो ॥

कृच्छ्रो मनुष्यप्रतिलाभः कृच्छ्रं मर्त्यानां जीवितम् ।
कृच्छ्रं सद्धर्मश्रवणं कृच्छ्रो बुद्धानां उत्पादः ॥४॥

अनुवाद—मनुष्य (योनि) का लाभ कठिन है, मनुष्य का जीवन मिलना कठिन है, सच्चा धर्म सुनने को मिलना कठिन है, बुद्धों (परम ज्ञानियों) का जन्म कठिन है।

दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्य च अतिक्कमं ।
अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं दुक्खूपसमगामिनं ॥

दुखं दुःखसमुत्पादं दुःखस्य चातिक्रमम् ।
आर्याष्टांगिकं मार्गं दुःखोपशमगामिनम् ॥१३॥

अनुवाद—(१) दुःख, (२) दुःख की उत्पत्ति, (३) दुःख का अतिक्रमण और (४) दुःख-नाशक आर्य अष्टांगिक मार्ग*—जो कि दुःख को शमन करने की ओर ले जाता है।

---

*आर्य-अष्टांगिक मार्ग है—पवित्र धारणा, पवित्र संकल्प, पवित्र वचन, पवित्र कर्म, यथार्थ जीविका, यथार्थ उद्योग, स्मृति और यथार्थ ध्यान।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुखवग्गो

अरोग्य परमा लाभा संतुट्ठी परमं धनं ।
विस्सास परमा ञाति निब्बानं परमं सुखं ।।

आरोग्यं परमो लाभः संतुष्टिः परमं धनम् ।
विश्वासः परमा ज्ञातिः निर्वाणं परमं सुखम् ।।८।।

अनुवाद—नीरोग होना परम लाभ है, संतोष परम धन है, विश्वास सब से बड़ा बन्धु है, निर्वाण सब से बड़ा सुख है।

कोधवग्गो

सच्चं भणे न कुज्झेय्य
दज्जा अप्पम्पि याचितो ।।
एतेहि तीहि ठानेहि
गच्छे देवान सन्तिके ।।

सत्यं भणेत् न क्रुध्येत् दद्यादल्पमपि याचितः ।
एतैस्त्रिभिः स्थानैः गच्छेद् देवानामन्तिके ।।४।।

अनुवाद—सच बोले, क्रोध न करे, थोड़ा भी मांगने पर दे, इन तीन बातों से पुरुष देवताओं के पास जाता है।

धम्मट्ठवग्गो

न तावता धम्मधरो यावता बहु भासति ।
यो च अप्पम्पि सुत्वान धम्मं कायेन पस्सति ।
स वे धम्मधरोहोति यो धम्मे न प्पमज्जति ।।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न तावता धर्मधरो यावता बहु भाषते।
यश्चाल्पमपि श्रुत्वा धर्मं कायेन पश्यति।
स वै धर्मधरो भवति यो धर्मे न प्रमाद्यति ॥४॥

अनुवाद—बहुत बोलने से धर्मधर (धार्मिक ग्रंथों का ज्ञाता) नहीं होता, जो थोड़ा भी सुन कर शरीर से धर्म का आचरण करता है और जो धर्म में असावधानी (प्रमाद) नहीं करता, वही धर्म-धर है।

नागवग्गो

सुखा मेत्तेय्यता लोके अथो पेत्तेय्यता सुखा।
सुखा सामञ्ञता लोके अथो ब्रह्मञ्ञता सुखा ॥

सुखा मात्रीयता लोकेऽथ पित्रीयता सुखा।
सुखा श्रमणता लोकेऽथ ब्राह्मणता सुखा ॥१३॥

अनुवाद—लोक में माता की सेवा सुखकर है और पिता की सेवा (भी) सुखकर है, श्रमणभाव (संन्यास) तथा ब्राह्मणपन (निष्पाप होना) सुखकर है।

तण्हावग्गो

सब्बदानं धम्मदानं जिनाति
सब्बं रसं धम्मरसो जिनाति।
सब्बं रतिं धम्मरती जिनाति
तण्हक्खयो सब्बदुखं जिनाति ॥

सर्वदानं धर्मदानं जयति सर्वरसं धर्मरसो जयति।
सर्वां रतिं धर्मरतिर्जयति तृष्णाक्षयः सर्वदुःखं जयति ॥२१॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अनुवाद—धर्म का दान सारे दानों से बढ़कर है, धर्म-रस सारे रसों से प्रबल है, धर्म में रति सब रतियों से बढ़कर है, तृष्णा का विनाश सारे दुःखों को जीत लेता है।

भिक्खुवग्गो

हत्थसञ्ञतो पादसञ्ञतो
वाचासञ्ञतो सञ्ञतुत्तमो ।
अज्झत्तरतो समाहितो
एको सन्तुसितो तमाहु भिक्खुं ॥

हस्तसंयतः पादसंयतो वाचासंयतः संयतोत्तमः ।
अध्यात्मरतः समाहित एकः सन्तुष्टस्तमाहुर्भिक्षुम् ॥३॥

अनुवाद—जिसके हाथ, पैर और वचन में संयम है, जो उत्तम संयमी है, जो घट के भीतर (अध्यात्म) रत, समाधियुक्त, अकेला और सन्तुष्ट है, उसे भिक्षु कहते हैं।

सब्बसो नाम रूपस्मिं
यस्स नत्थि ममायितं ।
असता च न सोचति
स वै भिक्खू ति वुच्चति ॥

सर्वशो नामरूपे यस्य नास्ति ममायितम् ।
असति च न शोचति स वै भिक्षुरित्युच्यते ॥८॥

अनुवाद—नाम रूप जगत् में जिस की बिल्कुल ही ममता नहीं, न होने पर जो शोक नहीं करता, वही भिक्षु कहा जाता है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ब्राह्मणवग्गो

वाहितपापो ति ब्राह्मणो
समचरिया समणो ति वुच्चति ।
पब्बाजयमत्तनो मलं
तस्मा पब्बजितो ति वुच्चति ॥

वाहितपाप इति ब्राह्मणः समचर्यः श्रमण इत्युच्यते ।
प्रव्रजयन्नात्मनो मलं तस्मात् प्रव्रजित इत्युच्यते ॥६॥

अनुवाद—जिसने पाप को धोकर बहा दिया है वह ब्राह्मण है, जो समता का आचरण करता है वह (श्रमण-संन्यासी) है चूंकि उसने अपने चित्त से मलों को हटा दिया है इसी लिये वह प्रव्रजित कहा जाता है।

यस्स कायेन वाचाय मनसा नत्थि दुक्कटं ।
संवुतं तीहि ठानेहि तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥

यस्य कायेन वाचा मनसा नाऽस्ति दुष्कृतम् ।
संवृतं त्रिभिः स्थानैः तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥९॥

अनुवाद—जिसके मन, वचन और काय से दुष्कृत (पाप) नहीं होते, जो इन तीनों ही स्थानों में संवर (संयम) युक्त है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

न जटाहि न गोत्तेन
न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
यम्हि सच्चञ्च धम्मो च
सो सुची सो च ब्राह्मणो ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न जटाभिर्न गोत्रेन न जात्या भवति ब्राह्मणः ।
यस्मिन् सत्यं च धर्मश्च स शुचिः स च ब्राह्मणः ॥११॥

अनुवाद—न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है। जिस में सत्य और धर्म है, वही शुचि 'पवित्र' है, और वही ब्राह्मण है।

भगवान् बुद्ध के इन वचनों में महाराजा युधिष्ठिर के वचनों का अद्भुत साम्य है। वन पर्व में सर्प-योनि में आये हुए महाराजा नहुष के प्रश्न करने पर महाराजा युधिष्ठिर ब्राह्मणों का लक्षण इस प्रकार बतलाते हैं :—

सत्यं दानं क्षमा शीलमानृशंस्यं तपो घृणा ।
दृश्यन्ते यत्र नागेन्द्र स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥
शूद्रे तु यद्भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न विद्यते ।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः ॥

हे सर्पराज! सत्य, दान, क्षमा, शील, आनृशंस्य, तप और दया आदि सद्गुण जिसमें हों, वही ब्राह्मण है। शूद्र में जो लक्षण होते हैं वे द्विज में नहीं होते, केवल जन्म से ही शूद्र शूद्र और ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं होता।

यस्सालया न विज्जन्ति अञ्ञाय अकथं कथी ।
अमतोगधं अनुप्पत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ॥

यस्याऽऽलया न विद्यन्ते आज्ञायाऽकथं कथी ।
अमृतावगाधमनुप्राप्तं तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम् ॥२९॥

अनुवाद—जिसे आलय (तृष्णा) नहीं है, जो भली प्रकार जानकर अकथ (पद) का कहने वाला है, जिसने गाढ़े अमृत को पा लिया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

धम्मपद के अतिरिक्त भगवान् बुद्ध के कुछ और उपदेश उनके अन्य ग्रन्थों से नीचे दिये जाते हैं :—

वर्ण-व्यवस्था-खण्डन (वासेट्ठसुत्तं २।५।८)

एक समय जब भगवान् बुद्ध वनखंड में विहार कर रहे थे, वशिष्ठ और भारद्वाज नाम के दो ब्राह्मण वर्ण-व्यवस्था पर वाद-विवाद करते हुए भगवान् के पास पहुंचे। भारद्वाज बोला—जाति से ब्राह्मण होता है या कर्म से? भगवान् बुद्ध बोले—सुनो मैं क्रमशः कहता हूँ—

प्राणियों की जातियों में एक दूसरे से जाति का भेद है। तृण और वृक्ष में भी जानते हो जाति का लिंग है; उनमें जातियां एक दूसरे से भिन्न हैं; फिर कीट पतंग से चींटी तक में जाति का लिंग है; लम्बी पीठ वाले पादोदर (जिसका उदर ही पैर का काम करे) सांप को भी जानते हो। फिर आकाश-चारी पक्षियों को भी जानते हो। जैसे इन जातियों में जाति का अलग-अलग लिंग है उस प्रकार का जाति-लिंग मनुष्यों में अलग अलग नहीं है। न केशों में, न शिर में, न कान में, न आंख में, न मुख में, न नासिका में, न ओठ में, न भौं में, न ग्रीवा में, न कंधे में, न पीठ में, न पेट में, न श्रोणी में, न उर में, न गोप्य स्थान में, न मैथुन में, न हाथ में, न पैर में, न उंगुली में, न नख में, न जंघा में, न उर में, न वर्ण या स्वर में, जैसा कि अन्य जातियों में है, जाति का कोई पृथक् लिंग नहीं है। मनुष्यों के शरीर पर यह भेदक लिंग नहीं मिलता, मनुष्यों में भेद सिर्फ संज्ञा में है।

प्राचीन ब्राह्मण कैसे थे, उनका पतन कैसे हुआ?

एक समय जब भगवान् श्रावस्ती के अनाथपिंडक के जेतवन-विहार में अपने शिष्यों-समेत विराजमान थे, कोशलदेश के कुछ सम्पन्न अति-

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वृद्ध ब्राह्मण लोग वहाँ उपस्थित हुए और नियमपूर्वक शिष्टाचार के साथ बैठे तथा कुछ धर्म-चर्चा करने के बाद उन लोगों ने अतिनम्रता-पूर्वक भगवान् से प्रश्न किया कि हे भगवन् ! वर्तमान समय में ब्राह्मणों का जैसा आचार-विचार है, क्या प्राचीन काल के ब्राह्मणों का भी आचार विचार ऐसा ही था ?

भगवान् ने कहा—"नहीं, वर्तमान समय के ब्राह्मणों के आचार-विचार की तरह प्राचीन समय के ब्राह्मणों का आचार-विचार नहीं था।"

वृद्ध ब्राह्मणों ने भगवान् से प्रार्थना की—"हे भगवान् ! तो फिर प्राचीन समय के ब्राह्मणों के आचार-विचार कैसे थे—उसे कृपा करके विस्तार के साथ कहिये।" वृद्ध ब्राह्मणों के वचन सुन कर भगवान् बोले—"प्राचीन ऋषि ब्राह्मण लोग संयत-आत्मा और तपस्वी होते थे। वे लोग पांचों कर्मेन्द्रियों के सुख को छोड़कर आत्म-कल्याण में निरत रहते थे। उन ब्राह्मणों के पास पशु, सोना, धान्य आदि वस्तुएं नहीं होती थीं। स्वाध्याय करना ही उनका धन-धान्य था। वे मित्रता, करुणा, मुदिता, उपेक्षारूपी ब्रह्म-विहार के धारण में निरत रहा करते थे। गृहस्थ लोग जो भोजन बनाकर द्वार पर उपस्थित ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक दान करते थे उसी को ग्रहण करके वे संतोषपूर्वक अपना निर्वाह करते थे। भांति-भांति के रंगीन और कोमल वस्त्र तथा बिछौनों के व्यवहार करने वाले, तरह-तरह के रंग-बिरंगे ऊंचे मकानों में वास करने वाले, सारे देश के दूर-दूर प्रान्तों से आकर उन ब्राह्मणों के सामने मस्तक नवाते थे। वे ब्राह्मण अवध्य, अजेय और अधर्म से रहित होते थे और उनको सब कहीं कोई भी अपने दरवाजें पर खड़े होने से नहीं रोकता था। पहले ब्राह्मण पैंतीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करके विद्या और आचार के अन्वेषण में लगे रहते थे। वे ब्राह्मण परस्त्री-गमन नहीं करते थे और न कभी स्त्री को खरीदते थे। विवाह करके परस्पर प्रेमपूर्वक भली-भांति मिलजुल कर रहना पसन्द करते थे। वे ब्राह्मण अपनी स्त्री के साथ भी बिना ऋतु के, जो रजोदर्शन के बाद होता है,

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कभी दूसरे समय में समागम नहीं करते थे । वे ब्रह्मचर्य, शील, सरलता सदा मृदुता, तप, सहानुभूति, दयाभाव और सहनशीलता की शिक्षा दे थे और ब्रह्मचर्य, क्षमा एवं शील की सदा प्रशंसा किया करते थे। ब्राह्मण चावल, वस्त्र, बिछौना, तेल और घृत धर्म-पूर्वक मांगकर संग्र करते थे और उसी से अपना यज्ञ-कर्म साधन किया करते थे। यज्ञ में क पशु नहीं मारते थे । गौ की रक्षा करते थे। माता-पिता, भाई तथा अन सम्बंधियों की तरह गौ भी हमारी परम मित्र है, उससे औषधियां पैदा होत हैं। ये गौ अन्न देने वाली, सौन्दर्य देने वाली और सुख देने वाली हैं, इ सच्ची बात को जान कर वे गायों की रक्षा करते थे। वे ब्राह्मण लोग प्रसन्न वदन, विशाल-काय, सुन्दर, यशस्वी, धर्म-परायण और अपने सब प्रका के कर्तव्यों के पालन में सदा उत्सुक रहते थे । जब तक ब्राह्मणों ऐसे अच्छे आचरण रहे, तब तक वे सुखी और मेधासम्पन्न थे और प्र भी सुखी थी।"

ब्रह्म-सायुज्य कैसे लाभ होता है ?

एक समय भगवान् अपने पांच शिष्यों के साथ विचरते हुए कोशल राज के मनसाकट ग्रामके, जो ब्राह्मणों की बस्ती थी, दक्षिण और अचिर वती नदी के किनारे आम के बाग में ठहरे थे । इसी समय पूर्वोक वशिष्ठ और भारद्वाज नामक दोनों ब्राह्मणों में ब्रह्मसायुज्य (ब्रह्म संग एकता) के विषय में विवाद होने लगा । भगवान् बुद्ध ने उन समझाया कि असद्गुणों से ब्रह्मसायुज्य नहीं प्राप्त हो सकता । जैसे एक आदमी तैर कर नदी पार करना चाहता हो, किन्तु यदि उसके हाथ पैर जंजीरों से जकड़े हों, तो वह नहीं पार कर सकता, ठीक इसी प्रका जो शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि विषयों के बंधन से बंधे हैं, काम हिंसा, आलस्य, अभिमान और संशय के आवरण से ढके हैं, ऐसे विघ्न से ग्रसित, ब्रह्मसायुज्य लाभ करने के सद्गुणों से विरत, तद्विरुद्ध असद् गुणों में निरत रहने वाले लोग, मरने के बाद ब्रह्मसायुज्य लाभ करें यह बिलकुल असम्भव है।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मोक्ष के विपरीत मार्ग पर चलने वाले व्यक्तिगण कभी भी ब्रह्म-सायुज्य लाभ नहीं कर सकते। नियमित धर्माचरण करने वाले जिन लोगों के हृदय में सम्पूर्ण भूतों के प्रति असीम प्रेम, करुणा, सहानुभूति और समता प्रकट होती है, वे ही मनुष्य ब्रह्मसायुज्य लाभ कर सकते हैं।

* * *

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

सन्त कबीरदास जी के शब्द

शब्द १

संतों सो सतगुरु मोहि भावे, जो आवागमन मिटावे ।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे, अस उपदेश दृढ़ावे ॥
बिन श्रम हठ किरिया से न्यारी, सहज समाधि लगावे ।
द्वार निरोधे पवन न रोके, नहिं अनहद उरझावे ॥
यह मन जहाँ जाय तहाँ, निर्भय समता से ठहरावे ।
कर्म करै सब रहै अकर्मी, ऐसी युक्ति बतावे ॥
सदा आनन्द फन्द सो न्यारा, भोग में योग सिखावे ।
तजि धरती आकाश अधर में, प्रेम मड़ैया छावे ॥
ज्ञान शिखर की शून्य शिलापर, आसन अचल जमावे ।
बाहर भीतर एकै देखे, दूजा भाव मिटावे ।
कहे 'कबीर' सोई गुरु पूरा, घट बिच अलख लगावे ॥

शब्द २

संतों मूल भेद कछु न्यारा, कोई विरला जाननहारा ।
मूंड मुड़ाय भयो का धारे, जटा जूट सिर भारा ॥
का भयो पशु सम नग्न फिरे वन, अंग लगाये छारा ।
का भयो कन्दमूल फल खाये, वायू पिये अहारा ॥
शीत उष्ण जल क्षुधा तृषा सहि, तन जीरन करि डारा ।
सांप छोडि बांबी को कूटे, अचरज खेल पसारा ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

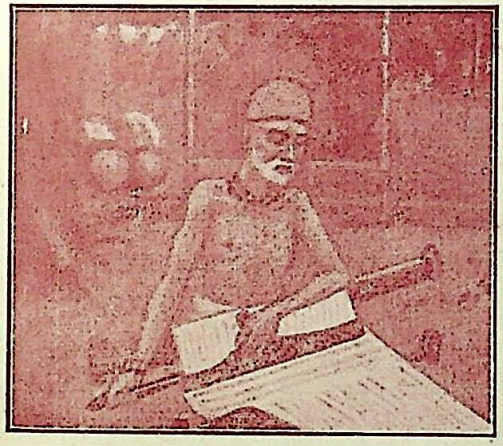

सन्त कबीरदास

भल चाहो तो चेतहु, आय लगी है नाव ।
बार बार पछिताहुगे, बहुरि न ऐसो दाव ॥

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

सन्त कबीरदास

(सम्वत् १४५६ से सम्वत् १५७५ तक)

ऐसा कहा जाता है कि महात्मा कबीर बचपन में एक जुलाहे के घर में पले थे। वे एक दृढ़ सुधारक और श्रेष्ठ कवि थे। आप पढ़े लिखे न होते हुए भी अतीव प्रतिभासम्पन्न थे। आप स्वामी रामानन्द जी के शिष्य थे और जाति-भेद नहीं मानते थे।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

धोवी से बस चले नहीं कछु, गदहा काह बिगारा ।
योग यज्ञ जप तप संयम व्रत, क्रिया कर्म विस्तारा ॥
तीरथ मूरत सेवा पूजा, यह उरलै व्यवहारा ।
हरि हर ब्रह्मा खोजत हारे, धरि धरि जग अवतारा ॥
पोथी पाना में क्या ढूंढे, वेद नेति कहि हारा ।
बिनु गुरु भक्ति भेद नहि पावे, भरमि करे संसारा ॥
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो, मानो कहा हमारा ॥

शब्द ३

सन्तो जीवत ही करु आशा ।
मुये मुक्ति गुरु कहैं स्वारथी झूठा है विश्वासा ॥
जीवत समझै जीवत बूझै जीवत होय भ्रम नासा ।
जिवत मुक्त जो भये मिले तेहि मुयेहू मुक्ति निवासा ॥
मनहीं से बंधन मनहीं से मुक्ती मनही का सकल विलासा ।
जो मन भये जिवत में बस नहिं तो देवै बहु त्रासा ॥
जो अब है सो तबहूं मिलिहैं ज्यों सपने जग भासा ।
जँह आसा तँह बासा होवै मन का यही तमासा ॥
जीवत होय दया सतगुरु की घट में ज्ञान प्रकासा ।
कहै 'कबीर' मुक्त तुम होवो जीवित ही धर्म दासा ॥

शब्द ४

सन्तो सतगुरु अलख लखावा ।
परम प्रकाशक पुंज ज्ञान घन घट भीतर दर्साया ॥
मन बुधि वानी जाहि न जानत वेद कहत सकुचाया ।
अगम अपार अथाह अगोचर नेति नेति जेहि गाया ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मा के वह प्रभु हाथ न आया ।
व्यास वशिष्ठ विचारत हारे कोई पार न पाया ॥

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

तिल में तेल काष्ठ में अग्नी घृत पय माहिं समाया ।
शब्द में अर्थ पदारथ पद में स्वर में राग सुनाया ॥
बीज मांहि अंकुर तरु शाखा पत्र फूल फल छाया ।
त्यों आतम में है परमातम ब्रह्म जीव अरु माया ॥
कहै 'कबीर' कृपालु कृपा करि निज स्वरूप परखाया ।
जप, तप, योग, यज्ञ, व्रत, पूजा, सब जंजाल छुड़ाया ॥

शब्द ५

सन्तो निरंजन जाल पसारा ।
स्वर्ग पताल मृत्युमण्डल रचि तीन लोक बिस्तारा ॥
हरि हर ब्रह्मा को प्रगटायो तिन्हें दियो सिर भारा ।
ठाम ठाम तीरथ रचि राखो ठगने को संसारा ॥
चौरासी बिच जीव फँसावे कबहुँ न होय उबारा ।
जारि जारि भसमी करि डारे फिर देवे अवतारा ॥
आवागमन रखे उरझाई बोरे भव की धारा ।
सदगुरु शब्द बिना नहि चीन्हें कैसे उतरै पारा ॥
माया फाँस फँसाय जीव सब आप बने करतारा ।
सत्य पुरुष का अमर लोक है ताको मूंदा द्वारा ॥
नेम धरम आचार यज्ञ तप ये उरलै व्यवहारा ।
जासों मिले अखण्ड मोक्ष सुख सो मारग है न्यारा ॥
काल जाल से बांचा चाहो गहो शब्द ततसारा ।
कहै 'कबीर' अमर करि राखो जो निज होय हमारा ॥

सन्त कबीरदास जी के दोहे

जो मन पर असवार है, सो कोइ विरला एक ।
मन सब पर असवार है, पैंड़े करै अनेक ॥१॥
चींटी जहाँ न चढ़ि सकै, राई नहि ठहराय ।
आवागमन को गम नहीं, तहाँ सकल जग जाय ॥२॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तन रहि तो मन जात है, मन रहि तो तन जाय ।
तन मन एकै ह्वै रहो, कबिरा हंस कहाय ॥३॥

जो जन भीजै राम रस, मग्न होत मन मांह ।
ज्यों दरपन की सुन्दरी, गहै न आवै बांह ॥४॥

करु बहियाँ बल आप ही, छांड़ि बिरानी आस ।
जेहि अँगना नदिया बहै, सो कस मरै पियास ॥५॥

हृदया भीतर आरसी, मुख देखो नहि जाय ।
मुख भी तब ही देखिये, दिल का धोखा जाय ॥६॥

गहके टेक न छाँड़िया, चोंच जीभ जरि जाय ।
कहा तप्त अंगार है, गये चकोर चबाय ॥७॥

जो तू साँचा बानियां, साँची हाट लगाय ।
अन्दर झाड़ू देह के, बाहर कहा बहाय ॥८॥

बड़े गये बड़ आपने, रोम-रोम हंकार ।
सुद्गुरु के परिचय बिना, चारो वर्ण चमार ॥९॥

ऊपर की दोऊ गई, हिय की गई हेराय ।
जाकी चारों ही गई, तासो कहा बसाय ॥१०॥

विषै कर्म की केंचुली, पहिर हुआ नर-नाग ।
सिर फोड़े सूझे नहीं, को आगिला अभाग ॥११॥

'कबिरा' माला काठ की, कहि समझावै तोहि ।
मन न फिरावै आपना, कहा फिरावै मोहि ॥१२॥

लोहा केरी नावरी, पाहन केरा भार ।
सिर पर विष की मोटरी, उतरा चाहै पार ॥१३॥

जैसी मुख ते नीकसै तैसी चालै चाल ।
परब्रह्म नेड़ा रहै, पल में करै निहाल ॥१४॥

ऊँचे कुल का जनमिया, करणी ऊँच न होय ।
सोनन कलस सुरै भरा, साधु निन्द्या सोय ॥१५॥

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

'कबिरा' औगुन ना गहै, गुन ही को ले वीनि ।
घट घट मह के मधुप ज्यों, परमात्मा ले चीन्हि ॥१६॥

जाके दिल में हरि बसै, सो नर कलपै काइ ।
एकै लहरि समन्द को, दुख दरिद्र सब जाइ ॥१७॥

हम जाना कुल हंस हो, ताते कीना संग ।
जो जनते जग बावरा, छुवन न देते अंग ॥१८॥

हीरा तहाँ न खोलिये, जहाँ कपट की हाट ।
बांधहु चुप की मोटरी, लागहु अपने बाट ॥१९॥

तौ लगि तारा जगमगै, जौ लगि उदय न सूर ।
तौ लगि जीवहु कर्म बस, जब लगि ज्ञान न पूर ॥२०॥

जाके दिल में कपट नहिं, कपट न लागै ताहि ।
जाके दिल में कपट है, कपटै कपटै खाहि ॥२१॥

शील रत्न सब से बड़ा, सब रत्ननि की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, बसै शील मँह आन ॥२२॥

गोधन, गजधन, बाजिधन, और सबै धन खान ।
जब आवै सन्तोस धन, सब धन धूरि समान ॥२३॥

मन तो अम्मर होत है, मारे नाहिं मराय ।
ज्ञान रत्न की करु शिला, घसत घसत घसि जाय ॥२४॥

सुख देना दुख मेटना, दूरि करण सब बाध ।
कहे 'कबीर' हम सब मिले, प्रेम सनेही साध ॥२५॥

साधू जग में दुर्लभ है, और मिले बहु भेष ।
नीर क्षीर ते जानिये, बगुला हंस परेख ॥२६॥

शब्द संभारे बोलिये, शब्द के हाथ न पांव ।
एक शब्द कर औषधी, एक शब्द कर घाव ॥२७॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दरबारी कानड़ा

घूंघट का पट खोल रे, तोको पीव मिलेंगे ।
घट घट में वह साईं रमता, कटुक वचन मत बोल रे ॥
धन जोवन को गरब न कीजै, झूठा पचरंग चोल रे ।
सुन्न महल में दियना वारिले, आसन ते मत डोल रे ॥
जाग जुगुत सों रंग महल में, पिय पायो अनमोल रे ।
कहै 'कबीर' आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ॥

जोगिया

राम निरंजन न्यारा रे ।
अंजन सकल पसारा रे ॥
अंजन उत्पत्ति वो उंकार ।
अंजन मांड्या सब बिस्तार ॥

अंजन ब्रह्मा संकर इन्द ।
अंजन गोपी संग गोबिन्द ॥
अंजन वाणी अंजन वेद ।
अंजन कीया नाना भेद ॥

अंजन विद्या पाठ पुरान ।
अंजन फोकट कथहिं गियान ॥
अंजन पाती अंजन देव ।
अंजन की करै अंजन सेव ॥

अंजन नाचे अंजन गावै ।
अंजन भेष अनन्त दिखावै ॥
अंजन कहौं कहाँ लग केता ।
दान पुन्न तप तीरथ जेता ॥

कहै 'कबीर' कोइ बिरला जागै ।
अंजन छांड़ि निरंजन लागै ॥

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

हिंडोल

अब मैं अपने राम को रिझाऊं ।
भव भंजन गुन गाऊं ॥ टेक ॥
गंगा जाऊँ न जमना जाऊँ,
ना कोई तीरथ न्हाऊं ।
अड़सठ तीरथ घट ही के भीतर,
वाही में मलि मलि न्हाऊं ॥
डाली तोरूँ न पाती तोरूँ,
ना कोई जीव सताऊँ ।
पात पात में प्रभू वसत है,
वाही को सीस नवाऊँ ॥
औषधि खाऊँ न वूटी खाऊँ,
ना कोई वइद वुलाऊँ ।
पूरन ब्रह्म वइद अविनासी,
वाही को नवज दिखाऊँ ॥
ज्ञान-कुठारा कस कर वांधूं,
सबद कमान चढ़ाऊँ ।
पांचों चोर वसें घट भीतर,
वाही को मारि गिराऊँ ॥
जोगी होय न जटा वढ़ाऊँ,
न अँग विभूति रमाऊँ ।
जो रंग रंगे आप विधाता,
और का रंग चढ़ाऊँ ॥
चांद सूरज दोउ सम करि मानूं,
प्रेम की सेज विछाऊँ ।
कहत 'कबीर' सुनो भाई सन्तो,
आवागमन मिटाऊं ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कौसिया

तुम बिना राम कौन सों कहिए ।
लागी चोट बहुत दुख सहिये ॥
बेध्यौं जीव विरह कै भाले ।
राति दिवस मेरे उर साले ॥
को जानै मेरे तन की पीरा ।
सतगुरु शब्द बहि गयो सरीरा ॥
तुम से वैद न हम से रोगी ।
उपजी बिथा कैसे जिवे वियोगी ॥
निस वासर मंह चितवत जाई ।
अजहूं न आइ मिले रामराई ॥

खमाच

अब तुम कब सुमरोगे राम,
जिवड़ा दो दिन का मिहमान ॥
बालपन में खेल गंवाया,
तरुन हुआ तब काम सताया ।
बिरधापन तन कांपन लागा,
निकल गया अवसान ॥
झूठी काया झूठी माया,
आखिर मौत निदान ।
कहत 'कबीर" सुनो भाई सन्तो,
यह थोड़ा मैदान ॥

जंगला

हरि तुम अपनी शरण मोहि राखो ।
गीध, व्याध, गज, गणिका तारी
वेद विमल यश भाखो ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

तुम तजि और ठौर नहिं मेरे
तेरे ही दरस अभिलाखो ।
सागर आगर गुण के उजागर
राग रंग रस चाखो ॥

आसा राग

राम गति पार न पावे कोई ।
चिन्तामणि प्रभु निकट छांड़ि करि,
भ्रमि भ्रमि मति-बुधि खोई ॥
तीरथ बरत जपै तप करि करि,
बहुत भांति हरि सोधै ।
सकति सुहाग कहों क्यूं पावै,
अछता कंत विरोधै ॥
नारी पुरुष वसै इक संगा,
दिन दिन जाइ अबोले ।
तजि अभिमान मिलै नहिं पिवको,
ढूंढ़त बन बन डोले ॥
कहै 'कबीर' हरि अकथ कथा है,
बिरला कोई जानै ।
प्रेम प्रीति बेधी अन्तर गति,
कहूं काहि को मानै ॥

धनाश्री

कहा नर गरबसि थोरी बात ।
मन दस नाज टका दस गठिया टेढ़ौ टेढ़ौ जात ॥
कहा लै आयो यह धन कोऊ कहा काऊ लै जात ।
दिवस चारि की है पतिसाही ज्यों बन हरियल पात ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

राजा भयो गांव सौ पायो टंका लाख दस भ्रात ।
रावन होत लंक कौ छत्रपति पल में गई बिसात ॥
माता पिता लोक सुत बनिता अन्त न चले संगात ।
कहै 'कबीर' राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥

पीलू

अब हरि हूँ अपनौ कर लीन्हों ।
प्रेम भगति मेरो मन भीनों ॥
जरै सरीर अंग नहिं मोरो ।
प्राण जाइ तौ नेह न तोरों ॥
चिन्तामणि क्यूं पाइये टोली ।
मन दे राम लियो निरमोली ॥
ब्रह्मा खोजत जनम गंवायो ।
सोइ राम घट भीतर पायो ॥
कहै 'कबीर' छुटी सब आसा ।
मिल्यौ राम उपज्यो विसवासा ॥

विहाग

मेरी अँखिया जान सुजान भईं ।
देवर भरम ससुर संग तजि करि, हरि पिव तहाँ गई ॥
बालापन के करम हमारे, काटे जानि दई ।
बाँह पकरि करि किरपा कीनी, आप समीप लई ॥
पानी की बुंद से जिन पिंड साज्या ता संगि अधिक रई ।
दास 'कबीर' पल प्रेम न घटई, दिन दिन प्रीति नई ॥

मलार

जतन बिन मिरगनि खेत उजारे ।
टारे टरत नहीं निसि बासर बिडरत नहीं बिडारे ॥

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

अपने अपने रस के लोभी करतव न्यारे न्यारे।
अति अभिमान वदत नहि कोऊ बहुत लोग पचि हारे॥
बुधि मेरी किरपी गुरु मेरी बिझुका आखिर दोई रखवारे।
कहै 'कबीर' अब खान न दैहौं बिरियां भली सँभारे॥

कालिंगड़ा

जागि रे जीव जागि रे।
चोरन कौ डर बहुत कहत हैं,
उठि उठि पहरै लागि रे॥
ररा करि टोप ममा करि बखतर
ज्ञान रतन करि पाग रे।
ऐसे जौ अजराइल मारै
मस्तक आवै भाग रे॥
ऐसी जागणी जे कोई जागै
ता हरि देई सोहाग रे।
कहै 'कबीर' जाग्या ही चाहिए
क्या गृह क्या बैराग रे॥

भैरवी

जो मैं बौरा तो राम तोरा।
लोग मरम का जानै मोरा॥
माला तिलक पहिरि मन मानो।
लोगन राम खिलौना जानों॥
थोरी भगति बहुत अहंकारा।
ऐसे भगता मिलैं अपारा॥
लोग कहैं कबीर बौराना।
कबिरा को मरम राम भल जाना॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आसा

राम नाम हिरदै धरि, निरमोलिक हीरा ।
सोभा तिहुँ लोक तिमिर, जाय त्रिविध पीरा ॥
त्रिसना नै लोभ लहरि, काम क्रोध नीरा ।
मद-मत्सर-कच्छ-मच्छ, हरख सोक तीरा ॥
कामनी अरु कनक भँवर, वोवे वहु वीरा ।
जन 'कवीर' नौका हरि, खेवट गुरु कीरा ॥

राग-पहाड़ी-कहरवा

तोरी गठरी में लागे चोर बटोहिया कारे सोवे ॥
पांच पचीस तीन हैं चुरवा यह सव कीना सोर ।
जागे सवेरा वाट अनेरा फिर नहीं लागै जोर ॥
भवसागर इक नदी वहतु है विन उतरे जाव बोर ।
कहै 'कवीर' सुनो भाई साधो ! जागत कीजै भोर ॥

पीलू

राम गुण न्यारे न्यारे न्यारे ।
अवुझा लोग कहाँ लौं वूझे वूझत हारि विचारे ॥
केतेहि रामचन्द्र तपसी से जिन यह जग विलमाये ।
केतेहि कान्ह भये मुरलीधर तिन्ह भी अंत न पाये ॥
मच्छ कच्छ बाराह स्वरूपी वामन नाम धराये ।
केते बुद्ध कलंकी कहिये तिन भी अन्त न पाये ॥
केतेहि सिधि साधक संन्यासी जिन वनवास बसाये ।
केतेहि मुनिजन गोरख कहिये तिन भी अंत न पाये ॥
जाकी गति ब्रह्मा नहिं जानी शिव सनकादिक हारे ।
ताके गुण नर कैसे कै पैहो कहहिं 'कबीर' पुकारे ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

सुघराई

कर मन प्रभु से प्रीत।
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहों जैहै अवसर बीत ॥
तन सुन्दर छवि देख न भूलो यह बालू की भीत।
सुख सम्पति सुपने की बतियाँ जैसे तृण पर शीत ॥
जाही करम परम पद पावे, सोई करम कर मीत।
शरण आये सों सबही उबारे याही प्रभू की रीत ॥
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो चलिहौं मैं दल जीत ॥

देश

नर को नहिं परतीत हमारी।
झूठा बनिज कियो झूठे सों पूंजि सबन मिलि हारी ॥
पट दर्शन मिलि पंथ चलायो तिरवेदा अधिकारी।
राजा देश बड़ो परपंची रैयत रहत उजारी ॥
इतते उत उतते इत रहहू जमका सांड़ सँभारी।
ज्यों कपि डोर बांधि बाजीगर अपनी खुसी पसारी ॥
इहै पैठि उतपति परलय का विषया सबै विकारी।
जैसे स्वान अपावन राजी त्यों लागी संसारी ॥
कहै 'कबीर' वह अद्भुत ज्ञानी जो मानै बात हमारी।
अजहूँ लेउ छुड़ाय काल सों सो करै सुरति सँवारी ॥

राग कालिंगड़ा

मन मस्त हुआ तब क्यों बोले।
हीरा पायो गांठ गठियायो बार बार वाको क्यों खोले।
हलकी थी जब चढ़ी तराजू पूरी भई तब क्यों तोले ॥
सुरत कलारी भई मतवारी मदवा पी गई बिन घोले।
हंसा पाये मान सरोवर ताल तलैया क्यों डोलें ॥
तेरा साहिब घट ही के भीतर बाहर नैना क्यों खोले।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो साहिब मिल गए तिल ओले ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

देशी राग

पण्डित मिथ्या करहु विचारा ।
न वहाँ सृष्टि न सिरजनहारा ॥
थल अस्थूल पानि नहिं पावक रवि शशि धरणि न नीरा ।
ज्योति स्वरूप काल नहिं जहवाँ वचन आहि शरीरा ॥
कर्म धर्म किछुऊ नहि उहवाँ न उहाँ मन्त्र न पूजा ।
संजम सहित भाव नहिं जहवाँ सो धौं एक कि दूजा ॥
गोरख राम एक नहि उहवाँ ना उहाँ वेद विचारा ।
हरिहर ब्रह्मा नहिं शिव शक्ती तीर्थन नाहिं अचारा ॥
माय बाप गुरु जहवाँ नाहीं सो दूजा कि अकेला ।
कहहिं 'कबीर' जे अब की बूझे सोई गुरु हम चेला ॥

खमाच

अपुनपौ आपन ही विसर्‌यो ।
जैसे स्वान कांच मंदिर में भरमित भूल रह्‌यो ॥
ज्यों केहरि बपु निरखि कूप जल प्रतिमा देख बस्यो ।
वैसेहि गज लखि फटिक शिला सो दशनन आनि अर्‌यो ॥
कर्कट मूठि स्वाद नहिं बिहरे घर घर रटत फिर्‌यो ।
कहै 'कबीर' नलनी के सुगना तेहि कौन पकर्‌यो ॥

पीलू-ठुमरी

मैं केहि समझावों सब जग अन्धा ।
इक दुइ होय उन्हें समझावों सबहि भुलाना
पेट के धन्धा ॥
पानी कै घोड़ा पवन असवरवा ढरिक परै जैसे
ओस के बुन्दा ।
गहरी नदिया अगम वहै धरवा खेवनहार के
पड़िगा फन्दा ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

घर की वस्तु नजर नहिं आवत दियना बारि के
ढूंढ़त अन्धा ।
लागी आग सबै बन जरिगा बिना गुरु ज्ञान
भटकिगा बन्दा ॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो ! एक दिन जाय
लँगूटी झार बन्दा ॥

मांड

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सो जन्म गँवाया ।
कभी न आया सन्ता शरणा ना तैं हरि गुण गाया ॥
वह वह मर्‌यो बैल की नाई सोय इहाँ उठि खाया ।
यह संसार हाट बनिये की सब कोई सौदे आया ॥
चातुर माल चौगुना कीनो मूरख मूल ठगाया ।
यह संसार फूल सेमर का शोभा देखि भुलाया ॥
मारी चोंच रुई निकसी तब सिर धुनिधुनि पछताया ।
यह संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो हाथ कछू नहिं आया ॥

तिलंग

भजन बिन तीनो पन बिगरे ।
बालापन तो खेल गँवाये तरुण गये अकरे ॥
वृद्ध भये तब कछुक न सूझत अन्ध होय निबरे ।
काहे के देह धरी मानुस की पशु समान गुजरे ॥
मन तो धन यौवन मदमातो बोलत गर्व भरे ।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो कर ले भजन हरे ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आशा राग

बन्दे कर ले आप निबेरा ।
आपु जियत लखि आपु ठौर करि मुवे कहाँ घर तेरा ॥
यह अवसर नहिं चेतो प्राणी अन्त कोई नहिं तेरा ।
कहै 'कबीर' सुनो हो सन्तो कठिन जाल का घेरा ॥

भैरवी

पण्डित वाद बदो सो झूठा ।
राम के कहे जगत गति पावे खांड कहे मुख मीठा ॥
पावक कहे पांव जो डाहे जल कहे तृषा बुझाई ।
भोजन कहे भूख जो भाजे जो दुनियाँ तर जाई ॥
नर के संग सुवा हरि बोले हरि परिताप न जाने ।
जो कबहूँ उड़ि जाय जंगल में तो हरि सुरति न आने ॥
बिनु देखे बिनु अरस परस बिनु नाम लिये क्या होई ।
धन के कहे धनिक जो होवे निर्धन रहे न कोई ॥
सांची प्रीति विषय माया सों हरि भक्तन की फांसी ।
कहत 'कबीर' एक राम भजे बिन बांधे जमपुर जासी ॥

बसन्त राग

चलरे भौंरा जहँ नित बसन्त ।
अवसर बीते नहिं फिर मिलन्त ॥
सुख सागर हैं जहँ सुख निधान ॥
जहँ ग्रीष्म करत न तनिक हान ।
जहँ कुमुद फूल फूले अनन्त ।
जहँ भँवर नित्य खेलत बसन्त ॥१॥
वह कुँज सघन तहाँ कुहके मोर ॥
जहँ प्रेम बूंद सागर हिलोर ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

निज स्वप्रकास सो बन फुलन्त ।
जँह सुख निधान तँह करु वसन्त ॥२॥
यहि बन में विषय विकार भोग ।
जँह व्यापै संसय महा सोग ।
चलो चल वहाँ यह तजो सन्त ।
जहाँ जोग जीत खेले बसन्त ॥३॥
तहाँ पुहुप अगर महके सुबास ।
धवलित गुलाल अरु सेत भास ।
सत्पुरुष जहाँ नित मिले कन्त ।
सुनु कह 'कबीर' तँह करो बसन्त ॥४॥

भैरव

है कोई, भूला मन समझावै ।
यह मन चंचल चोर पाहरू छूटा हाथ न आवै ॥
जोड़ि जोड़ि धन औड़े गोड़े जहाँ कोई लेन न पावै ।
कण्ठ कपाल आनि जम घेरै दे दे सैन बतावै ॥
खोटा दाम गांठ लिये डोले बड़ी बड़ी वस्तु मोलावै ।
बोय बबूल दाख फल चाहे सो फल कैसे पावै ॥
गुरु की दया साधु की संगति ये दोउ मति विसरावै ।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो बहुरि न भव-जल आवै ॥

होली-काफी

खेलत फाग बसन्त रैन दिन सहज सून्य में होरी ।
सतगुरु दया साधु की संगति त्रिकुटी महल रचोरी ॥
गूंजत भंवर कोकिला बोले सोहं सोहं सोरी ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ अरु अगम निगम की झोरी ॥
मानो कोटि भानु ससि उदये जँह मनुआँ विलगोरी ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुरति सुहागिनि मन लिये मनुआँ दिये सुमति की खोरी ।
कहै 'कबीर' मगन भई विरहिन ब्रह्म ज्ञान झकझोरी ॥

होली काफी

होरी खेलन न जाने यह मन निपट अनारी ।
काम क्रोध मद लोभ मोह की सिर धर गागर भारी ॥
एक भरै एक भरि ले आवै दूजे भरन की बारी ।
उठी पैंठ सौदागर आयो का करै बनिज व्यापारी ॥
पिया सुहागिनि पिया संग खेलैं और भई सब न्यारी ।
या घट भीतर पांच मवासी और पचीसौं नारी ॥
इन्हें मारि होरी खेल पियारे काज सुधरि जाय सारी ।
छमा दया को अबीर बनायो, सुमति की भरि लई झोरी ॥
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो या विधि खेलो होरी ॥

भैरवी

अपनपौ आपन ही पायो ।
शब्द ही शब्द भयो उजियारा सत्गुरु भेद बतायो ॥
जैसे सुन्दरि सुत लै सूती स्वप्न में गयो हेरायो ।
जाग परी पलंग पै पायो ना कहिं गयो न आयो ॥
जैसे कुवँरि कण्ठ मनि हीरा आभूषण विसरायो ।
संग की सखि मिलि भेद बतायो जिव का भरम मिटायो ॥
जैसे मृग नाभी कस्तूरी ढूंढ़त बन बन धायो ।
नासा स्वाद भयो जब वाके उलटि निरन्तर आयो ॥
कहाँ कहों वा सुख की महिमा ज्यों गूंगे गुड़ खायो ।
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो ज्यों की त्यों ठहरायो ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

खमाच

कहा भयो मुख राम कह्यो रे ।
ज्यों भुजंग मन्त्रन वस कीनो
अन्तर्गत वाको विष न गयो रे ॥
माला तिलक भेप धरि हरि को
मांगत मांगत जन्म गयो रे ।
जैसे बधिक ओट टाटी की
बहु जीवन को दाव दियो रे ॥
अन्तर कपट वचन मुख शीतल
तन अधीन मन तउ न नयो रे ।
कहै 'कबीर' ताको सँग न कीजै
विन विवेक जिन भेप लियो रे ॥

भैरवी

खबर नहिं या जग में पल की ।
सुकृत कर ले राम सुमर ले, को जाने कल की ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी करि बातें छल की ।
पाप पुण्य की बांध पोटरिया कैसे हो हलकी ॥
तारन बीच चन्द्रमा झलके जोति झला झलकी ।
मात पिता कुटुम्ब भाई बन्धु तिरिया मतलब की ॥
माया लोभी नगर बसत है या अपने कब की ।
या संसार रैन का सपना ओस बून्द की झलकी ॥
कहै 'कबीर' सुनो भाई साधो बातें सद्गुरु की ॥

* * *

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सन्त तुलसीदास

(वि० सम्वत् १५८९ से सम्वत् १६८० तक)

मुगल बादशाहों के धार्मिक अत्याचारों से पीड़ित हिन्दू-जनता के हृदयों में हिन्दू-धर्म एवं हिन्दू-संस्कृति के गौरव को पुनः संचार करने वाले महाकवि संत तुलसीदास ही थे। आपने तत्कालीन हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को दृढ़ करके नवजीवन प्रदान किया। आर्य-संस्कृति और मर्यादा के आलोक 'रामचरितमानस' के रूप में श्री गोस्वामी तुलसीदासजी आज भी हिन्दू जाति की सेवा में संलग्न हैं।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

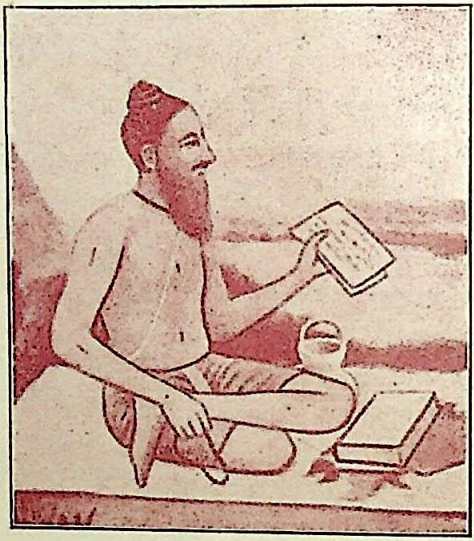

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी

तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान ।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवे सो लुने निदान ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गो० तुलसीदास जी के भजन

शंकर-स्तुति

भैरव-ताल चाचर

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम् ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म-वेद-स्वरूपम् ॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम् ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम ॥१॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयम् ।
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ॥
करालं महाकाल-कालं कृपालम् ।
गुणागार-संसार-पारं नतोऽहम ॥२॥

कलातीत - कल्याण - कल्पान्तकारी ।
सदा सच्चिदानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द - सन्दोह - मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥३॥

भैरव-ध्रुपद चारताल

मोहतमतरणि हर रुद्र शंकर शरण
हरण भय शोक लोकाभिरामं ।
बालशशिभाल सुविशाललोचनकमल
काम - शत - कोटि-लावण्य-धामं ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

सकल-निरुपाधि निर्गुण निरंजन ब्रह्म,
कर्मपथमेकमजं निर्विकारं ।
ज्ञान वैराग्य धन धर्म कैवल्य सुख,
सुभग सौभाग्य शिव सानुकूलं ॥
तदपि नरमूढ़ आरुढ़-संसार-पथ,
भ्रमत भव-विमुख तव पादमूलं ।
तज्ञ सर्वज्ञ यज्ञेश अच्युत विभो,
विश्व भवदंश संभव पुरारी ॥
ब्रह्मेन्द्रचन्द्रार्क वरुणाग्नि-वसु-मरुत,
यम-अर्चि भवदंघ्रि सर्वाधिकारी ॥

आसावरी झपताल

कम्बु कुन्देन्दु कर्पूर गौरं शिवं,
सुन्दरं सच्चिदानन्द कन्दं ।
सिद्ध सनकादि योगीन्द्र वृन्दारका,
विष्णु विधि वन्द्य चरणारविन्दं ॥
ब्रह्मकुलवल्लभं सुलभ मति दुर्लभं,
विकट वेष विभुं वेदपारं ।
नौमि करुणाकरं गरल-गंगाधरं,
निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं ॥
लोक-नाथं शोक-शूल-निर्मूलिनं,
शूलिनं मोह-तम-भूरि-भानुं ।
काल-कालं कलातीतमजरं हरं,
कठिन कलिकाल-कानन-कृशानुं ॥
तमज्ञमज्ञान पाथोधि घट संभवं,
सर्वगं सर्व-सौभाग्य-मूलं ।
प्रचुरभवभंजनं प्रणत-जन-रंजनं,
दास 'तुलसी' शरण सानुकूलं ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ईश्वर का ध्यान

राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ।
सर्व रहित सब उरपुर बासी ॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा ।
मति अनुमान निगम अस गावा ॥
बिनु पद चले सुनै बिनु काना ।
कर बिनु कर्म करे विधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी ।
बिन वाणी वक्ता बड़ योगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा ।
ग्रहै घ्राण बिनु वास अशेखा ॥
अस सब भांति अलौकिक करणी ।
महिमा तासु जाई किमि वरणी ॥

राग आसा, ताल-धुमाली

नहिं असत्य सम पातक पुंजा ।
गिरिसम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
जहाँ सुमति तँह सम्पति नाना ।
जहाँ कुमति तँह विपति निधाना ॥
परहित वश जिनके मन माहीं ।
तिन कँह जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
सहसा करि पीछे पछताहीं ।
कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं ॥
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा ।
वन्ध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
फूलहिं नभ बरु बहु बिधि फूला ।
जीव न लहै सुख हरि प्रतिकूला ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

तृषा जाय बरु मृग जलपाना ।
बरु जामहिं शश शीश बिपाना ॥
अन्धकार बरु रविहिं नसावै ।
राम विमुख न जीव सुख पावै ॥
हिम ते अनल प्रगट बरु होई ।
विमुख राम सुख पाव न कोई ॥

खमाच-धुमाली ताल

बरसहिं जलद भूमि नियराये ।
यथा नवहिं बुध विद्या पाये ॥
बुन्द अघात सहैं गिरि कैसे ।
खल के वचन सन्त सह जैसे ॥
छुद्र नदी भरि चलि उतराई ।
जस थोरे धन खल बौराई ॥
भूमि परत भा डाबर पानी ।
जिमि जीवहिं माया लपटानी ॥
सिमिट सिमिट जल भरे तलावा ।
जिमि सदगुण सज्जन पँह आवा ॥
सरिता जल जल-निधि मँह जाई ।
होई अचल जिमि जन हरि पाई ॥
अर्क जवास पात बिनु भयऊ ।
जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
ससि सम्पन्न सोह महि कैसी ।
उपकारी की सम्पति जैसी ॥
कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।
जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
ऊसर बरसे तृण नहिं जामा ।
सन्त हृदय जस उपज न कामा ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कबहुं प्रबल चल मारुत,
जँह तँह मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत कुल उपजे,
सम्पति धर्म नसाहिं ॥

अविनाशी का ध्यान

जय जय अविनाशी ! घटघट वासी !
व्यापक परमानन्दा ।
अविगति गोतीता चरित पुनीता,
माया रहित मुकुन्दा ॥
जेहि लागि विरागी अति अनुरागी,
विगत मोह मुनि-वृन्दा ।
निशि वासर ध्यावहिं गुण गण गावहिं,
जयति सच्चिदानन्दा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई
संग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी,
जानिय भक्ति न पूजा ॥
जो भव-भय-भंजन मुनि-मन-रंजन,
गंजन विपति बरुथा ।
मन-वच-क्रम-वानी छांड़ि सयानी,
शरण सकल सुर यूथा ॥

रामकली

रुचिर रसना तू राम राम राम क्यों न रटत ?
सुमिरत सुख सुकृत बढ़त अघ अमंगल घटत ॥
बिनु श्रम कलि-कलुष-जाल कटु कराल फटत ।
दिनकर के उदय जैसे तिमिर-तोम बटत ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

जोग, जाग, जप, विराग, तप सुतीरथ अटत ।
बांधिवे की भव गयन्द रेनु की रज्जु वटत ॥
परिहरि सुरमनि सुनाम गूंजा लखि लटत ।
लालच लघु तेरी लखि 'तुलसी' तोहि हटत ॥

कालिंगड़ा

जागु जागु जीव जड़ जौहै जग जामिनी ।
देह गेह नेह जानु जैसे घन-दामिनी ॥
सोवत सपने सहै संसृति-सन्ताप रे ।
बूड़ो मृग वारि खायो जेंवरी को सांप रे ॥
कहे वेद बुध तू तौ बूझि मन माहिं रे ।
दोष दुख सपने के जागे ही पै जाहिं रे ॥
'तुलसी' जागे ते जाय ताप तिहूं ताय रे ।
राम नाम सुचि रुचि सहज सुभाय रे ॥

देश-तीनताल

मेरो मन हरि जू हठ न तजै ।
निसि दिन देऊं नाथ सिख बहुविधि करत सुभाव निजै ॥
ज्यों जुवति अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजे ।
ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजे ॥
लोलुप भ्रम गृह पसु ज्यों जँह तँह सिर-पदत्रान बजै ।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग कबहूँ न मूढ़ लजै ॥
हौं हार्‌यो हरि जतन विविध विधि अतिसय प्रवल अजै ।
'तुलसीदास' बस होई तबहि जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

सोहनी-तीन ताल

ऐसी मूढ़ता या मन की ।
परिहरि राम-भगति-सुरसरिता, आस करत ओसकन की ।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धूमसमूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की ।
नहिं तँह सीतलता न वारि, पुनि हानि होत लोचन की ॥
ज्यों गच कांच विलोकि, स्येन जड़ छाँह आपने तन की ।
टूटत अति आतुर अहारवस, छति विसारि आनन की ॥
कँहलौं कहौं कुचालि कृपानिधि, जानत हौ गति मन की ।
'तुलसीदास' प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निजपन की ॥

भैरवी तीन ताल

कबहूँ मन विश्राम न मान्यो ।
निसि दिन भ्रमत विसारि सहज सुख, जँह तँह इन्द्रिन तान्यो ॥
जदपि विषय-संग, सहे दुसह दुख, विषमजाल अरुझान्यो ।
तदपि न तजत मूढ़ ममताबस, जानत हूँ नहिं जान्यो ॥
जनम अनेक किये नानाविधि, करम-कीच चित सान्यो ।
होइ न विमल विवेक-नीर विनु, वेद-पुरान बखान्यो ॥
निजहित नाथ, पिता-गुरु-हरिसों, हरषि हृदय नहिं आन्यो ।
'तुलसीदास' कब तृषा जाई सर, खनतहिं जनम सिरान्यो ॥

पीलू तीन ताल

जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे ?
कौन देव वरियाय विरद-हित, हठि हठि अधम उधारे ?
खग मृग, व्याध, पषान, विटप, जड़ जवन कवन सुर तारे ॥
देव-दनुज-मुनि नाग-मनुज सब, माया-बिबस बिचारे ।
तिन के हाथ दास 'तुलसी' प्रभु; कहा अपनपौ हारे ॥

धनाश्री तीन ताल

काहे ते हरि मोंहि बिसारो ।
जानत निज महिमा अघ मेरे, तदपि न नाथ संभारो ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

पतित-पुनीत दीन-हित असरन-सरन कहत श्रुति चारो।
हौं नहि अधम सभीत दीन किधों वेदन मृषा पुकारो॥
खग-गनिका-गज-व्याध-पांति जँह तँह हौहूँ बैठारो।
अब केहि लाज कृपानिधान परसत पनवारो टारो॥
जौ कलिकाल प्रबल अति होतो तुव निदेस तें न्यारो।
तौ हरि रोष भरोस दोष गुन तेहि भजते तजि गारो॥
मसक विरंचि, विरंचि मसक सम, करहु प्रभाव तुम्हारो।
यह सामर्थ्य अछत मोहि त्यागहु, नाथ तहाँ कछु चारो॥
नाहिन नरक परत मोकहँ डर, यद्यपि हौं अति हारो।
यहि बड़ि त्रास 'दास तुलसी' प्रभु, नामहुँ पाप न जारो॥

कौशिया--तीन ताल

मोह जनित मल लाग विविध विधि,
कोटिहु जतन न जाई।
जनम जनम अभ्यास निरत चित,
अधिक अधिक लपटाई॥
नयन मलिन परनारि निरखि,
मन मलिन विषय संग लागे।
हृदय मलिन वासना मान मद,
जीव सहज सुख त्यागे॥
पर निन्दा सुनि श्रवन मलिन भये,
वचन दोष पर गाये।
सब प्रकार मल-भार लाग,
निज नाथ-चरन विसराये॥
'तुलसीदास' व्रत-दान-ज्ञान-तप,
शुद्धि हेत अति गावै।
राम चरन-अनुराग-नीर बिनु,
मल अति नास न पावै॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भैरवी

जाके प्रिय न राम-वैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरीसम, यद्यपि परम-सनेही ॥
तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषन, बन्धु भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो, कन्त ब्रजवनितन्हि, भये मुदमंगलकारी ॥
नाते नेह राम के मनियत, सुहृत सुसेव्य जहांलौं ।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहालौं ॥
'तुलसी' सो सब भांति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम-पद एतो मतो हमारो ॥

देश-दादरा ताल

तू दयालु, दीन हौं, तू दानी, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो सों ?
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तो सों ॥
ब्रह्म तू, हौं जीव हौं, तू ठाकुर, हौं चेरो ।
तात, मात, गुरु, सखा तू, सब बिधि हितु मेरो ॥
तोहि-मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै ।
ज्यों-त्यों 'तुलसी' कृपालु, चरन-सरन पावै ॥

धनाश्री

अब लौं नसानी, अब न नसैहों ।
रामकृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिर न डसैहौं ॥
पायो नाम चारु चिन्तामनि, उर-कर ते न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित-कंचनहिं कसैहौं ॥
परबस जानि हंस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं ।
मन-मधुकर प्रनकरि 'तुलसी' रघुपति-पद-कमल बसैहौं ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

आसावरी

ममता ! तू न गई मेरे मन तें ।
पाके केस जनम के साथी, लाज गई लोकन तें ॥
तन थाके, कर कांपन लागे, जोति गई नैनन तें ।
श्रवन न बचन सुनत काहूके, बल गये सब इन्द्रिन तें ॥
टूटे दसन, बचन नहिं आवत, सोभा गई मुखन तें ।
कफ, पित, बात कण्ठ पर बैठे, सुतहिं बुलावत कर तें ॥
भाई बन्धु सब परम पियारे, नारि निकारत घर तें ।
जैसे ससिमण्डल बिच स्याही, छुटै न कोटि जतन तें ॥
'तुलसीदास' बलि जाउं चरननि पै, लोभ पराये धन तें ॥

बिलावल

हे हरि ! कवन जतन भ्रम भागे ?
देखत सुनत विचारत यह मन,
निज सुभाव नहिं त्यागे ॥
भक्ति, ज्ञान, वैराग्य सकल,
साधन यहि लागि उपाई ।
कोउ भल कहहु देहु कछु कोऊ,
असि बासना न उर ते जाई ॥
जेहि निसि सकल जीव सूतहिं,
तव कृपापात्र जन जागै ।
निज करनी विपरीत देखि मोहिं,
समुझि महा भय लागै ॥
यद्यपि भग्न मनोरथ विधि बस,
सुख इच्छित दुख पावै ।
चित्रकार कर हीन जथा,
स्वारथ बिन चित्र बनावै ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हृषीकेस सुनि नाम जाऊँ बलि,
अति भरोस जिय मोरे।
'तुलसीदास' इन्द्रिय सम्भव दुख,
हरे बनिहिं प्रभु तोरे॥

आसावरी

कौन जतन विनती करिये।
निज आचरन विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये॥
जेहि साधन हरि द्रवहुं जानि जन सो हठि परिहरिये।
जाते विपति-जाल निसिदिन दुख तेहि पथ अनुसरिये॥
जानत हूँ मन वचन करम पर हित कीन्हे तरिये।
सो विपरीत देखि पर सुख बिनु कारन ही जरिये॥
श्रुति पुरान सबकी मत यह सतसंग सुदृढ़ धरिये।
निज अभिमान मोह ईर्षा बस तिनहिं न आदरिये॥
सन्तत सोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये।
कहौ अब नाथ! कौन बोल तें संसार-सोक हरिये॥
जब कब निज-करुना-सुभाव तें द्रवहु तो निस्तरिये।
'तुलसीदास' विस्वास आन नहिं कत पचि पचि मरिये॥

卐

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

सन्त रैदास के पद

खमाच अणाना

हरि सा हीरा छांड़ि के,
करे आन की आस ।
ते नर यमपुर जाहिंगे,
सत भाषै रैदास ॥
'रैदास' रात न सोइये,
दिवस न करिये स्वाद ।
अहिनिसि प्रभु को सुमिरिये,
छाँड़ि सकल प्रतिवाद ॥

विहाग तीन ताल

भगती ऐसी सुन रे भाई ।
आई भगति तब गई बड़ाई ॥
कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हें ।
कहा भयो जे चरन पखारे जौ लौं तत्व न चीन्हें ॥
कहा भयो जे मुंड मुड़ाये कहा तीर्थ व्रत कीन्हें ।
खाली दास भगत अरु सेवक परम तत्व नहिं चीन्हें ॥
कह 'रैदास' तेरी भगति दूर है भाग बड़े सो पावे ।
तजि अभिमान मेटि आपा पन पिपलिक ह्वै चुनि खावै ॥

राग वागेश्वरी तीन ताल

प्रभु संगति सरन तिहारी ।
जग जीवन राम मुरारी ॥
गली गली के जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो ।
संगत के परताप महातम, नाम गंगोदक पायो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्वाति बून्द बरसै फनि ऊपर, सीस बिषै होइ जाई ।
वही बून्द कै मोती निपजै, संगति की अधिकाई ॥
तुम चन्दन हम रेन्ड बापुरे, निकट तुम्हारे आसा ।
संगत के परताप महातम, आवै बास सुवासा ॥
जाति भी ओछी कर्म भी ओछा, ओछा कसब हमारा ।
नीचे से प्रभु ऊंच कियो है, कह 'रैदास' चमारा ॥

कालिंगड़ा

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिलौ आस नहिं तनकी, तब को गावनहारा ॥
जब लग नदी न समुद्र समावै, तब लग बढ़े हँकारा ।
जब मन मिल्यो रामसागर सों, तब यह मिटी पुकारा ॥
जब लग भगति मुकुति की आसा, परमतत्व सुनि गावै ।
जँह जँह आस धरत है यह मन, तँह तँह कछू न पावै ॥
छाँड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह 'रैदास' जासों और कहत, परम तत्व अब सोई ॥

भैरवी

राम हो जग जीवन मोरा ।
तू न विसारि राम मैं तोरा ॥
संकट सोच पोच दिन राती ।
करम कठिन मोरी जाति कुजाती ॥
हरहु विपति भव करहु सो भाव ।
चरण न छांड़ों जाव सो जाव ॥
कह 'रैदास' कछु देहु अलम्ब ।
वेगि मिलो जनि करो बिलम्ब ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भूप--कल्याण

राम मैं पूजा कहाँ चढ़ाऊँ ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ॥
थन तर दूध जो बछरु जुठारी ।
पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥
मलयागिरि बेधियो भुजंगा ।
बिष अमृत दोउ एकै संगा ॥
मन ही पूजा मन ही धूप ।
मन ही सेउँ सहज स्वरूप ॥
पूजा-अरचा न जानूं तेरी ।
कह 'रैदास' कवन गति मेरी ॥

भैरव राग

पार गया चाहै सब कोई ।
रहि उस पार वार नहिं होई ॥
पार कहै उस वार से पारा ।
बिन पद परसे भ्रमै गँवारा ॥
पाय परम पद मांझ मुरारी ।
तामें आप रमै बनवारी ॥
पूरन ब्रह्म बसैं सब ठाईं ।
कह 'रैदास' मिले सुख साईं ॥

पीलू

आज दिवस लेऊँ बलिहारा ।
मेरे घर आया राम का प्यारा ॥
आँगन बंगला भवन भयो पावन ।
हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥
करूँ दण्डवत चरन पखारूँ ।
तन मन धन उन ऊपर वारूँ ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कथा कहैं अरु अरथ विचारें ।
आप तरें औरन को तारें ॥
कहै 'रैदास' मिलै निज दासा ।
जनम जनम कै काटें पासा ॥

बिहाग

यह अन्देश सोच हिय नेरे ।
निसि वासर गुन गाऊँ तेरे ॥
तुम चिन्तत मेरी चिन्तहु जाई ।
तुम चिन्तामनि हौ इक नाई ॥
भगत हेतु तुम का नहिं कीना ।
हमरी वेर भये बलहीना ॥
कहै 'रैदास' दास अपराधी ।
जेहि तुम द्रवहु सो भगति न साधी ॥

पीलू

जो तुम तोरो राम मैं नहिं तोरूँ ।
तुम से तोरि कवन से जोरूँ ॥
तीरथ बरत न करौ अन्देसा ।
तुम्हरे चरण-कमल का भरोसा ॥
जँह जँह जाऊँ तुमरी पूजा ।
तुम सा देव और नहिं दूजा ॥
मैं अपनो मन हरि सों जोरौं ।
हरि सों जोरि सबन सों तोरौं ॥
सब ही पहर तुम्हारी आसा ।
मन क्रम वचन कहै 'रैदासा' ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कौशिया

जब राम नाम कहि गावेगा ।
तब भेद अभेद समावेगा ॥
जो सुख है या रस के परसे ।
सो सुख का कहि आवेगा ॥
गुरुपरसाद भई अनुभव मति ।
विष अमरित समझावेगा ॥
कहै 'रैदास' मेटि आपापन ।
तब वा ठौरहिं पावेगा ॥

आसावरी

नर हरि चंचल है मति मेरी ।
कैसे भगति करौं मैं तेरी ॥
तू मोहि देखै हौं तोहिं देखूँ प्रीति परस्पर होई ।
तू मोहि देखै तोहि न देखूँ यह मति सब बुधि खोई ॥
सब घट अन्तर रमसि निरन्तर मैं देखन नहि जाना ।
गुन सब तोर मोर सब अवगुन कृत उपकार न माना ॥
मैं तैं तोरि मोरि असमझि सों कैसे करि निस्तारा ।
कहै 'रैदास' कृष्ण करुणामय जै जै जगत अधारा ॥

भैरवी

ऐसो कछु अनुभव कहत न आवै ।
साहब मिलें तो को विलगावै ॥
सब में हरि है हरि में सब है हरि अपनो निज जाना ।
साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना ॥
बाजीगर सों रांचि बाजी का मरम न जाना ।
बाजी झूठ सांच बाजीगर जाना मन पतियाना ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मन थिर होय तो कोई न सूझै जानै जाननहारा ।
कहै 'रैदास' विमल विवेक सुख सहज सरुप सँवारा ॥

कल्याण राग

जो तुम गोपालहिं नहि गैहौ ।
तो तुमको सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ ॥
माला नाय सबै जग डहको झूठो भेप बनैहौ ।
झूठे ते सांचे तब होइहो हरि की सरन जब ऐहौ ॥
कनरस, बतरस और सबै रस झूठहिं मूड़ डुलैहौ ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझ जैहौ ॥
जो जन राम राम रंग राते और रंग न सोहैहौ ।
कहै 'रैदास' सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितैहौ ॥

भैरवी

अब कैसे छुटै नाम-रट लागी ॥
प्रभुजी, तुम चन्दन, हम पानी ।
जाकी अंग-अंग बास समानी ॥
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत चन्द चकोरा ॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सोहागा ॥
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसो भक्ति करै 'रैदासा' ॥

卐

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

गुरु नानक विनय

कौसिया विलम्बित तीन ताल

सुमरन कर ले मेरे मना ।
तेरी बीती उमर हरि नाम बिना ॥

पंछी पंख बिन, हस्ती दन्त बिन, नारी पुरुष बिना ।
वेश्यापुत्र पिता बिनु हीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना ॥
कूप नीर बिनु, धेनु छीर बिनु, मन्दिर दीप बिना ।
जैसे तरुवर फल बिनु हीना, तैसे जन हरिनाम बिना ॥
देह नैन बिन, रैन चन्द्र बिन, धरती मेह बिना ।
जैसे पण्डित वेद विहीना, तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ निवारो, छोड़ विरोध तू संतजना ।
'नानक' कहे सुनो भगवंता, या जग में नहिं कोई अपना ॥

शंकरा–तीन ताल

काहे रे, बन खोजन जाई ।
सर्व-निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई ॥
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकर माहिं जस छाई ।
तैसे ही हरि बसै निरन्तर, घटही खोजो भाई ॥
बाहर भीतर एकहि जानौ, यह गुरु ज्ञान बताई ।
जन 'नानक' बिन आपा चीन्हें, मिटै न भ्रम की काई ॥

काफी–दीपचन्दी

बिसर गई सब तात पराई,
जब ते साधु-संगत हम पाई ।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

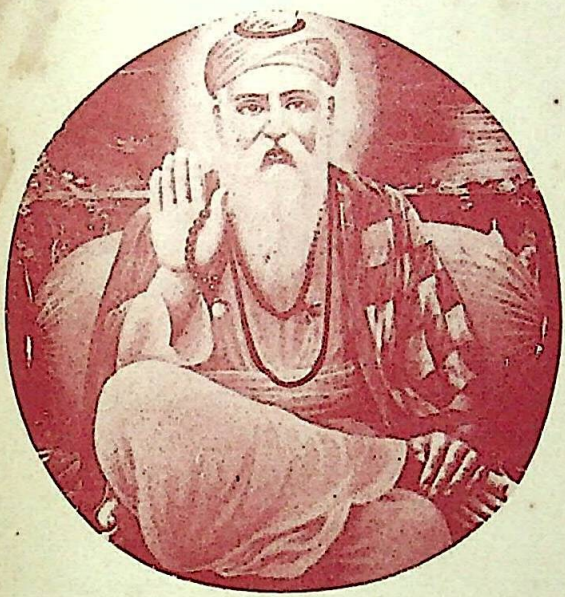

श्री गुरु नानक जी

'नानक' दुखिया सब संसार ।
सो सुखिया जेहि नाम अधार ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

श्री गुरु नानक जी

(वि० संवत् १५२६ से संवत् १५९६ तक)

श्री गुरु नानकजी का जन्म लाहौर के तलवंडी ग्राम में हुआ। इनका मन बचपन से ही भगवद्भक्ति की ओर झुका हुआ था। इन्होंने वेदान्त के निर्गुण मत का ही प्रचार किया। श्री गुरु नानकजी ने पंजाब के हिन्दुओं में नवीन जागृति, आचार और आत्मिक-जीवन उत्पन्न कर सिख-पंथ को जन्म दिया। आप सिख-पंथ के प्रथम गुरु थे।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ना कोई वैरी नाहिं बेगाना,
सकल संग हमरी बनि आई ॥
जो प्रभु कीन्हों सो भल मान्यो,
यहै सुमति साधुन ते पाई ।
सब मँह रमि रह्या प्रभु एकै,
पेखि-पेखि 'नानक' बिगसाई ॥

भीम पलासी

हरि बिनु तेरा कौन सहाई ।
काकी मातु-पिता-सुत-वनिता, को काहू को भाई ॥
धन धरनी अरु सम्पति सगरो, जो मान्यो अपनाई ।
तन छूटे कछु संग न चालै, कहा ताहि लपटाई ॥
दीन दयाल सदा दुख भंजन, तासों रुचि न बढ़ाई ।
'नानक' कहत जगत सब मिथ्या, जिउं सुपना रैनाई ॥

भैरव

कहा मन विषयन सों लिपटाई ।
या जग में कोउ रहन न पावै, एक आवै एक जाई ॥
काको तन धन सम्पति काकी, कासों नेह लगाई ।
जो दीखै सो सकल विनासै, जिउँ बादर की छाही ॥
तजि अभिमान शरण सन्तन गहु, मुक्ति होहि छिन माही ।
जन 'नानक' भगवंत भजन बिनु, सुख सुपनै भी नाही ॥

केदारा—तीन ताल

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी मानै ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना ।
हर्ष शोक ते रहै नियारे, नाहिं मान अपमाना ॥
आशा ममता सकल तियागै, जग ते रहै निरासा ।
काम क्रोध जेहि परसै नाही, तेहि घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्ही, तिन यह युक्ति पिछानी ।
'नानक' लीन भयो गोविन्दा, ज्यों पानी संग पानी ॥

आशा–मांड

राम भज, राम भज, जनम सिरात है ।
कहौं कहा बार बार, समुझत नहिं क्यों गंवार ।
बिनसत नहिं लगै बार, ओले सम गात है ॥
सकल भरम डार देहु, गोविन्द को नाम लेहु ।
अन्त बार संग तेरे, यही एक जात है ॥
विषया विष ज्यों बिसार, प्रभु को यश हिये धार ।
'नानक' जन कहै पुकार, अवसर विहात है ॥

हिंडोल

रे मन कौन गति होइ है तेरी ।
इह जग में राम नाम, सो तो नहीं सुन्यो कान ।
विषयन सों अति लुभान, मति नाहिं फेरी ॥
मानुष को जनम लीन, सुमिरन नहि निमिष कीन ।
दारा सुख भयो दीन, पगहूं परी बेरी ॥
'नानक' जन कहै पुकार, सुपने ज्यों जग पसार ।
सुमिरत नहिं क्यों मुरारि, माया जाकी चेरी ॥

भैरवी

कहा नर अपनो जन्म गँवावै ।
माया, मद, विषया-रस राच्यो, राम शरण नहिं आवै ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इह संसार सकल है सुपनो, देखत कहा लुभावै ।
जो उपजे सो सकल विनासे, रहन न कोऊ पावै ॥
मिथ्या तन सांचो करि मान्यो, इहि विधि आप बंधावै ।
जन 'नानक' सोऊ जग मुक्ता, राम भजन चित लावै ॥

दुर्गा–तेवरा

रे मन राम सों कर प्रीत ।
श्रवण गोविन्द गुन सुनो अरु गाव रसना गीत ॥
कर साधु संगति सुमिर माधव होय पतित पुनीत ।
काल व्याल ज्यों परचो डोलै मुख पसारे मीत ॥
आज कल पुनि तोहि ग्रसि है समझ राखो चीत ।
कहे 'नानक' राम भज ले जात अवसर बीत ॥

सिन्ध–भैरवी

मन कर कबहूँ हरि-गुण गायो ।
विषयासक्त रह्यो निशिबासर, कीनो अपनो भायो ॥
गुरु-उपदेश सुन्यो नहिं कानन, गृह-दारा लपटायो ।
पर-निन्दा कारन बहु धावत, आगम नहिं समझायो ॥
कहा कहौं मैं आपन करनी, जेहि विधि जनम गंवायो ।
कह 'नानक' सब अवगुण मोमें, राखि लेहु शरनायो ॥

मुलतानी–तीन ताल

मन की मन ही माहि रही ।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे, चोटी काल गही ॥
दारा मीत पूत रथ सम्पति, धन-जन-पूर्ण मही ।
और सकल मिथ्या यह जानो, भजना राम सही ॥
फिरत फिरत बहुतै जुग हार्यो, मानस देह लही ।
'नानक' कहत मिलन की विरियाँ, सुमिरत कहा नहीं ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

रेखता

राम सुमर, राम सुमर, येही तेरो काज है ।
माया का संग त्याग, प्रभुजी की सरन लाग,
जगत सुख मान मिथ्या, झूठो सब साज है ॥
सुपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान,
बारू की भीत तैसे, बसुधा को राज है ।
'नानक' जन कहत बात, बिनसि जै हैं तेरो गात,
छिन छिन करि गयो काल, तैसे जात आज है ॥

राग आसा महला–४

ओंकार सत् गुरु

हरि पुरुष निरंजन हरि अगमा अगम अपारा ।
सभी धियावहि तुधुजी हरि साचे सिरजणहारा ॥
सभी जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ।
हरि ध्यावहु सन्तहु जी सभी दुःख बिसारन हारा ॥
हरि आपे ठाकुर आपे सेवक 'नानक' जंत बिचारा ॥

गुरु नानक जी के दोहे

जागोरे जिन जागना, अब जागनि की बारि ।
फेरि कि जागो नानका, जब सोवउ पांव पसारि ॥
हिरदे जिनके हरि बसे, से जन कहिये सूर ।
कही न जाई 'नानका', पूरि रह्या भरपूर ॥
मन की दुविधा ना मिटै, मुक्ति कहाँ ते होय ।
कौड़ी बदले 'नानका', जन्म चला नर खोय ॥
संग सखा सब तज गये, कोई न निभयो साथ ।
कह 'नानक' यह विपद में, एक टेक रघुनाथ ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जो प्राणी ममता तजे, लोभ मोह अहंकार ।
कह 'नानक' आपन तरे, औरन लेत उबार ॥
गुन गोविन्द गायो नहीं, जनम अकारथ कीन ।
कह 'नानक' हरि भज मना, जेहि विधि जलको मीन ॥
सुख में सब संगी भये, दुःख में संग न कोय ।
कह 'नानक' हरि भज मना, अन्त सहाई सोय ॥
औरै की औरै भई, नर चाहत कछु और ।
'नानक' फांसी गल पड़ी, चितवत रह्यो ठगौर ॥
तीरथ ब्रत अरु दान करि, मन में धरे गुमान ।
'नानक' निष्फल जात तिह, ज्यों कुंजर असनान ॥

राग विहाग

सब कुछ जीवत को व्योहार ।
मात-पिता भाई सुत बांधव, अरु पुनि गृह की नार ॥
तन ते प्रान होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार ।
आध घरी कोऊ नहिं राखै, घर ते देत निकार ॥
मृग तृष्णा ज्यों जग रचना यह, देखो हृदै विचार ।
कह 'नानक' भज राम राम नित, जातें हो उद्धार ॥

जपुजी साहब से

(सिख सम्प्रदाय ग्रन्थ)

गुरुमुख नादं गुरुमुख वेदं गुरुमुख रह्या समाय ।
गुरु ईश्वर गुरु गोरख ब्रह्मा गुरु पार्वती माय ॥
सब जीवन का दाता सो मोहिं बिसरि न जाइ ।
जे युग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
थापिया न जाइ कीतान होइ ।
आपे आप निरंजन सोइ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection: Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

जिन सेविया तिन पाइया मान ।
'नानक' गाइये गुणी निधान ॥

आखहि वेद पाठ पुरान, आखहि परे करे व्याख्यान ।
आखहि वेद ब्रह्मा आखहि इंद, आखहि गोपी तै गोविन्द ॥
आखहि ईसर आखहि सिद्ध, आखहि केते कीते बुध ।
आखहि दानव आखहि देव, आखहि सुरनर मुनिजनसेव ॥
गावहिं चित्रगुप्त लिखि जानहिं, लिखि लिखि धरम विचारे ।
गावहिं ईसर वरमा देवी, सोहत सदा सवारे ॥
गावहिं इंद्र इंद्रासन बैठे, देवतिया दरि नाले ।
गावहिं सिद्ध समाधी अन्दरि, गावन साधि विचारे ॥
गावहिं जती सती संतोषी, गावहि वीर करारे ॥

ताके रूप न कथने जाहि ।
न ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिनके राम बसहि मन माहिं ।
जतु पहार धीरज सोनार ॥
अहरणि मति वेदु हथियार ।
घड़िये शब्द सती टकसाल ॥
जिन कउ नदरिकरम तिनकार ।
नानक नदरी नदरि निहाल ॥

काफी राग

काहै रे मन चितहि उद्दमु जो हरि जीव-पेट भरिया ।
सैलपथर में जंतु उपजाये ताको रिजकु आगे करि धरिया ॥
मेरे माधव जी सत संगति मिले सुतरिया ।
गुरुप्रसाद परम पद पाइया सूके काठ हरिया ॥
जननी पिता लोक सुत बनिता कोउ न किसी की धरिया ।
सिर सिर रिजकू सँबाहे ठाकुर काहें मन भय करिया ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उड़ि-उड़ि आवे सौ सौ कोसा तिसु पीछे बचरे छरिया ।
तिन कबन खिलावै कौन चुगावे मन मंह सुमिरन करिया ॥
सब निधान दस अष्ठ सिद्धि ठाकुर करतल धरिया ।
जन 'नानक' बलि सद बलि जइये तेरा अंत न पाराबरिया ॥

भैरवी

कोई मन हरि संग देवे जोर ।
चरनन गहो बको सुभ रसना, दीजे प्रान अकोर ॥
मन तन निर्मल करत कियारो, सीचे सुधा संजोर ।
आयो सरन दीन दुख भंजन, उधरै तुमरी ओर ॥
अभयदान सुमिरन स्वामी को, 'नानक' बन्धन छोर ॥

राग-धनाश्री

साधो ! यह मन गयो न जाई ।
चंचल तृष्णा संग बसत हैं, यातें थिर न रहाई ॥
कठिन क्रोध घट ही के भीतर, जेहि सुधि सब बिसराई ।
रत्न ज्ञान सबको हर लीना, तास्यों कछु न बसाई ॥
योगी यत्न करत सब हारे, गुणी रहे गुण गाई ।
जन 'नानक' हरि भये दयाला, तो सब विधि बन आई ॥

मांड

ठाकुर तुम शरणाई आया ।
उतर गया मेरे मन का सशंय, जबसे दर्शन पाया ॥
अन बोलत मेरी बिरथा जानी, अपना नाम जपाया ।
दुख नाशे सुख सहज समाये, अनंद अनंद गुन गाया ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

बाँह पकड़ लीनों अपने गृह, अन्ध कूप से माया ।
कह 'नानक' गुरु बंधन काटे, बिछुरत आन मिलाया ॥

भैरवी

हरि की गति कोई नहिं जाने ।
योगी, यती, तपी पचि हारे, अरु बहु लोग सयाने ॥
अपनी माया आप पसारे, आपे देखन हारा ।
नाना रूप धरे बहु रंगी, सबसे रहत नियारा ॥
अमित अपार अलेख निरंजन, जिन सब जग भरमाया ।
'नानक' सकल भरम तजि मैं तो, ताहि चरण चित लाया ॥

विहाग

भूलो मन माया अरुझायो ।
जो जो कर्म कियो लालच लगि, तँह तँह आप बंधायो ॥
समझ न पड़ी विषय रस राच्यो, यश हरि को विसरायो ।
संगही स्वामी सो जान्यो नाहीं, बन-बन खोजन धायो ॥
रत्न नाम घट ही के भीतर, ताको ज्ञान न पायो ।
जन 'नानक' भगंवत भजन बिन, बिरथा जनम गंवायो ॥

सिन्ध भैरवी

हरि को नाम सदा सुखदाई ।
जाको सुमिर अजामिल उधरयो, गणिका हूँ गति पाई ॥
पंचाली को राज सभा में, राम नाम सुधि आई ।
ताको दुःख हरयो करुणामय, अपनी पैज बढ़ाई ॥
जे नर करुणानिधि-यश गायो, ताको भये सहाई ।
कह 'नानक' मैं यही भरोसे, आन गही शरणाई ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आसा राग

विरथा कहूं कौन सों मन की ।
लोभ ग्रस्यो दशहूँ दिशि धावत, आशा लाग्यो धन की ॥
सुख के हेत बहुत दुख बोवत, सेव करत जन जन की ।
द्वारे द्वारे श्वान ज्यों डोलत, नहिं सुधि राम भजन की ॥
मानुष जनम अकारथ खोवत, लाज न लोक हँसन की ।
'नानक' हरियश क्यों नहिं गावत, कुमति विनासे तनकी ॥

卐

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भक्त सूरदास जी के पद

पीलू

हमारे प्रभु, अवगुन चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥
इक नदिया इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब दोऊ मिलि एक बरन भये, सुरसरि नाम परो ॥
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवे, कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रमजाल कहावे, 'सूर' श्याम सगरो।
अब की बेर मोहिं आनि उबारो, नहिं प्रण जात टरो ॥

आशा

अंखियां हरि दरसन की प्यासी।
देख्यो चाहत कमल नैन को, निसदिन रहत उदासी ॥
आये ऊधो फिरि गये आँगन, डारि गये गर फाँसी।
केसर-तिलक मोतिन की माला, वृन्दावन को वासी ॥
काहू के मन की कोऊ न जानत, लोगन के मन हाँसी।
'सूरदास' प्रभु तुमरे दरस बिन, लैहौं करवट कासी ॥

भैरवी

लाज मोरी राखो श्याम हरी।
कीनी कठिन दुःशासन मोसे, गहि केशन पकरी ॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन, चाहत नग्न करी।
पांचो पांडव सब बल हारे, तिन सौं कछु न सरी ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

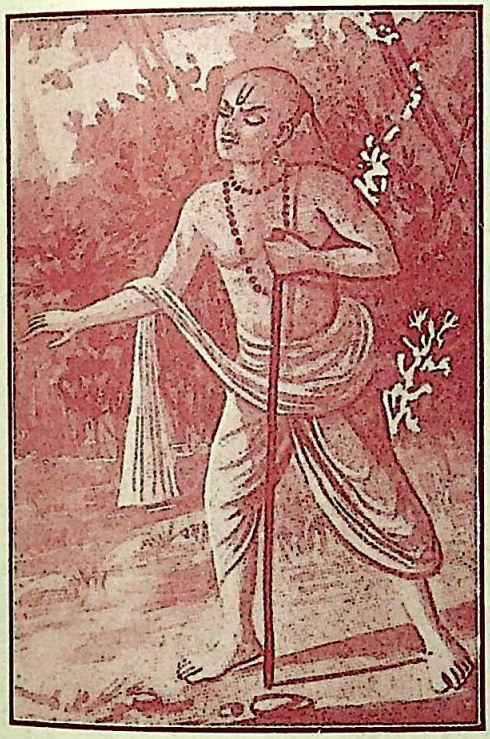

भक्त सूरदास जी

हाथ छुड़ाये जात हौ, निबल जानि कै मोहि ।
हिरदय तें जब जाहुगे, सबल बदौंगो तोहि ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

सन्त सूरदास

(वि० सम्वत् १५४० से सम्वत् १६२० तक)

महात्मा सूरदास जी सारस्वत ब्राह्मण थे। आप स्वामी वल्लभाचार्य के शिष्य और श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे। आप सांसारिक मोह नहीं व्यापे इसलिए स्वेच्छा से अपनी आंखें फोड़ कर अन्धे हो गए थे। भक्त कवियों में आप का स्थान सर्वोपरि है।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भीषम द्रोण विदुर भये विस्मित, तिन सब मौन धरी ।
अब नहिं मात पिता सुत बाँधव, एक टेक तुम्हरी ॥
वसन प्रवाह किये करुणानिधि, सेना हार परी ।
'सूर' श्याम जब सिंह शरण लई, कहा सृगाल डरी ॥

मालकोष

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ।
ता दिन तेरे तनु-तरुवर के, सबै पात झरि जैहैं ॥
घरके कहहिं बेग ही काढ़ो, भूत भये कोउ खैहैं ।
जा प्रीतमसों प्रीति घनेरी, सोऊ देखि डरैहैं ॥
कहँ वह ताल, कहा वह शोभा, देखत धूरि उड़ैहैं ।
भाई बन्धु कुटुम्ब कवीला, सुमिरि सुमिरि पछितैहैं ॥
बिन गोपाल कोऊ नहिं अपनो, जश कीरति रहि जैहैं ।
सो तो 'सूर' दुर्लभ देवन को, सत-संगति मँह पैहैं ॥

काफी—तीन ताल

रे मन मूरख, जनम गंवायो ।
करि अभिमान विषय-रस चाख्यो, स्याम-सरन नहिं आयो ॥
यह संसार फूल-सेमर को, सुन्दर देखि लुभायो ।
चाखन लाग्यो रुई उड़ि गई, हाथ कछू नहिं आयो ॥
कहा भयो अब के मन सोचे, पहले नाहिं कमायो ।
कहत 'सूर' भगवन्त भजन बिन, सिर धुनि धुनि पछतायो ॥

खमाच

छांड़ि मन, हरि विमुखन को संग ।
जिनके संग कुमति मन उपजति, परत भजन में भंग ॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग ।
कागहि कहा कपूर चुगाये, श्वान न्हवाये गंग ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

खर को कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषण अंग ।
गज को कहा न्हवाये सरिता, बहुरि धरै गहि छंग ॥
पाहन पतित बान नहिं भेदत, रीतो करत निषंग ।
'सूरदास' खल कारी कामरि, चढ़त न दूजो रंग ॥

खमाच

हम भक्तन के भक्त हमारे ।
सुन अरजुन परतिज्ञा मोरी, यह व्रत टरत न टारे ॥
भक्तै काज लाज हिय धरिकै, पांय पयादे धाऊँ ।
जहँ-जहँ भीर परै भक्तन पै, तहँ-तहँ जाइ छुड़ाऊँ ॥
जो मम भक्त सों वैर करत है, सो निज वैरी मेरो ।
देखि विचारि भक्ति हित कारन, हाँकत हौं रथ तेरो ॥
जीते जीत भक्त अपने की, हारे हारि विचारौं ।
'सूरदास' सुनि भक्त-विरोधी, चक्र-सुदर्शन जारौं ॥

जोगिया

जनम सिराने अटके अटके ।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे, रहे बीच ही लटके ॥
राज काज सुत पितु की डोरी, बिन विवेक फिरौं भटके ।
कठिन जो ग्रंथि परी माया की, तोरी जात न झटके ॥
कोटिक कला काछि दिखरावे, लोभ न छूटत नटके ।
'सूरदास' शोभा क्यों पावे, पिय विहीन धन मटके ॥

भैरवी

तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान ।
छूटि गये कैसे जन जीवित, ज्यों पानी बिन प्रान ॥
जैसे मगन नाद सुनि सारँग, बधत बधिक तनु बान ।
ज्यों चितवे शशि ओर चकोरी, देखत ही सुखमान ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जैसे कमल होत परिफूलित, देखत दरसन भान ।
'सूरदास' प्रभु हरि गुन मीठे, नित-प्रति सुनियत कान ॥

कल्याण

चरण कमल बन्दौं हरि राई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अन्धे को सब कुछ दरसाई ॥
बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई ।
'सूरदास' स्वामी करुणामय, बार बार बन्दौं तेहि पाई ॥

भैरवी तीन ताल

सुनो रे मन निर्बल के बल राम।
पिछली साख भरूं सन्तन की, आड़ संवारे काम ॥
जब लगि गज बल अपनी बरत्यो, नेक सर्‌यो नहिं काम ।
निर्बल होय बल राम पुकार्‌यो, आयो आधे नाम ॥
द्रुपद-सुता निर्बल भइ ता दिन, गह लायो निज धाम ।
दुःशासन की भुजा थकित भइ, बसन रूप भये श्याम ॥
अप-बल तप-बल, और बाहु-बल चौथा बल है दाम ।
'सूर' किशोर कृपाते सब बल, हारे को हरि नाम ॥

केदारा तीन ताल

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि विसरायो, ऐसो निमक हरामी ॥
भरि भरि उदर विषय को धावौं, जैसे सूकर ग्रामी ।
हरिजन छांड़ि हरी विमुखन की, निसिदिन करत गुलामी ॥
पापी कौन बड़ो है मोते, सब पतितन में नामी ।
'सूर' पतित को ठौर कहाँ है, सुनिए श्रीपति स्वामी ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भैरवी

दो में एकौ तौ न भई ।
ना हरि भजे न गृह सुख पाये, वृथा बिहाइ गई ॥
ठानी हुती औरे कछु मन में, औरे आनि ठई ।
अवगति गति कछु समझि परति नहिं, जो कुछ करत दई ॥
सुत सनेह तिय सकल कुटुम्ब मिलि, निसिदिन होत खई ।
पद-नख चन्द चकोर विमुख मन, खात अंगार मई ॥
विषय बिकार दवानल उपजी, मोह-बयार बई ।
भ्रमत भ्रमत बहुतै दुख पायो, अजहुँ न टेव गई ॥
कहा होत अबके पछताने, होनी सिर बितई ।
'सूरदास' सेये न कृपानिधि, जो सुख सकल मई ॥

सोहिनी तीन ताल

हरि बिन कोऊ काम न आयो ।
यह माया झूठी प्रपंच लगि,
रतन सो जनम गँवायो ॥
कंचन कलस विचित्र रोप करि,
रचि पचि भवन बनायो ।
ता में ते तेहि छिनही काढ्यो,
पल भरि रहन न पायो ॥
हौं तेरे ही संग जरौंगी,
यह कहि त्रिया धूति धन खायो ।
चलत रही चित चोरि मोरि मुख,
एक न पग पहुँचायो ॥
बोलि बोलि सब बोलि मित्रजन,
लीनों सो जिहि भायो ।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पर्‌यो काज जब अन्त की बिरियाँ,
तिनही आनि बँधायो ॥
आसा करि करि जननी जायो,
कोटिक लाड़ लड़ायो ।
तोरि लयो कटिहू को डोरा,
तापर वदन जरायो ॥
पतित-उधारन गनिका-तारन,
सो मैं सठ बिसरायो ।
लियो न नाम नेकहू धोखे,
'सूरदास' पछतायो ॥

राग आसावरी

अपुनपौ आपु ही बिसर्‌यो ।
जैसे स्वान कांच-मंदिर में, भ्रमि भ्रमि भूंकि मर्‌यो ॥
हरि सौरभ मृग नाभि बसतु है, द्रुमतृण सूंघि मर्‌यो ।
ज्यों सपने में रंक भूप भयो, तस्कर अरि पकर्‌यो ॥
ज्यों केहरि प्रतिबिम्ब देखिकै, आपुन कूप पर्‌यो ।
ऐसे गज लखि फटिक-सिला में, दसननि जाइ अर्‌यो ॥
मर्कट मूठि छांड़ि नहि दीनी, घर घर द्वार फिर्‌यो ।
'सूरदास' नलिनी को सुवटा, कहि कौने जकर्‌यो ॥

पीलू

काया हरि के काम न आई ।
भाव-भगति जहँ हरि-यश सुनियो तहाँ जात अलसाई ॥
लोभातुर ह्वै काम मनोरथ तहाँ सुनत उठि धाई ।
चरन-कमल सुन्दर जहँ हरि को, क्यों हूँ न जात नवाई ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

जब लगि श्याम अंग नहिं परसत, आँखें जोग रमाई ।
'सूरदास' भगवंत भजन बिन, विषय परम बिष खाई ॥

भैरवी

जग में जीवत ही को नातो ।
मन बिछुरे तन छार होइगो, कोइ न बात पुछातो ॥
मैं मेरो कबहूँ नहिं कीजै, कीजै पंच सोहातो ।
विषयासक्त रहत निशिबासर, सुख सीरो दुख तातो ॥
साँच झूठ करि माया जोरी, आपन रूखो खातो ।
'सूरदास' कछु थिर नहिं रहई, जो आयो सो जातो ॥

भैरवी

जैसे राखहुँ वैसेहि रहौं ।
जानत दुख-सुख सब जनके तुम, मुखसे कहा कहौं ॥
कबहुँक भोजन लहौं कृपानिधि, कबहुँक भूख सहौं ।
कबहुँक चढ़ौं तुरंग महागज, कबहूँ भार बहौं ॥
कमल-नयन घनश्याम मनोहर, अनुचर भयो रहौं ।
'सूरदास' प्रभु भक्त-कृपानिधि, तुमरे चरन गहौं ॥

खमाच

जो तू राम नाम चित धरतौ ।
अब को जन्म आगलो तेरो, दोऊ जनम सुधरतौ ॥
जम को त्रास सबै मिटि जातो, भक्त नाम तेरो परतौ ।
तंदुल घिसत सँवारि श्याम को, संत परोसो करतौ ॥
होत लाभ सन्तन की संगति, मूल गांठ ते टरतौ ।
'सूरदास' बैकुण्ठ-पैठ में, कोऊ न फेट पकरतौ ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कालिंगड़ा

सबै दिन गये विषय के हेत।
तीनौपन ऐसे ही बीते, केस भये सिर सेत ॥
आँखिन अंध श्रवन नहिं सुनियत, थाके चरन समेत।
गंगाजल तजि पिवत कूप जल, हरि तजि पूजत प्रेत ॥
राम नाम बिन क्यों छूटोगे, चन्द्र गहे ज्यों केत।
'सूरदास' कछु खरच न लागत, राम नाम मुख लेत ॥

सिन्ध भैरवी

हरि बिन कौन दरिद्र हरै।
कहत सुदामा सुन सुन्दरि, जिय मिलन न हरि बिसरै ॥
और मित्र ऐसे समया मँह, कत पहिचान करै।
विपति परे कुसलात न बूझै, बात नहीं उचरै ॥
उठिके मिले तन्दुल हम दीने, मोहन बचन फुरै।
'सूरदास' स्वामी की महिमा, टारि विधी न टरै ॥

आसा राग

जाके रूप वरन बपु नाहीं।
नैन मून्दि चितवो चित माहीं ॥
हृदय-कमल में ज्योति विराजे।
अनहद नाद निरन्तर बाजे ॥
इड़ा पिंगला सुखमन नारी।
सहज ताहि में बसें मुरारी ॥
माता पिता न दारा भाई।
जल-थल घट-घट रह्यो समाई ॥
इहि प्रकार भव दुख सरि तरहू।
योग-पंथ क्रम-क्रम अनुसरहू ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

देश रूपक

भज मन चरन संकट हरन।
सनक संकर ध्यान लावत, निगम असरन सरन ॥
सेस सारद कहैं नारद, सन्त चिन्तत चरन।
पद पराग प्रताप दुरलभ, रमा को हित करन ॥
परिस गंगा भई पावन, तिहूँ पुर उद्धरन।
चित चेतन करत अन्तः करन तारन तरन ॥
गये तरि लै नाम केते, सन्त हरिपुर धरन।
जासु पदरज परसि गौतम नारि गति उद्धरन ॥
कृष्ण पद मकरन्द पावन, और नहिं सिर परन।
'सूर' प्रभु चरनारबिन्द तें, मिटै जनम रु मरन ॥
जासु महिमा प्रकट कहत न, धोई पग सिर धरन ॥

होली काफी

जैहै लाज तिहारी, नाथ मोरो कहा बिगरैगो।
भरी सभा कौरवन की बैठी, बड़े बड़े ब्रतधारी ॥
बल बिहीन पांडव सुत ह्वै गए, धरनि धरमसुत हारी ॥
मो पति पांच पांच के तुम पति, पत राखो बनवारी।
दुष्ट दुःशासन चीर उतारै, तुव बिनु को रखवारी ॥
तुम तो दीनानाथ कहावत, मैं अति दीनदुखारी।
थोरे जल में मीन ज्यों तरपत, सो गति भई है हमारी ॥
अब तो नाथ रहो पट थोरो, डूबत नाव हमारी।
सूर श्याम पीछे पछतैहो, जब मोहिं देखिहौ उघारी ॥

सोरठ

द्रौपदी हरि से टेर कही।
मो पति पांच-पांच के तुम पति, तुम पति कहा जो भई ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पांचों पीठ चले दे मोको, प्रगट पुकार रही ।
भीषम, द्रोण, करण, दुःशासन, देखत चीर गही ॥
तिरिया नगन कबहु नहिं होती, फाटत क्यों न मही ।
शेष नाग जब थर थर कांप्यो, धरनी भार भई ॥
'सूर' श्याम पत द्रुपदसुता की, गिरधर राखि लई ॥

पीलू

सबै दिन एक से नहिं जात ।
सुमिरन भगति लेहु करि हरिकी, जौ लगि तन कुसलात ॥
कबहुँक कमला चपल पाय के, टेढ़इ टेढ़े जात ।
कबहुँक मग मग धूरि बटोरत, भोजन को बिलखात ॥
बालकपन खेलत ही खोयो, भगति करत अलसात ।
'सूरदास' स्वामी के सेवत, पैहो परम पद तात ॥

केदारा

है हरि नाम को आधार ।
और यह कलिकाल नाहिन रह्यो विधि व्यवहार ॥
नारदादि सुकादि संकर कियो यहै विचार ।
सकल श्रुति दधि मथत पायो इतनोई घृत सार ॥
दसहु दिसि ते कर्म रोक्यो मीन को ज्यों जार ।
'सूर' हरि को भजन करतहि मिटि गयो भव भार ॥

आसा

ऊधो कर्मन की गति न्यारी
सब नदियां जल भर भर बहियां, सागर किस विधि खारी ॥
उज्ज्वल पंख दिये बगला को, कोयल कित गुन कारी ।
सुन्दर नयन मृगा को दीने, बन बन फिरत उजारी ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

मूरख मूरख राजे कीन्हो, पण्डित फिरत भिखारी ।
'सूर' प्रभू ! मिलिवे को आशा, छिन छित वीतत भारी ॥

सारंग

प्रभु ! तुमरी गति कहत न आवे ।
ज्यों गूंगा मीठे फल का रस अन्तर्गत ही खावे ॥
परम-स्वाद सब ही जो निरन्तर, अमित तोष उपजावे ।
मन वाणी को अगम अगोचर, सो जानै जो पावै ॥
रूप रेख गुण जाति जुगति विन, निरालम्ब मन ध्यावे ।
सब विधि अगम अलौकिक ताते, 'सूरदास' क्या गावे ॥

राग-आसावरी, ताल–त्रिताला

नाथ मोहि अबकी वेर उबारो ।
तुम नाथन के नाथ कहावत दाता नाम तुम्हारो ।
तीन लोक के तुम प्रतिपालक मैं हूँ दास तिहारो ॥
नीच पतित तुम तारे रमापति अब न करो जिय गारो ।
'सूरदास' सांचो जब मानूं जो मम भय निस्तारो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मीरा

(वि० संवत् १५५५ से संवत् १६०३ तक)

सोलहवीं शताब्दी में मेवाड़ की एक राजवधू श्रीकृष्ण के प्रेम में मतवाली हो "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई" कहती हुई राज-महलों में थिरक उठी। वह थी उदयपुर महाराज-कुमार की स्त्री मीरा। राणा जी ने मीरा का ध्यान भक्ति और साधु-संग से हटाने के लिए नाना प्रयत्न किये, किन्तु मीरा के हृदय में तो गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य भक्ति का अंकुर फूट चुका था। फलस्वरूप आप राजकीय सुख परित्याग कर वृन्दावन में निवास करने लगीं। आप की वाणी अतीव उपदेश-पूर्ण, सरस और भक्ति भाव से ओतप्रोत है।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

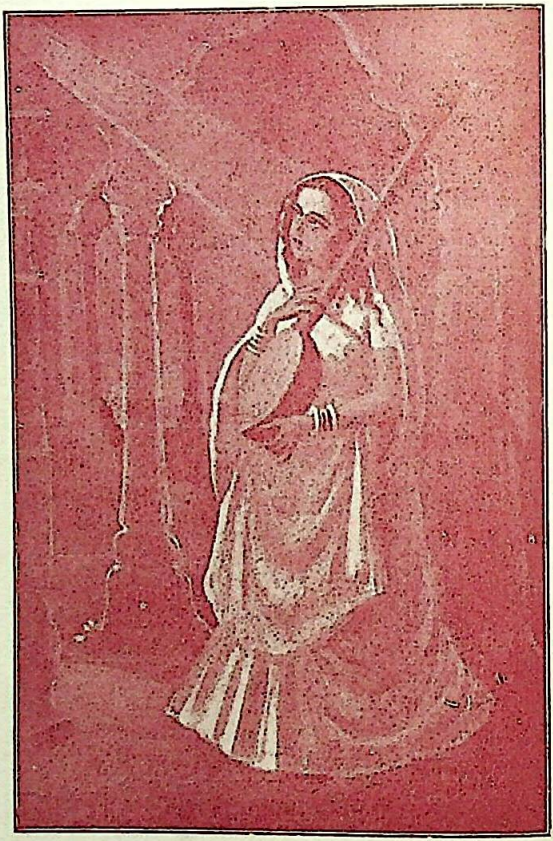

तपस्विनी मीरा

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तपस्विनी मीराबाई के पद

अणाना–तेवरा

हरि तुम हरो जन की भीर ।
द्रौपदी की लाज राखी, तुरत बढ़ायो चीर ॥
भगत कारण रूप नरहरि, धर्‌यो आप सरीर ।
हिरणाकुश मारि लीन्हों, धर्‌यो नाहिं न धीर ॥
बूड़तो गजराज राख्यो, कियो बाहर नीर ।
दासि 'मीरा' लाल गिरधर, चरन-कमलन-सीर ॥

काफी–ताल चाचर

हे री मैं तो दरद-दिवानी, मेरो दरद न जाणै कोय ।
घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय ॥
जौहरी की गति जौहरी जाणै, की जिन जौहर होय ।
सूली ऊपर सेज पिया की, किस विधि मिलना होय ॥
दरद की मारी बन-बन डोलूं, बैद मिला नहिं कोय ।
'मीरा' की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद सँवलिया होय ॥

मांड

घड़ी एक नहिं आवड़े, तुम दरसन बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राणजी, कासूं जीवण होय ॥
धान न भावै नीद न आवै, विरह सतावै मोय ।
घायल सी घूमत फिरूं रे, मेरो दरद न जाणै कोय ॥
दिवस तो खाय गमाइयो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमाया झूरतां रे, नैण गमाया रोय ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

जो मैं ऐसी जाणती रे, प्रीति किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा पीटती रे, प्रीति करो मत कोय ॥
पन्थ निहारूँ डगर वहारूँ, ऊभी मारग जोय ।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियां सुख होय ॥

भूप-कल्याण

म्हारी सुध ज्यां जानो ज्यां लीजो ।
पल-पल ऊभी पन्थ निहारूँ, दरशन म्हाने दीजो ।
मैं तो हूँ बहु अवगुण वाली, औगुण सब हर लीजो ॥
मैं तो दासी चरणकमल की, मिल बिछुड़न मत कीजो ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां चित दीजो ॥

मालकोष

हरि मेरे जीवन प्राण-अधार ।
और आसरो नाहीं तुम बिन, तीनू लोक मँझार ॥
आप बिना मोहिं कछु न सोहावे, निरख्यो सब संसार ।
'मीरा' कहे मैं दासि रावरी, दीजो मती बिसार ॥

तिलक कामोद

राणा जी म्हे तो गोविन्द का गुण गास्यां ।
चरणामृत को नेम हमारे, नित उठि दरसन पास्यां ॥
हरि-मन्दिर में निरत करास्यां घूंघरिया धमकास्यां ।
राम-नाम का झांझ चलास्यां भवसागर तर जास्यां ॥
यह संसार बाड़ का कांटा ज्या संगत नहिं जास्यां ।
'मीरा' कहै प्रभु गिरधर नागर निरखि परखि गुण गास्यां ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मांड

राणा जी थे क्याने राखो म्हासूं वैर ।
थे तो राणाजी म्हाने इसड़ा लागो, ज्यूं बृच्छन में कैर ॥
महल अटारी हम सब त्याग्या, त्याग्यो थार वसनो सहर ।
काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या, भगवां चादर पहर ॥
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, इमरित कर दियो जहर ॥

दुर्गा

मन रे परसि हरि के चरण ।
सुभग शीतल कँवल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ॥
जिन चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी शरण ॥
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेंट्यो, नख सिखां श्री धरण ।
जिन चरण काली नाग नाथ्यो, गोप लीला करण ॥
जिन चरण गोवरधन धार्‌यो, गर्व मघवा हरण ।
दासि 'मीरा' लाल गिरधर अगम तारन-तरण ॥

तोड़ी

भज मन चरण कँवल अविनासी ।
जेतइ दीसे धरण गगन बिच, तेतइ सब उठ जासी ॥
कहा भयो तीरथ ब्रत कीन्हें, कहा लिये करवट कासी ।
इण देही का गरब न करणा, माटी में मिल जासी ॥
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्याँ उठ जासी ।
कहा भयो है भगवा पहरयां, घर तज भये सन्यासी ॥
जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी ।
अरज करूँ अबला कर जोड़े, स्याम तुम्हारी दासी ॥
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फांसी ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भैरवी

'मीरा' रंग लागो राम हरी, औरन रंग अटक परी ।
चूड़ो म्हारे तिलक अरु माला, सील बरत सिणगारो ।
और सिंगार म्हारे दाय न आवे, यो गुरु ज्ञान हमारो ॥
कोइ निन्दो कोइ वन्दो म्हे तो, गुण गोविन्द का गास्यां ।
जिण मारग म्हाँरा साध पधारै, उण मारग म्हे जास्यां ॥
चोरी न करस्यां जिव न सतास्यां, काई करसी म्हारो कोई ।
गजसूं उतर कर खर नहिं चढ़स्यां, या तो बात न होई ॥

काफी चाचर

राम नाम रस पीजै, मनुआँ राम-नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि-चरचा सुन लीजै ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को, बहा चित्त से दीजै ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, ताहि रंग में भीजै ॥

भैरवी

रमइया बिन यों जिवड़ो दुख पावै ।
कहौ कुण धीर बंधावै ॥
यो संसार कुबध के भाँडो ।
साधु संगत नहिं भावै ॥
राम नाम की निन्दा ठाणै ।
करम - ही - करम कुमावै ॥
राम नाम बिन मुकति न पावै ।
फिर चौरासी जावै ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साधु संगत में कबहूँ न जावै ।
मूरख जनम गँवावै ॥
'मीरा' प्रभु गिरधर के सरणें ।
जीव परम पद पावै ॥

कौशिया

करम गति टारे नाहिं टरै ।
सतवादी हरिचन्द्र से राजा, नीच घर नीर भरै ।
पांच पांडु अरु कुन्ती द्रौपदी, हाड़ हिमालय गरै ॥
जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरै ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, विष से अमृत करै ॥

देश–तीन ताल

नहिं ऐसो जनम बारम्बार ।
का जानूं कुछ पुण्य प्रकटे, मानुसाँ अवतार ।
बढ़त छिन-छिन घटत पल-पल, जात लागे न बार ॥
विरछ के ज्यूं पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार ।
भौसागर अति जोर कहिये, अनन्त ऊँडी धार ॥
राम नाम का बंधा बेड़ा, उतर परले पार ।
ज्ञान चोरस मँडा चोहटे, सुरत पासा सार ॥
साधु सन्त महन्त ज्ञानी, करन चलत पुकार ।
दासि 'मीरा' लाल गिरधर, जीवणा दिन चार ॥

सिन्ध भैरवी

सुरत दीनानाथ से लागी,
तू तो समझ सुहागण सुरता नार ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

लगनी लहँगो पहर सुहागण,
बीती जाय बहार ॥
धन जोबन है पावणा री,
मिलै न दूजी बार ।
राम-नाम को चुड़लो पहिरो,
प्रेम को सरमो सार ॥
नकबेसर हरि नाम की री,
उतर चलो ली परले पार ।
ऐसे वर को क्या वरूँ,
जो जनमे औ मर जाय ।
वर बरिये एक सांवरो री,
चुड़लो अमर हो जाय ॥

मांड

पायोजी म्हे तो राम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ॥
जनम-जनम की पूंजी पाई,
जग में सभी खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लागे,
दिन-दिन बढ़त सवायो ॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तरि आयो ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर,
हरख हरख जस गायो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पीलू

घुंघुरू बांध मीरा नाची रे पग घुंघुरू ।
लोग कहैं मीरा हो गई बावरी, सास कहे कुलनासी रे ।
जहर का प्याला राणाजी ने भेजा, पीवत मीरा हांसी रे ॥
मैं तो अपने नारायण की, हो गई आपहि दासी रे ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, वेगि मिलो अविनासी रे ॥

भैरवी

राणाजी अब न रहूंगी तोरी हटकी ।
साध संग मोहि प्यारा लागे, लाज गई घूंघट की ॥
पीहर मेड़ता छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुर मुकर दिखाया घटका, नाचूंगी दे दे चुटकी ॥
हार सिंगार सभी लो अपना, चूड़ी कर की पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घट की ॥
महल किला राणा मोहिं न चाहिये, सारी रेसम पटकी ।
हुई दीवानी "मीरा" डोले, केस लटा सब छिटकी ॥

भैरवी

मेरो मन रामहिं राम रटै रे ।
राम-नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।
जनम-जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे ॥
कनक-कटोरे इम्रित भरियो, पीवत कौन नटै रे ।
'मीरा' कहै प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे ॥

देश दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो, सकल लोक जोई ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भाई छोड़्या, बंधु छोड़्या, छोड़्या सगा सोई ।
साधुन संग बैठि बैठि, लोक लाज खोई ॥
भगत देखि राजी भई, जगत देखि रोई ।
अँसुवन जल सींचि सींचि, प्रेम-बेलि बोई ॥
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डार दई छोई ।
राणा विष को प्याला भेजो, पीय मगनु होई ॥
अब तो बात फैल पड़ी, जानै सब कोई ।
'मीरा' प्रभु लगन लागी, होनी हो सो होई ॥

मांड

म्हाने चाकर राखो जी ।
गिरधारीलला चाकर राखो जी ॥ टेक ॥
चाकर रहसूं, बाग लगासूं, नित उठ दरशन पासूं ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द लीला गासूं ॥
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव-भगति जागीरी पाऊं, तीनों बात्यां सरसी ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्ती माला ।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊं, बिच बिच राखूं बारी ।
सांवरिया के दरसन पासूं, पहरि कुसुम्भी सारी ॥
जोगी आया जोग करनकूं, तप करने सन्यासी ।
हरी-भजन कूं साधू आये, वृन्दावन के वासी ॥
'मीरा' के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हा, प्रेम नदी के तीरा ॥

मलार

बदरा रे तू जल भरि ले आयो ।
छोटी छोटी बूंदन बरसन लागी, कोयल सबद सुनायो ।

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गाजै बाजै पवन मधुरिया, अंबर बदरा छायो ॥
सेज संवारी पिय घर आये, हिल मिल मंगल गायो ।
'मीरा' के प्रभु हरि अविनासी, भाग भलो जिन पायो ॥

राग बागेश्री

भज ले रे मन गोपाल गुना ।
अधम तरे अधिकार भजन सूं, जोइ आये हरि सरना ।
अविश्वास तो साखि बनाऊँ, अजामील गणिका सदना ॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना ।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमरो एक छिना ॥
बालापन सब खेल गँवायो, तरुण भयो जब रूप घना ।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो भगना ॥
गज अरु गीधहु तरे भजन सूं, कोउ तर्‌यो नहीं भजन बिना ।
धना भगत पीपामुनि सिवरी, 'मीरा' को हू करो गणना ॥

राग आसावरी

दरसन बिन दूखन लागे नैन ॥ टेक ॥
जब से तुम बिछुरे प्रभुजी कबहुं न पायो चैन ॥
शब्द सुनत मेरी छतियां कम्पै, मीठे लागे बैन ।
एक-टकटकी पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन ॥
बिरह-विथा कासूं कहूं सजनी, बह गई करवत नैन ।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे, दुखमेटन सुखदैन ॥

भजन

जग में जीवण थोड़ा, राम कुण करे रे जंजार ॥ टेक ॥
माता पिता जी जन्म दियो है, करम दियो करतार ।
कइ रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइ रे कियो उपकार ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरो भव पार ॥

भजन

सखीरी मैं तो गिरधर के रंग राती ॥ टेक ॥
पचरंग मेरा चोला रंगा दे, मैं झुरमुट खेलण जाती ।
झुरमुट में मेरो साईं मिलेगो, खोल अडम्बर गाती ॥
चन्दा जायगा, सूरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।
पवन पाणि दोनों ही जायंगे, अटल रहे अविनाशी ॥
सुरत निरत का दिवला संजोले, मनसा की कर बाती ।
प्रेम हरी का तेल बना ले, जगा करे दिन राती ॥
जिनके पिय परदेश बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती ।
मेरे पिय मो मांहि बसत हैं, कहूँ न आती जाती ॥
पीहर बसूं न बसूं सास घर, सतगुरु-शब्द संगाती ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, 'मीरा' हरि-रंग राती ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सन्त दादूदयाल जी के भजन

मांड

बटाऊ रे चलना आज कि काल।
समझ न देखै कहा सुख सोवै, रे मन राम संभाल ॥
जैसे तरवर विरख वसेरा, पंखी बैठे जाय।
ऐसेहिं यह सब हाट पसारा, आप आप कूं जाय ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सनेही, जिनि खोवै मन मूल।
यह संसार देखि मति भूले, सबही सेमल फूल ॥
तन नहिं तेरा, धन नहिं तेरा, कहा रह्यो इहिं लागि।
'दादू' हरि बिन क्यूं सुख सोवे, काहे न देखै जागि ॥

बागेश्री

अजहूँ न निकसै प्राण कठोर।
दरसन बिना बहुत बिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर ॥
चारि पहर चारों जुग बीते, रैन गंवाई भोर।
अवधि गई अजहुँ नहिं आये, कतहूं रहे चित चोर ॥
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत चोर।
'दादू' ऐसे आतुर विरहिण, जैसे चन्द चकोर ॥

दोहे

घीव दूध में रमि रहा, व्यापक सब ही ठौर।
दादू बकता बहुत हैं, मथि काढ़ै ते और ॥
सुख का साथी जगत सब, दुख का नाहीं कोय।
दुख का साथी साइयां, दादू सत्गुरु होय ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

दादू देख दयाल कौ, सकल रहा भरपूर ।
रोम रोम में रमि रहा, तू जिन जानौ दूर ॥
काया कठिन कमान है, खींचे विरला कोय ।
मारे पांचों मिरगला, 'दादू' सूरा सोय ॥

कालिंगड़ा

जागिरे सब रैण बिहाणी,
जाइ जनम अंजुली को पाणी ।
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै,
जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ।
सूरज-चन्द कहै समझाइ,
दिन दिन आयू घटती जाइ ।
सरवर-पाणी तरवर छाया,
निस-दिन काल गरासै काया ।
हंस बटाऊ प्राण पयाना,
'दादू' आतम राम न जाना ।

भैरवी

अहो नर नीका है हरि नाम ।
दूजा नहीं नांउ बिन नीका, कहिले केवल नाम ॥
निरमल सदा एक अविनासी, अजर अकल रस ऐसा ।
दृढ़ गहि राख मूल मन माहीं, निरख देखि निज कैसा ॥
यह रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै ।
राता रहै प्रेम सूं माता, ऐसै जुगि जुगि जीवै ॥
दूजा नहीं और कोई ऐसा, गुर अंजनि करि सूझै ।
'दादू' मोटे भाग हमारे, दास बने की बूझै ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भैरवी

पण्डित राम मिलै सो कीजै ।
पढ़ि पढ़ि वेद पुराण बखाने, सोई तत कह दीजै ॥
आतम रोगी विषम वियाधी, सोइ करि औषध सारा ।
परसत प्राणी होय परम सुख, छूटै सब संसारा ॥
ये गुन इन्द्रिय अगिनि अपारा, तासन जलै सरीरा ।
तन मन सीतल होइ सदा सुख, सो जल नावौ नीरा ॥
सोई मारग हमहिं बताओ, जेहि पथ पहुंचै पारा ।
भूल न परै उलट नहिं आवै, सो कछु करहु विचारा ॥
गुरु उपदेश देहु कर दीपक, तिमिर मिटै सब सूझे ।
'दादू' सोई पण्डित ज्ञाता, राम मिलन की बूझे ॥

आसा

मन मूरख तै यों ही जनम गँवायौ ।
साईं केरी सेवा न कीन्हीं, इहि कलि काहे कूं आयौ ॥
जिन बातन तेरो छूटिक नाहीं, सोइ तन तेरो भायो ।
कामी ह्वै विषया संग लाग्यो, रोम रोम लपटायौ ॥
कछु एक चेति विचारी देखौ, कहा पाप जिय लायौ ।
'दादू' दास भजन करि लीजै, सुपने जग डहकायौ ॥

आसावरी

तुहीं मेरे रसना तुहीं मेरे वैनां,
तुहीं मेरे श्रवणा तुहीं मेरे नैना ।
तुहीं मेरे आतम कँवल मझारी,
तुहीं मेरे मनसा तुहीं परिवारी ॥
तुहीं मेरे मन हो तुहीं मेरे सांसा,
तुहीं मेरे सुरतै प्राण निवासा ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

तुहीं मेरे नख सिख सकल सरीरा,
तुहीं मेरे जियरे ज्यूं जल नीरा ॥
तुहीं बिन मेरे और कोई नाहीं,
तुहीं मेरा जीवन 'दादू' माहीं ॥

भैरवी

भाई रे ऐसा पन्थ हमारा ।
वाद विवाद काहू सों नाहीं, रहूँ जगत ते न्यारा ॥
सम दृष्टि सूं भाई सहज में, आपहिं आप विचारा ।
मैं, तैं, मेरो, यहु मन नाहीं, निर्वैरी निर्विकारा ॥
पूरण सबै देखि आया पर, निरालम्ब निरधारा ।
काहू के संग मोह न ममता, संगी सरजनहारा ॥
काम कल्पना कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा ।
यहि पथ पहुंचि पार गहि 'दादू' सो तत सहजि संभारा ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मलूकदासजी की बानी

भैरवी

ना वह रीझे जप तप कीन्हें ना आतम को जारे ।
ना वह रीझे धोती टांगे ना काया के पखारे ॥
दया करै धरम मन राखै घर में रहै उदासी ।
अपना सा दुख सब का जानै ताहि मिलै अविनासी ॥
सहै कुसबद बाद हूं त्यागै छांड़ै गरब गुमाना ।
यही रीझ मेरे निरंकार की कहत 'मलूक' दिवाना ॥

खमाच

दीनबन्धु दीनानाथ मेरी तन हारिये ॥ टेक ॥
भाई नाहिं बन्धु नाहिं कुटुम परिवार नाहिं ।
ऐसा कोई मित्र नाहिं जाकें ढिग जाइये ॥
सोने की सलैया नाहिं रूपे का रुपैया नाहिं ।
कौड़ी पैसा गांठ नाहिं जासों कछु खाइये ॥
खेती नाहिं बारी नाहिं बनिज व्योपार नाहिं ।
ऐसा कोई साहु नाहिं जासों कछु पाइये ॥
कहत 'मलूकदास' छांड़ि दे पराई आस ।
राम धनी पाइके अब काकी सरन धाइये ॥

भैरवी दादरा

राम कहो राम कहो राम कहो बावरे ।
अवसर नहिं चूक भोंदू पायो भलो दाँव रे ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

जिन तोकों तन दीनों ताको नहि भजन कीन्हो ।
जनम सिरानो जात लोहे कैसो ताव रे ॥
रामजी को गाय गाय राम को रिझाव रे ।
राम जी के चरण कमल चित्त माहि लाव रे ॥
कहत 'मलूकदास' छोड़ दे तै झूठी आस ।
आनन्द मगन होइके हरि गुन गाव रे ॥

दोहा

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै तहाँ तहाँ फिरै गाय ।
कहै 'मलूक' जहँ सन्त जन, वहाँ रमैया जाय ॥
अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम ।
दास 'मलूका' यों कहै, सबके दाता राम ॥
'मलूका' सोई वीर है, जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर वे पीर ॥
दया धर्म हिरदे बसै, बोले अमृत वैन ।
तेई ऊंचे जानिये, जिनके नीचे नैन ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सुन्दरदासजी के पद

सोहनी

आदि तुम ही हुते अवर नहीं कोई जी ।
अकह अति अगह अति वर्ण नहिं होई जी ।।
रूप नहीं रेख नहीं स्वेत नहीं श्याम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ।।१।।

प्रथम ही आपु तें मूल माया करी ।
बहुरी वह कुवि करि त्रिन ह्वै बिस्तरी ।।
पंच हूं तत्व तें रूप अरु नाम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ।।२।।

विधि रजोगुण लिये जगत उतपति करै ।
विष्णु सतगुण लिये पालना उर धरै ।।
रुद्र तम गुण लिये संहारे धाम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ।।३।।

इन्द्र आज्ञा लिये करत नहिं और जी ।
मेघ वर्षा करें सर्व ही ठौर जी ।।
सूर शशि फिरत है आठ हूं याम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ।।४।।

देव अरु दानवा यक्ष ऋषि सर्व जी ।
साधु अरु सिद्ध मुनि होंहि निहगर्व जी ।।
शेष हूं सहस्र मुख भजत निःकाम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ।।५।।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

जलचरा थलचरा नभचरा जन्त जी ।
चारि हू खानि के जीव अगिनन्त जी ॥
सर्व उपजैं खपैं पुरुष अरु वाम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ॥६॥

भ्रमत संसार कतहूं नहीं ओर जी ।
तीन हूं लोक में काल को सोर जी ॥
मनुष तन यह बड़े भाग तै पाव जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ॥७॥

पूरी दश हूं दिशा सर्व में आप जी ।
स्तुतिहि को करि सकै पुन्य नहिं पाप जी ॥
दास 'सुन्दर' कहै देहु विश्राम जी ।
तुम सदा एक रस राम जी राम जी ॥८॥

भैरव

आदि तूँ अन्त तूँ मध्य तूँ व्योमवत् ।
वायु तूँ तेज तूँ नीर तूँ भूमिवत् ॥
पंचहूं तत्व तूँ देह तैं ही करे, हे हरे हे हरे हे हरे हे हरे ।

चारि हु खानि के जीव तैं ही सृजे ।
जोनि ही जोनि के द्वार आये बृजे ॥
ते सबै दुःख में तुम्हें बीसरे, ईश्वरे ईश्वरे ईश्वरे ईश्वरे ।

जे कछु उपजे व्याधि हु आधवे ।
दूर तू ही करै सर्व बाधवे ॥
वैद तूँ औषधि सिद्ध तूँ साधवे, माधवे माधवे माधवे माधवे ।

ब्रह्म तूँ विष्णु तूँ रुद्र तूँ वेष जी ।
इन्द्र तूँ चन्द्र तूँ सूर तूँ शेष जी ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धर्म तूँ कर्म तूँ कमल तूँ देशवे, केशवे केशवे केशवे केशवे ।
देव में दैत्य में ऋष्य में यक्ष में ।
कीर में काग में हंस में मोर में ॥
सिंह में स्याल में मच्छ में कच्छ में, अक्षये अक्षये अक्षये अक्षये ।
बुद्धि में चित्त में पिंड में प्राण में ।
श्रोत्र में बैन में नैन में घ्राण में ॥
हाथ में पांव में सीस में सोहने, मोहने मोहने मोहने मोहने ।
जन्म तैं मृत्यु तैं पुन्य तैं पाप तैं ।
हर्ष तैं शोक तैं शीत तैं ताप तैं ॥
राग तैं दोष तैं द्वन्द तैं है परे, सुन्दरे सुन्दरे सुन्दरे सुन्दरे ।

खमाच

आरती परब्रह्म की कीजै ।
और ठौर मेरौ मन न पतीजै ॥
गगन मण्डल में आरति साजी ।
शब्द अनाहद झालरि बाजी ॥
दीपक ज्ञान भया परकासा ।
सेवक ठाढ़ै स्वामी पासा ॥
अति उछाह अति मंगल चारा ।
अति सुख बिलसै बारम्बारा ॥
सुन्दर आरति सुन्दर देवा ।
'सुन्दर' करै तहाँ सेवा ॥

आसावरी

कोई पीवत राम रस प्यासा रे ।
गगन मंडल में अमृत बरसै, उनमनि कै घर बासा रे ॥
सीस उतारि धरै धरती पर, करैं न तनकी आसा रे ।
ऐसा महँगा अमी बिकावै, छह रितु बारह मासा रे ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

मौल करै सो छकै दूर तैं, तौलत छूटै वासा रे ।
जो पीवै सो जुग जुग जीवै, कबहुँ न होय विनासा रे ॥
या रस काजि भए नृप जोगी, छाड़ें भोग विलासा रे ।
सेज सिंघासन बैठे रहते, भस्म लगाई उदासा रे ॥
गोरखनाथ भरथरी रसिया, सोइ कवीर अभ्यासा रे ।
गुरु दादू परसाद कछू इक, पायो 'सुन्दरदासा' रे ॥

कालिंगड़ा

सोइ सोइ सब रैंन बिहानी, रतन जन्म की खबरि न जानी ।
पहिले पहर मरम नहिं पावा, तात पिता सों मोह बँधावा ॥
खेलत खात हँसा कहुँ रोया, बालापन ऐसे ही खोया ।
दूजै पहर भया मतवाला, परधन परतिय देखि पुसाला ॥
काम अंध कामिनी सँग जाई, ऐसे हि जोबन गयौ सिराई ।
तीजै पहरि गया सरनापा, पुत्र कलत्र का भया संतापा ॥
मरै पीछ पुनि कैसा होई, घर घर फिरिहैं लरिका जोई ।
चौथे पहरि जरा तन व्यापी, हरि न भज्यो यहि मूरख पापी ॥
कहि समुझावै 'सुन्दरदासा', रामविमुख मरि गया निरासा ॥

खमाच-चाचर

नटवर रच्यो नटवै एक ।
बहु प्रकार बनाई बाजी किये रूप अनेक ॥ टेक ॥
चारि खानी जीव तिनकी और और जाति ।
एक एक समान नाहीं करी ऐसी भांति ॥१॥
देव भूत पिशाच राक्षस मनुष पशु अरु पंखि ।
अगिन जलचर कीट कृमि कुल गने कौन असंखि ॥२॥
भिन्न भिन्न सुभाव कीये भिन्न भिन्न अहार ।
भिन्न भिन्न हि युक्ति राखी भिन्न भिन्न बिहार ॥३॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भिन्न बानी सकल जानी एक एक न मेल ।
कहत 'सुन्दर' माहिं बैठा करै ऐसा खेल ॥४॥

मेघ मलार

देखौ भाई आज भलौ दिन लागत ।
वरिषा रितुकौ आगम आयौ, बैठि मलारहि रागत ॥ टेक ॥
राम नाम के बादल उनए घोरि घोरि रस पागत ।
तन मन माँहि भई शीतलता गये विकार जु दागत ॥
जा कारनि हम फिरत वियोगी निशि दिन उठि उठि जागत ।
'सुन्दरदास' दयाल भये प्रभु सोइ दियो जोइ मांगत ॥

सवैया

एक न दोइ ? न एक न दोइ,
उहीं कि इहीं ? न उहीं न इहीं है ।
शून्य कि थूल ? न शून्य न थूल,
जहीं कि तहीं ? न जहीं न तहीं है ॥
मूल की डाल ? न मूल न डाल,
वही की मही ? न मही न वही है ।
जीव कि ब्रह्म ? न जीव न ब्रह्म,
तू है कि नहीं कछु ? है न नहीं है ॥

घनाक्षरी

नहिं जानि सकै अल्पज्ञान इन्द्रन को,
प्रान हूं न जानि सकै स्वास आवै जाइ है ।
मन हूँ न जान सकै संकल्प विकल्प होय,
बुद्धि हूं न जानि सकै सुन्यो सु बताइ है ॥
चित्त अहंकार पुनि एक नाहिं जानि सकै,
शब्द हु न जानि सकै अनुमान पाइ है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

'सुन्दर' कहत ताहि कोऊ नाहिं जानि सकै,
दीवा करि देखिये सु ऐसी नहि लाइ है ॥

सवैया

एक कहूँ तो अनेक सो दीसत,
एक अनेक नहीं कछु ऐसो ।
आदि कहूँ तिहिं अन्तहिं आवत,
आदि न अन्त न मध्य सु कैसो ॥
गोप्य कहूँ तो अगोप्य कहा यह,
गोप्य अगोप्य न ऊभो न वैसो ।
जोई कहूँ सोइ है नहिं 'सुन्दर'
है तो सही पर जैसे को तैसो ॥

मनहर छन्द

तोहि में जगत यह, तूही है जगत माहिं ।
तो मैं अरु जगत में, भिन्नता कहाँ रही ॥
भूमि ही ते भोजन, अनेक विधि नाम रूप ।
भोजन विचारि देखे, उहै एक ही मही ॥
जलते तरंग फेन, बुदबुदा अनेक भांति ।
सोउ तौ विचारे एक, बहै जल है सही ॥
जेते महापुरुष हैं, सबको सिद्धान्त एक ।
'सुन्दर' अखिल ब्रह्म, अन्त वेद ये कही ॥१॥
जैसे ईख रस की मिठाई, भाँति भाँति भई ।
फेरी करि गारे, इक्षु रस ही लहतु है ॥
जैसे घृत थीजके, डोरा सो बांधि जात पुनि ।
फेर पिघलेते वह, घृत ही रहतु है ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जैसे पानी जमिके, पाषाण हूं सों देखियत ।
सो पाषाण फेरि पानी, होय के वहतु है ॥
तैसेही 'सुन्दर' यह जगत है ब्रह्ममय ।
ब्रह्म सो जगतमय, वेद यूं कहतु है ॥२॥

जैसे काठ कोरि तामें, पूतरी बनाय राखी ।
जो बिचार देखिये तौ, उहै एक दार है ॥
जैसे माला सूतहू की, मणिकाहू सूत ही के ।
भीतरहू पीयो पुनि, सूत ही को तार है ॥
जैसे एक समुद्र के, जल ही को लौण भयो ।
सोउ तौ बिचारे पुनि, उहै जल खार है ॥
तैसे ही 'सुन्दर' यह, जगत सो ब्रह्ममय ।
ब्रह्म सो जगतमय, याही निरधार है ॥३॥

जैसे एक लोह को, हथ्यार नानाबिध किये ।
आदि–मध्य-अन्त एक, लोह ही मानिये ॥
जैसे एक कंचन में, भूषण अनेक भये ।
आदि-मध्य-अन्त एक, कंचन ही जानिये ॥
जैसे एक सेन के, सँवारे नर हाथी हय ।
आदि–अन्त–मध्य एक, सेनही बखानिये ॥
तैसे ही 'सुन्दर' यह जगत सो ब्रह्ममय ।
ब्रह्म सो जगतमय, निश्चय करि मानिये ॥४॥

ब्रह्म में जगत यह, ऐसी विधि देखियत ।
जैसी विधि देखियत, फूलरी महीर में ॥
जैसी विधि गिलिम, दुलीचे में अनेक भांति ।
जैसी विधि देखियत, चूनरीहु चीर में ॥
जैसे विधि कांगुरेहु, कोट पर देखियत ।
जैसी विधि देखियत, बुदबूदा नीर में ॥
'सुन्दर' कहत लीक, हाथ परी देखियत ।
जैसी विधि देखियत, शीतला शरीर में ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection..Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

ब्रह्म अरु माया जैसे, शिव अरु शक्ति पुनि ।
पुरुष प्रकृति दोउ, कहिके सुनाये हैं ॥
पति अरु पतनी, ईश्वर अरु ईश्वरीहु ।
नारायण लक्ष्मी द्वै, वचन कहाये हैं ॥
जैसे कोई अर्धनारी, नटेश्वरी रूप धरै ।
एक बीजहु ते दोऊ, दाली नाम पाये हैं ॥
तैसे ही 'सुन्दर' वस्तु, ज्यूं है ज्यूं ही एकरस ।
उभय प्रकार होई, आप ही दिखाये हैं ॥६॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भूषण शिवाबावनी

वेद राखे, विदित पुरान राखे सारयुत,
राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिन्दुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहिन की,
कांधे में जनेऊ राख्यो, माला राखी गर में॥
मोड़ि राखे मुगल, मरोरि राखे पातसाह,
बैरी पीसि राखे, बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद राखी तेजवल सिवराज,
देव राखे देवल, स्वधर्म राख्यो घर में॥१॥

राखी हिन्दुवानी, हिन्दुवान को तिलक राख्यो,
अस्मृत-पुरान राखे वेद-विधि सुनी मैं।
राखी राजपूती, राजधानी राखी राजन की,
धरा में धरम राख्यो, राख्यो गुन गुनी में॥
'भूषन' सुकवि जीति हद्द मरहट्टन की,
देश देश कीरति बखानी तव सुनी मैं।
साहि के सपूत सिवराज, समसेर तेरी,
दिल्ली-दल दाबिकै दिवाल राखी दुनी में॥२॥

उतरि पलँग ते न दियो है धरा पै पग,
तेऊ सगबग निशि दिन चली जाती हैं।
अति अकुलातीं, मुरझाती, न छिपाती गात,
बात न सोहाती, बोले अति अनखाती हैं॥
'भूषन' भनत सिंह साहिके सपूत सिवा,
तेरी धाक सुने अरि-नारि बिललाती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

कोऊ करें घाती, कोऊ रोती पीटी छाती घरैं,
तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं ॥३॥

सक्र जिमि सैल पर, अर्क तम फैल पर,
विधन की रैल पर, लम्बोदर लेखिये।
राम दसकन्ध पर, भीम जरासन्ध पर,
'भूषन' ज्यों सिन्धु पर, कुम्भज विसेखिये॥
हर ज्यों अनंग पर, गरुड़ भुजंग पर,
कौरव के अंग पर पारथ ज्यों पेखिये।
वाज ज्यों विहंग पर, सिंह ज्यों मतंग पर,
म्लेच्छ-चतुरंग पर सिवराज पेखिये॥४॥

वद्दल न होहिं दल दच्छिन उमंडि आयो,
घटा ये न होहिं इभ शिवाजी हंकारी के।
दामिनी दमंक नाहिं खुले खग्ग वीरन के,
इन्द्र धनु नाहिं ये निसान हैं सवारी के॥
देखि देखि मुगलों की हरमें भवन त्यागैं,
उझकि उझकि उठैं बहत बयारी के।
दिल्लीपति भूल मति गाजत न घोर घन,
बाजत नगारे ये सितारे गढ़धारी के॥५॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी

(वि० सम्वत् १७२३ से सम्वत् १७६५ तक)

गुरु गोविन्दसिंहजी गुरु तेग बहादुर के पुत्र थे। दिल्ली में गुरु तेग बहादुर के बलिदान के पश्चात् गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्ख आन्दोलन को सामरिक रूप दिया।

आपने कहा :–

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊं।
तब नाम गोबिन्द पाऊं॥

अर्थात् जब मैं चिड़ियों से बाजों को मरवाऊंगा तब ही गोविन्द सिंह नाम पाऊंगा। ऐसा ही उन्होंने किया भी। पंजाब में उन्होंने सिख शक्ति को इतना प्रबल बना दिया कि जिसकी टक्कर से मुगल-साम्राज्य का ढांचा डगमगा गया। उन्होंने हिन्दुओं से कायरता दूर करके उनमें क्षात्र-धर्म उत्पन्न किया। श्री गुरु गोविन्दसिंह पुराणों के ज्ञाता थे। मुगलों के अत्याचारों से हिन्दू-धर्म की रक्षा करने का आपने आजीवन प्रयत्न किया, जो इनकी वाणी से प्रत्यक्ष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

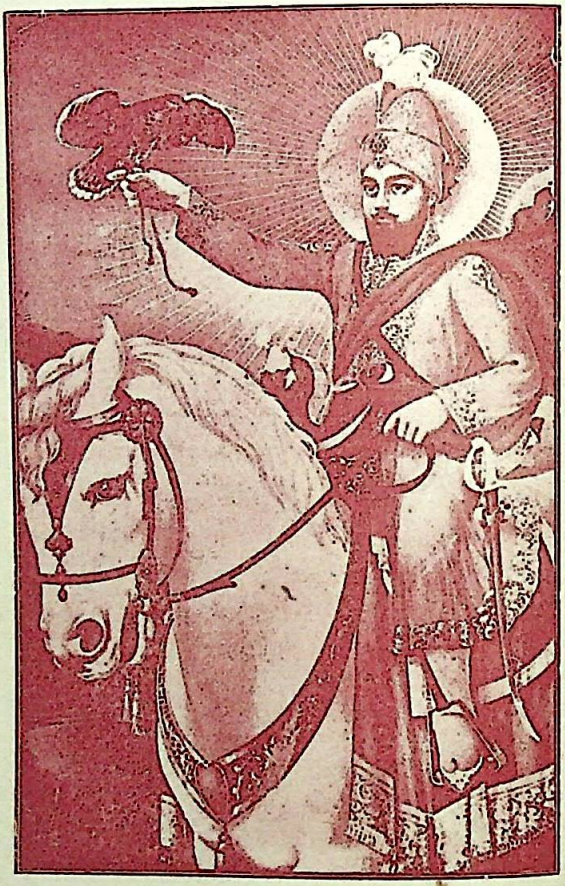

श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी

सकल हिन्द सिउ तुरक दुष्टां विदारहु ।
धरम की ध्वजा कउ जगत में झुलारहु ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गुरु गोबिन्दसिंह की वाणी

भगवती—स्तुति (छक्के देवी से)

राग आसा झपताल

नमो उग्रदन्ती अनन्ती सवैया ।
नमो योग योगेश्वरी योग मैया ॥
नमो केहरी-वाहिनी शत्रु-हन्ती ।
नमो शारदा ब्रह्म-विद्या पढ़न्ती ॥
नमो जोति ज्वाला तुमै वेद गावें ।
सुरासुर ऋषीश्वर नहीं भेद पावें ॥
तुही योगयुक्ता तुही खड्ग धारे ।
तुही जै करन्ती असुर गहि पछारे ॥
तुही जल थले पर्वते गिरि निवासी ।
तुही सब घटन में निरालम प्रकासी ॥
तुही दुष्ट दाहिन तुही सर्व पाली ।
तुही वृक्ष पुहपा तुही आप माली ॥
तुही विश्वभरणी तुही जग प्रकाशी ।
तुही अलग वरनी तुही भू अकाशी ॥
नमो ज्वालपा देवि दुर्गे भवानी ।
तुही लोक नव-खण्ड में हौ प्रधानी ॥
अटल छत्रधरणी तुही आदि देवं ।
सकल मुनजना तोहि निशिदिन स्मरेवं ॥
तुही काल आकालकी जोति छाजे ।
सदा जै सदा जै सदा जै विराजे ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

यही दास मांगै कृपासिंधु कीजै ।
स्वयं ब्रह्म की भक्ति सर्वत्र दीजै ॥

तुही जागती-जोति ज्वाला सरूपी ।
तुही जग-सकल माहि रमती अनूपी ॥
करहु हुक्म अपना सबै दुष्ट घाऊँ ।
तुरक हिन्द का सकल झगरा मिटाऊँ ॥

अगम सूर बीरा उठहिं सिंह योधा ।
पकड़ तुरकगन कउ करैं वै निरोधा ॥
सकल जगत माहि खालसा पंथ गाजै ।
जगै धर्म हिन्दुन सकल दुन्द भाजै ॥

जपउं जाप एकै हरे हरि अकालं ।
तवै ह्वै दुनी सब छिनक में निहालं ॥
नमो वेद-विद्या नमो यज्ञ-रूपा ।
नमो अंजनी पूर्ण भूपाल भूपा ॥

तुही जगत-जननी अनन्ती अकालं ।
तुही अन्न दैनी सबन को सँभालं ।
तुही ब्रह्मणी वेद-पाठण सवित्री ।
तुही धर्मिणी करणकारण पवित्री ॥

तुही सर्व जग कउ उपावें छपावें ।
तुही बहुरि आपे छिनके सों खपावें ॥
यही दान माँगउ करहु जै हमारी ।
सबै दुष्ट दैतां खपै छिन मझारी ॥

तुही अलख दुर्गा जगत् करन हारी ।
सकल छोड़कर ओट पकड़ी तिहारी ॥
तुही कृष्ण होई कंस केशी खपायो ।
तुही मल्ल चंडूर गहि कर उड़ायो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जुगो जुगो सकल खेल तुमही रचायो ।
तेरे खेल का भेद किन हूँ न पायो ॥
तुही अष्ट दुर्गे भवानी अकालं ।
तुही सकल ब्रह्माण्ड ऊपर दिआलं ॥

तुही तीर तरवार काती कटारी ।
तुही शंख पद्मण गदा चक्रधारी ॥
तुही अलख करतारनी शिव सरूपा ।
तुही सब घटे देव दुर्गे अनूपा ॥

निरंजन सरूपा तुही आदि राणी ।
तुही योग-विद्या तुही ब्रह्म-वाणी ॥
तुही अम्बिके शक्ति कुदरति भवानी ।
तेरी कुदरती जोत घट-घट समानी ॥

तुही हरि निरंकार ठाकुर जपंती ।
तुही राक्षसन कउ पकड़ कर दहन्ती ॥
हमन बैरिअन कउ पकड़ घात कीजै ।
तबै दास गोविन्द का मन पतीजै ॥

तुही आस पूरन जगत-गुर भवानी ।
छतर-हीन मुगलन करहु बेग फानी ॥
सकल हिन्द सिउँ तुरक दुष्टां विदारहु ।
धरम की ध्वजा कउ जगत में झुलारहु ॥

जो उपजै मरे ताहि सिमरन न कीजै ।
अटल पुरुष आकाल का नाम लीजै ॥
अपुन जानकर मोहि लीजै बचाई ।
असुर पापीगन मार देवउ उड़ाई ॥

सकल जगत कंउ सुख बसावहु अनन्दा ।
तुही तुरक मेटन श्री हरि मुकुन्दा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

यही देहि आज्ञा तुरक गहि खपाऊँ ।
गउ-घातका दोख जग सिउं मिटाउँ ॥
छतर तखत मुगलन करहुँ मार दूरे ।
घुरहिं सब जगत महि फतह धर्म तूरे ॥

तेरी दर खड़ा दास करता पुकारा ।
तुरकन मेट कीजे जगत महिं उजारा ॥
तभी गीत मंगल फतहिके सुनाऊँ ।
तुमन कउ सिमर दुःख सगले मिटाऊँ ॥

यही आस पूरण करहु तुम हमारी ।
मिटै कष्ट गउअन छुटै खेद भारी ॥
फतह सतगुरू की सबन सिउँ बुलाउं ।
सबन कउ शबद वाहि वाहे दृढ़ाऊँ ॥

करों खालसा पन्थ तीसर प्रवेशा ।
जगहिं सिंह योधा धरहिं नील वेषा ॥
सकल राछसन कउ पकड़ वै खपावें ।
सबी जगत सिर धुनि फतहिकी बुलावें ॥

नमो ज्वालपा देवि दुर्गे भवानी ।
तुही लोक नव खण्ड में हो प्रधानी ॥
तुही शारदा वेद गायण सुरसती ।
तुही देवि दुर्गे निरंजन परसती ॥

यही बीनती खास हमरी सुनीजै ।
असुर मारकर रच्छ गउअन करीजै ॥
यही देहि वर मोहि सतगुरु धियाऊँ ।
असुर जीत कर धर्म नउबत बजाऊँ ॥

मिटै सब जगत सिउ तुरुक दुंद शोरा ।
बचहिं सन्त सेवक खपहिं दुष्ट चोरा ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सबै सृष्टि परजा सुखी हुई विराजे ।
मिटै दुःख सन्ताप आनन्द गाजे ॥
न छाडउँ कहूँ दुष्ट असुरन निशानी ।
चले सब जगत महिं धरम की कहानी ॥

(सिक्ख साम्प्रदायिक ग्रन्थ जपुजी साहेब से)

करुणालय हैं, अरि घायल हैं ।
खल खन्डन हैं, महि मण्डन हैं ॥
जगतेश्वर हैं, परमेश्वर हैं ।
कलि कारन हैं, सर्व उबारन हैं ॥
धृत धारन हैं, जग कारन हैं ।
मन मानिय है, जग जानिय हैं ॥
सरवं भर हैं, सरवं कर हैं ।
सर्व पासिय हैं, सर्व नासिय हैं ॥
करुणाकर हैं, विश्वम्भर हैं ।
सर्वेश्वर हैं, जगतेश्वर हैं ॥
अजपा जप हैं, अथपा थप हैं ।
अकृता कृति हैं, अमृता मृत हैं ॥
भव भंजन हैं, अरिगंजन हैं ।
रिपु तापन हैं, जप जापन हैं ॥

रामकली

रे मन ऐसो करि सन्यासा ।
बन से सदन सबै करि समझहु
मनही माहिं उदासा ॥
जोत की जटा जोग को मंजन
नेम के नखन बढ़ाओ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

ज्ञान गुरु आतम उपदेसहु
नाम विभूति लगाओ ॥
अल्प अहार स्वल्प सी निद्रा
दमा छिमा तन प्रीत ।
सील सन्तोष सदा निरवाहियो ।
होइबो त्रिगुणातीत ॥
काम, क्रोध, हंकार, लोभ, हठ,
मोह न मनसो ल्यावै ।
तव ही आत्म तत्व को दरसै,
परम पुरुष कँह पावै ॥

भैरवी

रे मन इहि विधि जोग कमाओ ।
सिड़ी सांच अकपट कंठला,
ध्यान विभूति चढ़ाओ ॥
तांती गहु आतम बसि करकी,
भिक्षा नाम अधारं ।
बाजे परम तार तत हरि को,
उपजे राग रसारं ॥
उघटै तान तरंग रंग अति,
ज्ञान गीत बंधानं ।
चकि चकि रहे देव, दानव, मुनि,
छकि छकि ब्योम विमानं ॥
आतम उपदेश भेष संजम को,
जाप सु अजपा जापे ।
सदा रहे कंचन सी काया,
काल न कबहू व्यापै ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सोरठ

प्रभु जू तोकँह लाज हमारी ।
नील कंठ नर हरि नारायण नील बसन बनवारी ॥
परम पुरुष परमेश्वर स्वामी पावन पौन अहारी ।
माधव महा जोति मधुमर्दन मान मुकन्द मुरारी ॥
निर्विकार निर्जर निद्रा-विनु निर्विष नरक निवारी ।
कृपासिन्धु काल त्रैदर्शी कुकृत प्रनाशन कारी ॥
धनुर्पान धृतमान धराधर निर्विकार असिधारी ।
हौ मति मन्द चरण शरणागत कर गहि लेहु उबारी ॥

रामकली

प्राणी परम पुरुष पग लागो ।
सोवत कहा मोह निद्रा में, कबहूँ सुचित ह्वै जागो ॥
औरन कँह उपदेशत है पशु, तोहि प्रबोध न लागो ।
सिंचत कहा परे विषयन कँह, कबहूँ विषयरस त्यागो ॥
केवल कर्म मर्म से चीन्हउ, धर्म कर्म अनुरागो ।
संग्रह करो सदा सिमरन को, परम पाप तजि भागो ॥
जाते दुःख पाप नहीं मेटैं, काल जाल ते तागो ।
जो सुख चाहो सदा सबन को, तो हरि के रस पागो ॥

दम्भ खण्डन

काह भयो दोउ लोचन मूंद कै,
बैठ रह्यो बक ध्यान लगायो ।
न्हात फिर्‌यो लिए सात समुद्रन,
लोक गयो परलोक गँवायो ॥

बास कियो बिषयान सों बैठ के,
ऐसे ही ऐसे सुबैस बितायो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

सांच कहों सुन लेहु सबै,
जिन प्रेम कियो तिन ही प्रभु पायो ॥१॥
माते मतंग अरे जर संग,
अनूप उतंग सुरंग सवारे ।
कोटि तुरंग कुरंग से कूदत,
पौन के गौन को जात निवारे ॥
भारी भुजान के भूप भली विधि,
नावत सीस न जात विचारे ।
एते भये तो कहा भये भूपति,
अन्त को नांगे ही पाँई पधारे ॥२॥
जीति फिरै सब देस दिसान को,
वाजत ढोल मृदंग नगारे ।
गूंजत गूड़ गजान के सुन्दर,
हंसत ही हय राज हजारे ॥
भूत भविष्य भवान के भूपति,
कौन गनै नहिं जात विचारे ।
श्री पति श्री भगवान भजे बिनु,
अन्त को अन्त के धाम सिधारे ॥३॥

भुजंगप्रयात छंद

सदा सच्चिदानन्द सर्व प्रणासी,
अनूपे अरूपे समस्तल निवासी ।
सदा सिद्धिदा बुद्धिदा वृद्धिकर्ता,
अधो उर्ध अर्धं अघं ओघ हर्ता ॥
परम पार परमेश्वर प्रोछ पालं,
सदा सर्वदा सिद्ध दाता दयालं ।
अछेदी अभेदी अनामं अकामं,
समस्तोपराजी समस्तस्त धामं ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आसा राग

नाम ठाम न जात जाकर रूप रंग न रेख ।
आदि पुरुष उदार मूरति अजन्मादि असेख ॥
देस और न भेष जाकर रूप रेख न राग ।
जत्र तत्र दिसा विसा होइ फैलियो अनुराग ॥
नाम काम विहीन पेखत धाम हूँ नहिं जाय ।
सर्व मान सर्वत्त मान सदैव मानत ताहि ॥
एक मूर्ति अनेक दर्शन कीत रूप अनेक ।
खेल खेल अखेल खेलत अन्त को फिरि एक ॥
तात मात न जात जाकर जनम मरन विहीन ।
चक्र वक्र फिरै चतुर चक मानही पुर तीन ॥
परम रूप पुनीत मूरति पूर्ण पुरुष अपार ।
सर्व विश्व रच्यो स्वयंभुव गढ़न मेटन हार ॥

बिलावल

सो किमि मानस रूप कहाये ।
सिद्ध समाधि साधि करि हारे क्यों हूँ देख न पाये ॥
नारद व्यास परासर ध्रुव से ध्यावत ध्यान लगाये ।
वेद पुरान हार हठ छाड्यो तद्यपि ध्यान न आये ॥
दानव देव पिसाच प्रेत से नेतइ नेत कहाये ।
सूछम से सूछम करि चीने वृद्ध न वृद्ध बताये ॥
भूमि अकास पताल सबै सजि एक अनेक सधाये ।
सो नर काल फांस ते बाँचा जो हरि सरन सिधाये ॥

माँड

गुन गन उदार, महिमा अपार ।
अनुभव-प्रकाश, निशिदिन अनास ॥
आभा अभंग, अनभूत अंग ।
निरभै निकाम, मुनिगन प्रनाम ॥

卐

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

सन्त चरनदास जी के पद

भैरवी

साधो निन्दक मित्र हमारा ।
निन्दक को निकटे ही राखों होन न देउँ नियारा ॥
पाछे निन्दा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै विकारा ।
जैसे सोना तापि अगिनि में निरमल करै सोनारा ॥
धन अहरन कसि हीरा निवटै कीमत लच्छ हजारा ।
ऐसे जांचत दुष्ट सन्त कूं करन जगत उजियारा ॥
जोग जग्य जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा ।
बिन करनी मम करम कठिन सब मेटै निंदक प्यारा ॥
सुखी रहो निन्दक जग माही रोग न हो तन सारा ।
हमरी निन्दा करने वाला उतरे भवनिधि पारा ॥
निंदक के चरणों को अस्तुति भाखौं बारम्बारा ।
'चरनदास' कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा ॥

दोहा

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज सर माहिं ।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥
दया नम्रता दीनता छिमा शील सन्तोष ।
इनको लै सुमिरन करे, निश्चय पावे मोष ॥

सोहनी

जिन्ह हरिभगति पियारी हो ।
मात-पिता सहजै छूटें छूटैं सुत नारी हो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लोक भोग फीके लगें सम अस्तुति गारी हो ।
हानि लाभ नहिं चाहिये सब आसा हारी हो ॥
जग सूँ मुख मोरे रहैं करै ध्यान मुरारी हो ।
जित मनुआं लागो रहै भइ घट उजियारी हो ॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो ।
'चरनदास' चारौं वेद सूं औरै कछु न्यारी हो ॥

आसा राग

प्रभु जी शरण तिहारी आयो ।
जो कोई सरन तिहारी नाहीं, भरम भरम दुख पायो ॥
औरन के मन देवी देवा, मेरे मन तुहि भायो ।
जबसों सुरति सम्हारी जग में, और न शीश नवायो ॥
नरपति सुरपति आस तुम्हारी, यह सुनि कै मैं धायो ।
तीरथ बरत सकल फल त्याग्यो, चरणकमल चित लायो ॥
नारद मुनि अरु शिव ब्रह्मादिक, तेरो ध्यान लगायो ।
आदि अनादि जुगादि तेरो जस, वेद पुरातन गायो ॥
अब क्यों न बांह गहो हरि मोरी, तुम काहे बिसरायो ।
'चरनदास' कहै करता तू ही, गुरु सुकदेव बतायो ॥

भैरवी

अबकी तारि देव बलवीर ।
चूक मोसूँ परी भारी कुबुद्धि के संग सीर ॥
भौसागर को धार तीछन माह गँदिलो नीर ।
काम क्रोध मद लोभ भँवर में चित्त धरत न धीर ॥
मच्छ जँह बलवन्त पाँचौ थाह गहिर गम्भीर ।
मोह पवन झकोर दारुन दूर फैलत तीर ॥
नाव तो मझधार भरमी हिये बाढ़ी पीर ।
'चरनदास' कोई न संगी तुम बिना हरि हीर ॥

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

वसन्त

वह वसन्त कोई विरला पावे वह बसन्त ।
जाकी अद्भुत लीला रंग अनन्त ॥
जहँ झिलमिल झिलमिल है अपार ।
जहँ मोती बरसै निराधार ॥
जहँ फूलन की लागी फुहार ।
जहँ अनहद बाजे बहु प्रकार ॥
जहँ ताल जु बाजै बिना हाथ ।
जहँ शंख पखावज एक साथ ॥
जहँ काम क्रोध नहिं मोह मैनु ।
जहँ 'चरनदास' श्रवे कामधेनु ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सहजोबाई के पद

राग सारंग

हमारे औषध नाँव धनीका ।
आधव्याध तन मन की खोवे, शुद्ध करै वह नीका ॥
अमर भये जिन जिन वह खाई, भव नगरी नहि आये ।
जो पछ करै संभल दृढ़ राखै, सतगुरु वैद बताये ॥
सत संगत को भवन बनावे, पड़दा लाज लगावै ।
जगत बासना पवन चलत है, सो आवन नहिं पावै ॥
शुभ करमन लै टेक टहलुआ, दीपक ज्ञान जलावै ।
नित्य अनित्य विचार सार गहु, हों असार बगावै ॥
जीव रूप के रोग भगें यों, ब्रह्म रूप हो जावै ।
'सहजोबाई' सुन हुलसावै, चरनदास बतलावै ॥

बसन्त

मिलि गावो रे साधो यह बसन्त ।
जाकी अविगति लीला अगम पन्थ ॥
जँह नाँव पदारथ है इक अंग ।
नहिं पैये दूजा और अंग ॥
जँह दरसै साधो एक एक ।
नहिं पैये दूजा कोई भेक ॥
जँह ज्ञान ध्यान को लगो तार ।
जँह आप विराजै ओंकार ॥
देखो सब घट-व्यापक निराकार ।
कोई नहिं पावै वह विचार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

जँह ब्रह्म अखण्डित अति अनूप ।
जाको सुर मुनि-योगी ध्यावै भूप ॥
जो छाय रह्यो है सर्व माहिं ।
जँह कोई नहिं सन्तो खाली ठाहिं ॥
गुरु चरनदास पूरन औतार ।
जिन दान दियो जग व्याध टार ॥
'सहजोबाई' तेहि नावै सीस ।
मेरे भ्रम मेटे विस्वा बीस ॥

दोहे

'सहजो' गुरु दीपक दियो, नैना भये अनन्त ।
आदि अन्त मध एकही, सूझ पड़े भगवन्त ॥
सीस कान मुख नासिका, ऊंचे ऊंचे ठाँव ।
'सहजो' नीचे कारने, सब कोउ पूजे पाँव ॥
मैं अखंड व्यापक सकल, 'सहज' रहा भरपूर ।
ज्ञानी पावे निकट ही, मूरख जानै दूर ॥
जोगी पावै जोगसूं, ज्ञानी लहै विचार ।
'सहजो' पावै भक्ति सूं, जाके प्रेम अधार ॥
सील छिमा सन्तोष गहि, पांचों इन्द्री जीत ।
राम नाम ले 'सहजिया', मुक्त होन की रीति ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गुजराती भजन

भैरवी

मंगल मन्दिर खोलो, दयामय ! मंगल मन्दिर खोलो ।
जीवन वन अति वेगे वटाव्युं द्वार उभो शिशु भोलो ॥
तिमिर गयुं ने ज्योति प्रकाश्यो, शिशु ने उरमां लेलो ।
नाम मधुर तम रट्यो निरन्तर, शिशु सह प्रेमे बोलो ॥

खमाच धुमाली

वैष्णव जन तो तेनें कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ॥
सकल लोक मां सहुने वन्दे, निन्दा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे ॥
समदृष्टी ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे ।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ॥
मोह माया व्यापै नहीं जेने, दृढ़ वैराग जेना मनमां रे ।
राम नाममूं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तममां रे ॥
वन लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निर्वार्या रे ।
भण 'नरसैंयो' तेनुं दरशन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे ॥

आसा माँड

अखिल ब्रह्माण्ड मां एक तूं श्रीहरि ।
जूजवे रूपे अनन्त भासे ॥
देहमा देव तूं तेज मां तत्व तूं ।
शून्य मां शब्द थई वेद वासे ॥१॥

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

पवन तुं पाणि तूं भूमि तूं भूधरा ।
वृक्ष थई फूली रह्यो आकाशे ॥
विविध रचना करी अनेक रह लेवा ने ।
शिव थकी जीव थयो एज आशे ॥२॥

वेद तो एम वदे श्रुति-स्मृति साख दे ।
कनक कुंडल विषे भेद न्होये ॥
घाट घडया पछी नाम रूप जूजवां ।
अन्ते तो हेम नु हेम होये ॥३॥

वृक्ष मां बीज तुं बीज मां वृक्ष तूं ।
जोऊँ पटंतरो एज पासे ॥
भणे 'नरसैयों' ए मन तणी शोधना ।
प्रीति करूं प्रेम थी प्रकट थाशे ॥४॥

वागश्री–ताल धमार तेवरा

दीनानाथ दयाल नटवर हाथ मारो मूकशो मा ।
हाथ मारो मूकशो मा, हाथ मारो मूकशो मा ॥
आ महा भवसागरे, भगवान हुँ भूलो पढ्यो छुं ।
चौद लोक निवास चपलाकान्त ! आ तक चूकशो मां ॥
ओथ ईश्वर आपनी, साधन विषे समजुं नहिं हुं ।
प्राण-पालक ! पोत जोई; शंख आखर फूकशो मा ॥
मात तात सगां सहोदर, जे कहूं ते आप मारे ।
हे कृपामृतना-सरोवर ! दान सारु सूकशो मा ॥
शरण केशव लाल नुं छे धरण हे हरि राम तारूं ।
अखिल नायक ! आ समय, खोटे मशे पण खूटशो मा ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काफी–ताल दीपचन्दी

कोई सहाय नथी, बिना हरि कोई सहाय नथी ।
बन्धां मा तुं बालक ममता मा मनथी ।
सूती केम धरी ने धीरज धाम धरा धनथी ॥
भज भूधर ने भाल करीने समदम साधन थी ।
अवर तणी सेवा शा माटे, अरर ! करे अमथी ॥
काल कराल तणो भय भारे जो मनमाहिं मथी ।
करशे ते थई शकशे केशव आ उत्तम तन थी ॥

छाया खमाच–तीन ताल

मारी नाड़ तमारे हाथे हरि संभालजो रे ।
भुजने पोतानो जाणीने प्रभु पद पालजो रे ॥
पथ्यापथ्य नथी समजातुं दुःख सदैव रहे उभरातुं ।
मनो हशे शुं थातुं नाथ निहालजो रे ॥
अनादि आप वैद्य छो साचा कोई उपाय विषे नहिं काचा ।
दिवस रह्या छे टांचा वेला बालजो रे ॥
विश्वेश्वरशुं हजी विसारो बाजी हाथ छतांकां हारो ।
महा मुंझारो मारो नटवर टालजो रे ॥
केशव हरि मारुं शुंथाशे धाण वल्योशुं गढ़ घेराशे ।
लाज तमारी जाशे भूधर भालजो रे ॥

मराठी-पद

पवित्र तें कुल पवन तो देश ।
जे थें हरिचे दास जन्म घेती ॥
कर्म धर्म त्याचे ज्याला नारायण ।
त्याचेनि पावन तिन्हीं लोक ॥

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

वर्ण अभिमानो कोण झाले पावन ।
एसें द्या सांगून मज पाशीं ॥
अंत्यजादि योनि तरल्या हरि भजनें ।
तयाँची पुराणों भाट झालीं ॥
कान्ही पात्र खोदु पिंजारी तो दादु ।
भजनीं अभेदु हरिचे पायीं ॥
चोखा मेला वंका जातीचा महार ।
त्याची सर्वेश्वर ऐक्य करी ॥
नामयाची जनी कोण तिचा भाव ?
जेवी पंढरीराव तिये सर्वें ॥
मैराल जनक कोण कुल त्याचें ।
महिमा न तयाचें काम साँगों ॥
याता याति धर्म नाहीं विष्णुदासा ।
निर्णय हा ऐसा वेद शास्त्री ॥
'तुका' म्हाणे तुम्हीं विचारावे ग्रंथ ।
तारिले पतित नेणों किती ॥

खमाच तीन ताल

स्मरतां नित्य हरी, मगती माया काय करी ?
श्रवणें मननें अद्वय वचनें पतलो काल दुरी ॥
करुणाकर वरदायक हरि जो ठेवित हात शिरी ।
तोचि निरन्तर उद्धव चरणीं अमृत पान करी ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कविवर रवीन्द्रजी के बंगाली-पद

अडाणा

तुमि बन्धु तुमि नाथ, निशि दिन तुमि आमार ।
तुमि सुख तुमि शांति, तुमि हे अमृत पाथार ।।
तुमि तो आनन्द लोक, जुड़ाओ प्राण नाशो शोक ।
ताप-हरण तोमार चरन, असीम शरण दीन जनार ।।

भैरवी

वहे निरन्तर अनन्त आनन्द धारा,
बाजे असीम नभ माझे अनादि रव ।
जागे अगण्य रवि चन्द्र तारा ।।
एकक अखंड ब्रह्माण्ड राज्ये ।
परम एक सेई राज राजेन्द्र राजे ।।
विस्मित निमेषहत विश्व चरणे विनत ।
लक्ष शत भक्त चित्त वाक्य हारा ।।

ईश्वर ध्यान

मन के आमार काया के ।
आमी एके बारे मिलिये दिते चाइ ए कालो छाया के ।।
ए आगुने ज्वलिये दिते, ए सागरे तलिये दिते ।
ए चरणे गलिये दिते, दलिये दिते माया के ।।
मन के आमार काया के ।
ये खाने पाइ सेथाई, एके आसन जुड़े वसते देखे ।
लाजे मरि लागो हरि एइ सुनिबिड़ छाया के ।।

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

मन के आमार कायां के ।
तुमि आमार अनुभावे, कोथावो नाहि बाधा पावे ।
पूर्ण एका देवे देखा, सरिये दिये माया के ॥
मन के आमार काया के ।

आसावरी-द्रुत एकताल

अन्तर मम विकसित करो अन्तर तर हे ।
निर्मल करो उज्वल करो सुन्दर करो हे ॥
जागृत करो उद्यत करो निर्भय करो हे ।
मंगल करो निरलस निःसंशय करो हे ॥
युक्त करो हे सबार संगे मुक्त करो हे बंध ।
संचार करो सकल कर्मे शांत तोमार छंद ॥
चरण पद्मे मम चित्त निष्पन्दित करो हे ।
नन्दित करो नन्दित करो नन्दित करो हे ॥

महामना स्व० पं० मदनमोहनजी मालवीय कृत धर्मोपदेश से

सनातन-धर्मी आर्य-समाजी, ब्रह्म-समाजी, सिक्ख, जैन और बौद्ध आदि सब हिन्दुओं को चाहिये कि अपने अपने विशेष धर्म का पालन करते हुए एक दूसरे के साथ प्रेम और आदर का व्यवहार करें:—

प्रार्थना

सब देवन के देव प्रभु, सब जग के आधार ।
दृढ़ राखौ मोहिं धर्म में, बिनवौं बारम्बार ॥
चन्दा सूरज तुम रचे, रचे सकल संसार ।
दृढ़ राखौ मोहिं सत्य में, विनवौं बारम्बार ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

घट-घट तुम प्रभु एक अज, अविनासी अविकार ।
अभय दान मोहि दीजिये, विनवौं बारम्बार ॥
मेरे मन मन्दिर बसौ, करो ताहि उजियार ।
ज्ञान भक्ति प्रभु दीजिये, विनवौं बारम्बार ॥
सत चित आनन्द-घन प्रभू, सर्व शक्ति आधार ।
धनबल जनबल धर्मबल, दीजै सुख संसार ॥
पतित उधारन दुखहरन, दीनबन्धु करतार ।
हरहु अशुभ शुभ दृढ़ करहु, विनवौं बारम्बार ॥
जिमि राखे प्रहलाद को, लै नृसिंह अवतार ।
तिमि राखौं अशरण-शरण विनवौं बारम्बार ॥
पाप दीनता दरिद्रता, और दासता पाप ।
प्रभु दो स्वाधीनता, मिटै सकल सन्ताप ॥
नहिं लालच बस लोभ बस, नाहीं डर बस नाथ ।
तजौं धरम बर दीजिये, रहिये सदा मम साथ ॥
जाके मन प्रभु तुम बसौ, सो डर कासों खाय ।
सिर जावै तो जाय प्रभु, किन्तु धरम नहिं जाय ॥
उठौं धर्म के काम में, उठौं देश के काज ।
दीनबन्धु तव नाम लै, नाथ राखिये लाज ॥
थावर जंगम जीव में, घट घट रमता राम ।
सत चित आनन्दघन प्रभू, सब विधि पूरण काम ॥
अंश उसी के जीव हो, करो उसी से नेह ।
सदा रहो दृढ़ धर्म चिर, बसो निरामय देह ॥

卐

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

आर्य समाज के पद

भूप-कल्याण

योधा सोई जानिये जो लड़े धर्म के हेत।
शूरा रण में जाय के पीठ कबहुँ नहिं देत ॥
जान जाय पर धर्म न जाये स्वर्ग पछाने खेत।
धर्म पर जिन सीस दियो है, पावै हरका भेद ॥
राय हकीकत वीर वैरागी, तर गये सागर सेत।
धर्म छोड़ जो नावे माथा, होय भूत और प्रेत ॥

वागेश्री

ओ३म् अनेक वार बोल प्रेम के प्रयोगी।
है यह अनादि नाद, निर्विकल्प निर्विवाद,
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी।
वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु सर्व जोगी ॥
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त,
त्यागते अघी अशक्त, पोंच पाप रोगी।
ओम् ओम् नित्य नाम, जो जपै विसारि काम,
तो बने विवेक धाम, मुक्ति क्यों न होगी ॥

ईश-निहोरा

वाक शक्ती आपने दी जो हमें करि अति कृपा।
सो हमारी हे दयामय शुद्ध वाणी हो सदा ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्राण के दाता प्रभू तुम प्राण के भी प्राण हो ।
आपके सुमिरन पुहुप से यह सुगन्धित प्राण हो ॥

हे प्रभू इन नेत्रों की ज्योति को दीजै प्रकाश ।
आपके दर्शन करें अरु होय इनकी पूर्ण आश ॥

सर्वदा सुनते रहें यह ओ३म् के गुन गान कान ।
शक्ति ऐसी कीजिये हे नाथ अब इनको प्रदान ॥

धर्म-चर्चा श्रवण करने में सदा हम कान दें ।
और सुनने को कुशब्दों के कदापि न ध्यान दें ॥

रोग से नाभी हमारी हे दयामय दूर हो ।
सुख अरु नीरोगता से यह सदा भरपूर हो ॥

आप ही का इस हृदय में प्रभू निरन्तर ध्यान हो ।
कीजिये ऐसी कृपा जो प्राप्त आत्मिक ज्ञान हो ॥

आपके उपकार का यह कण्ठ गाये नित्य गान ।
शुद्ध निष्कण्टक रहे स्वर सर्वप्रिय कोकिल समान ॥

नाथ इस मस्तिष्क में वह बुद्धि हमको दीजिये ।
ज्ञान जिससे आपका हो सो कृपा कर कीजिये ॥

आप हो बलदा भुजाओं को अतुल बल दान दो ।
यज्ञ दानादिक सदा ये कर सकें बलवान हों ॥

करतलों में सर्वदा प्रभु-स्मरण की माला रहे ।
मन तुम्हारी ही कृपा का मानने वाला रहे ॥

दी हमें दश इन्द्रियां यह आपका उपकार है ।
आपको करता नमस्ते मित्र बारम्बार है ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

(तर्ज–सिर जाये तो जाये मेरा वैदिक धर्म न जाये)

वैदिक नाद बजाओ, ऐ आर्य वीर गण आओ ।
समय नहीं सोने का प्यारो, करवट ले अब आंख उघारो ।
बिगड़ी बात बनाओ ॥ ऐ आर्य ॥
प्रबल शत्रुओं ने है ठाना, छल प्रपंच से हमें मिटाना ।
सावधान हो जाओ ॥ ऐ आर्य ॥
ललना लाल लुटरे लूटें, सिखा सूत्र मठ मन्दिर टूटें ।
गौरव मान बचाओ ॥ ऐ आर्य ॥
देश काल की ओर निहारो, करो संगठन वैर विसारो ।
भ्रातृ-भाव दरसाओ ॥ ऐ आर्य ॥
विधवा जार जार रोती हैं, कितनी हाय धर्म खोती हैं ।
धीरज उन्हें बंधाओ ॥ ऐ आर्य ॥
हुए करोड़ों अपने भाई, गौ भक्षक मुसलमान इसाई ।
फिर से आर्य बनाओ ॥ ऐ आर्य ॥
इधर उधर जो भटकें उनको, कबरों में सर पटकें उनको ।
सत मारग पर लाओ ॥ ऐ आर्य ॥
बनो भीम अर्जुन से बल में, धूम मचा दो युद्धस्थल में ।
शूरवीर कहलाओ ॥ ऐ आर्य ॥
गुरुगोबिन्द और वैरागी सम, श्रद्धानन्द आत्मत्यागी सम ।
धर्मवीर पद पाओ ॥ ऐ आर्य ॥
'प्रकाश' निज कर्त्तव्य कर्म पर, सत्य सनातन वेदधर्म पर ।
निर्भय शीश कटाओ ॥ ऐ आर्य ॥

卐

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

महात्मा गणेश जी के पद

कौसिया

पल में पवन घणेरी चलती, पल में पत्ते हलै न चल ।
पल में पंछी उड़ते देखा, पल में आप कटादे गल ॥
पल में कूप तालाब सुखादे, पल में कर दे जल ही जल ।
पल भर में वह भीख मंगादे, जिनके लारे लस्कर हल ॥
पल भर में वह राजा करदे, जिनके कर में स्वामी जल ।
पल भर में तो जवान बनादे, पल में करदे वृद्धावल ।
कहते हैं कर्ता सो डरिये, करता लावे घड़ी न पल ॥

मारवाड़ी भजन

तिलक कामोद

सहेली म्हारी समझ समझ पग ठाय ।
बिकट बाट बंटक है मारी कंटक ना लग जाय ॥
मोह निशा अन्धियारी कारी चौतरफी रही छाय ।
माया झाड़ फाड़ रही तन को चलियो इसे बचाय ॥
कुकर्म कांटा सूल जबर है भिड़तांई गड़ जाय ।
होंगे दुःख अपार समझ फिर मारग चलो न जाय ॥
काम-क्रोध-मद-लोभ ठगा मिल जो कछु हो ले जाय ।
आशा तृष्णा राग द्वेष ये सिंह घेर ले आय ॥
क़ालूराम मिल्यो गुरू पूरा दीनी राह बताय ।
विष्णु ईश अविचल अविनासी सबकी करे सहाय ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

सोरठ

मनुवां मोसर आयो रे ।
चूके मतना चाल काल सिर ऊपर छायो रे ॥
कृपा हुई कर्ता की जब तैने नर तन पायो रे ।
लावो ले सुकृत को कल ले चित को चायो रे ॥
विपवत त्याग विषय को मन से क्यों सकुचायो रे ।
विषयन में रत रहत सो अपणो जन्म गमायो रे ॥
इन्द्रियन को रस भोग तो सभी जूणि में पायो रे ।
मानुस जन्म मुक्ति को साधन वेद बतायो रे ॥
भरम त्याग अब जाग नींद् से गुराँ जगायो रे ।
ले करवट अब मत सो पीछे दिन उग्यायो रे ॥
कृपा करी गुरुदेव ज्ञान दे तिमिर नसायो रे ।
विष्णु ईश अविचल अविनाशी घट घट छायो रे ॥

भैरवी

भज मन ओ३म् नाम रस कंद ।
ब्रह्म सर्वव्यापक प्रभु स्वामी रमण करे हिय अन्तरयामी ॥
अवगुण रहित सगुण गुण हामी सत्त चित्त आनन्द ।
विश्वनाथ ! विष्णु ! पितु माता प्रकृति चकोर तू चन्द ॥
शेष सुवर्ण शुक्र श्री स्रष्टा पूर्ण प्राण दीनन दुख हरता ।
पूर्ण लोक नित कर्त्ता धर्त्ता सर्वस गुण सम्पन्न ॥
निर्भय निर्गुण नित्यनिरंजन असुर निकंदन जनमनरंजन ।
अशरण-शरण सकलदुखभंजन जीव तुच्छ मतिमंद ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कव्वाली

भजो नित नाम ओंकारा, रचा जिन सकल संसारा ।
अनारी मान मन मेरा, यहाँ नहिं है कोई तेरा ॥
जगत दिन दोयका डेरा, ज्यों चिड़ियाँ रैन वसेरा ।
यह है सब चालणो वारा ॥
असुर रावण से वलधारी, चले गये राम अवतारी ।
कहाँ लछिमन से असुरारी, कहाँ हनुमत विजयकारी ॥
भरत कहाँ भ्रात प्रिय प्यारा ॥
कहाँ कौशल्या महतारी, मात सीता सती नारी ।
कहाँ विश्वामित्र तपधारी, गये सब काल की वारी ॥
लेओ जगदीश का सहारा ॥
नहीं धन संग जावेगा, यहाँ ही सब रह जावेगा ।
वह जिस दिन काल आवेगा, नहीं कुछ करण पावेगा ॥
बांध ले धर्म का भारा ॥
भरोसा है नहीं पलका, मनसूबा क्या करे कलका ।
तैं करणा छोड़ दे छलका, तेरा ज्यूँ पाप होय हलका ॥
करो दिल से परोपकारा ॥
जरा दिल में दया धारो, काम अरु क्रोध ने मारो ।
लोभ अरु मोहने टारो, होय ज्यूँ ज्ञान उजियारो ॥
विष्णु ह्वै ईश आधारा ॥

भैरवी तीन ताल

कुण जाणे पराये मन की, मन की लगन की भजन की ।
साधू रैन चान्दनी चावे, सुरत लगी है भजन की ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

चोरां रैन अँधेरी चावे, सुरत लगी है परधन की ।
हीरा की परख जौहरी जाणे, चोट सहे सिर धन की ॥
घायल की गति घायल जाने, चोट लगी है मरम की ।
'घाटमदास' जात को मीनो, राखोजी लाज बरन की ॥

मारवाड़ के महात्मा बाबा रामनाथ जी के वचनामृत

हाथ काम, मुख राम, हृदय सांची प्रीति ।
क्या योगी का गृहस्थी, उत्तम याही रीति ॥
भोग भुगति भूखा मरै, त्यागे तिरपित होय ।
जानत हैं तत्ववेता यों, पर और न जाने कोय ॥

भावार्थः– सांसारिक भोगों में आसक्ति बनी रहेगी तब तक प्राणी भूखे की तरह रहेगा, परन्तु उन्हें त्यागते ही तृप्ति हो जायगी। तत्ववेत्ता ही इन बातों को जानते हैं, और कोई नहीं जान सकता ।

माया बेटी राम की, माया जायो राम ।
राम बिना की बांता करनी, सो सारी बात निकाम ॥
नारी बेटी पुरुष की, पुरुष नारी को पूत ।
'दादू' ज्ञान विचार कर घर छांडि चले अवधूत ॥

जयपुराधीश महाराज रामसिंह जी कृत छप्पय छन्द (भर्तृहरिशतक)

सहें खलन के बैन इते पर तिनहिं रिझाये ।
नैनन को जल रोक शून्य मन मुख मुस्काये ॥
देत नाहिं कछु वित्त तेउ पर जोर दिखाए ।
कर कर चाव करोर भोर ही दौरत आए ॥
सुनि आस प्यास तेरी प्रबल तू अति अद्भुत गति गहत ।
इस भांति नचायो मोंहि अब और कहा करिबो चहत ॥१॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उदै अस्त रवि होत आयु को क्षीण करत नित ।
गृह धन्धे के माहिं समय बीतत अजान चित ॥
आँखिन देखत जन्म जरा अरु विपति मरन नित ।
तहूं डरत नहिं नेक शंक हू नाहिं करत चित ॥
जग जीव मोह मदिरा पिए छाके फिरें प्रमाद में ।
गिरत उठत फिर फिर गिरत विषय वासना स्वाद में ॥२॥

पृथिवी परम पुनीत पलंग ताको मन मान्यो ।
तकिया अपनो हाथ गगन को तम्बू तान्यो ॥
सोहत चन्द चिराग बीजना करत दसों दिशि ।
वनिता अपनी वृत्ति संगही रहत दिवस निशि ॥
अतुलित अपार सम्पत्ति सहित सोवत हैं सुख में मगन ।
मुनिराज महा नृपराज ज्यौं पौढ़े देखे हम दृगन ॥३॥

धीरज जाको पिता क्षमा हैं जाकी जननी ।
सत्य वचन है मित्र दया है जाकी भगिनी ॥
शान्ति सुबाला नारि भूमितल शैया सोहै ।
संयम मन को बन्धु बसन दिक् जिन कूँ मोहै ॥
जिन ज्ञान सुधा को असन रखि सब एते परिजन लहै ।
उस योगी को क्यों डर रहे सदा मुदित मन ह्वै रहै ॥४॥

वे ही निशि वे ही दिवस वे ही तिथि वे बार ।
वे उद्यम वे ही क्रिया वे ही विषय विकार ॥
वे ही विषय विकार सुनत देखत अरु सूंघत ।
वे ही भोजन भोग जागि सोवत अरु ऊंघत ॥
महा निलज्ज यह जीव भोग में भयो विदेही ।
अजहूं पलटत नाहिं बढ़त गुण वे के वे ही ॥५॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

भोग रहे भरपूर आयु यह भुगत गई सब ।
तपौ नाहिं तप मूढ़ अवस्था तपत भई अब ॥
काल न कितहूँ जात बयस यह चली जात नित ।
वृद्ध भई नहिं आस वृद्ध वय भई छांड़ि हित ॥
अजहुँ अचेत चित चेत कर देह गेह सों नेह तज ।
दुख दोष हरण मंगल करन श्रीहरिहर के चरण भज ॥६॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जैन पद संग्रह

तत्वार्थाधिगम सूत्र

(जैन सिद्धान्त के एक मान्य ग्रन्थ से)

कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ॥ १०-३ ॥

सम्पूर्ण कर्मों का क्षय होना ही मोक्ष है। यह मोक्ष केवल ज्ञान उत्पन्न होने वाले जीवों को प्राप्त होता है।

समीक्षा—जैन सिद्धान्तानुसार जीवात्मा अनादि काल से कर्म-बन्ध में फंसा हुआ अनादि काल से ही जन्म मरण रूपी दुःख को भोग रहा है। जिन सांसारिक भोगों को यह सुख माने हुए है, वास्तव में दुःख रूप ही हैं। क्योंकि वह अस्थायी और विघ्न-संयुक्त हैं। अतः जीवात्मा को चाहिये कि ऐसा प्रवल पुरुषार्थ करे कि सम्पूर्ण कर्मों को क्षय करके केवल ज्ञानोदय होने पर मोक्ष-भागी हो जाय। मन-वचन-काया की सभी क्रिया कर्म शब्द से बोली जाती है। जिस समय जो क्रिया होती है, वह भविष्य में या तत्काल ही आठ प्रकार का फल देने वाली होती है। कर्म में भिन्न-भिन्न फल देने का गुण ही 'कर्म-प्रकृति' बोला जाता है। जैन सिद्धांतानुसार कर्म-प्रकृतियां आठ हैं अर्थात् मोहनीय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय, वेदनीय, नाम, गोत्र और आयु। मुक्तावस्था में आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप में होता है। वह उस अवस्था में चराचर सब वस्तुओं को हस्तामलकवत् जानता है, देखता है और अपने आत्म-स्वरूप में रमण करता है, या यों कह सकते हैं कि अपने ज्ञान, दर्शन और चरित्र रूप शक्तियों को पूर्ण रूप से धारण किये रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

बहार

घड़ी-घड़ी पल-पल छिन-छिन निशदिन,
प्रभु का सुमिरन कर ले रे।
प्रभु सुमिरे ते पाप कटत हैं,
जनम मरन दुःख हर ले रे॥
मन-वच-काय लगाय चरन चित,
ज्ञान हिये विच धर ले रे।
"दौलत राम" धर्म नौका चढ़ि,
भवसागर तें तर ले रे॥

पीलू

हम न किसी के कोई न हमारा, झूठा है जग का व्यवहारा।
तन सम्बन्धी सब परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा॥
पुन्य उदय सुख का बढ़वारा, पाप उदय दुख होत अपारा।
पाप पुन्य दोऊ संसारा, मैं सब का देखन हारा॥
मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला, पर संयोग भया बहुमेला।
तिथि पूरी करि खिर-खिर जाहीं, मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं॥
राग भावते सज्जन मानै, दोष भाव तें दुर्जन जानैं।
राग दोष दोऊ मन नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतन पद माहीं॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

फुटकर पद

सारंग–ठुमरी

प्रभु निर्विकार जग रचन हार, महिमा अपार ।
नहिं मिलत पार, करके विचार, आरत दुख हारो ॥
सब विश्व भरण, भवताप हरण, दीनन के शरण ।
दुख दूर करण, परे तुमरे चरण, सब विघ्न हारो ॥
सुनो जगतनाथ, हम हैं अनाथ, अब पकर हाथ ।
देओ अपना साथ, धरे चरण नाथ, दया करके निहारो ॥
तेरी ही आस धरें, पड़े आइ द्वार, 'भारतीय' पुकार ।
करते बार-बार, कराओ उद्धार, दुःख सागर तारो ॥

ध्रुपद भैरव

आदि देव सकल नाथ, दीनन के सदा साथ ।
पकड़ो प्रभु हमरो हाथ, शोक को निवारो ॥
सुर नर मुनि धरत ध्यान, वेद बचन करत गान ।
तू ही सब गुण निधान, विश्व रचन हारो ॥
ज्ञानी योगी मुनि सन्तान, अब हो गई रहित ज्ञान ।
कहीं नाहि मिलत मान, दुख दोष से उबारो ॥
पवित्र महान् भारत देश, जब से पाल्यो भ्रातृ-द्वेष ।
हो गये दुर्बल विशेष, करावो प्रेम संचारो ॥
सकल शक्ति के अगार, सगुण नित्य निराकार ।
'भारतीय' करे पुकार, त्रिविध ताप जारो ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

ध्रुपद--भैरव चार ताल

निरंजन निराकार परब्रह्म परमेश्वर,
एक ही अनेक होय व्यापी विश्वम्भर ।
अलख-जोति अविनाशी जोतिरूप जगज्जतारण,
जगन्नाथ जगतपति जगजीवन जगधर ॥
वाहि में सब जीव-जन्तु सुरनरमुनि गुणीज्ञानी,
ब्रह्मा प्रगटायो औ सतरूपा मन्वन्तर ।
कहै "वैजू" वही ब्रह्म वही हैं विराट रूप,
आप अवतार भये चौबीस वपुधर ॥

ध्रुपद--कल्याण

जय गोविन्द, जय गोविन्द, पतित पावन अघनाशन ।
शरणागत, दीनन-प्रतिपालक, हरि परमानन्द ॥ जय० ॥
तारक, भय-हारक, उद्धारक है तेरो नाम ।
सुमिरत सब दूर होत, त्रिविध ताप दुःख द्वन्द ॥ जय० ॥
हो अनन्त निर्विकार, सकल जगत के अधार ।
अलख अमर ओंकार, अगिनि पवन सूर्यचन्द्र ॥ जय० ॥
कुंवर श्याम अति दयाल, काटो मम मोह जाल ।
दूर करो, दूर करो, दूर करो जगत फंद ॥ जय० ॥

ध्रुपद--खमाच, ताल-चौताला

जय जय जय सत्यदेव सुर नर मुनि चरण सेव,
त्रिभुवनपति पार ब्रह्म पूरण प्रभु गुणनिधान ।
जय जय जय रूप सदन निरखत छवि चन्द्र वदन,
वारि जात कोटि मदन भूलि जात धनुष बान ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जय जय जय गुणागार महिमा तेरी अपार,
नारदादि गिरा शेष हारे करि सुयश गान।
जय जय भृगुनाथ नाथ याँचत हूँ जोरि हाथ,
दीजै करि कृपा अर्थ धर्म्म कर्म्म मोक्ष दान॥

ध्रुपद—यमन कल्याण, ताल-चौताला

जाको वेद रटत ब्रह्म रटत शेष रटत शम्भु रटत,
नारद मुनि व्यास रटत पावत नहिं पार।
ध्रुवजन प्रहलाद रटत कुन्ती के कुंवर रटत,
द्रौपदी सी नारि रटत दीनन हितकार।
गणिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत,
साधु सन्त भक्त रटत राखत सुख प्यार॥

अड़ाना—झूमरा

नैया मोरी तनक सी, बोझी पाथर भार।
चहुं दिसि अति भौंरै उठत, केवट है मतवार॥
केवट है मतवार नांव मझधारहिं आनी।
आंधी उठी प्रचण्ड तेहुं पर वरसै पानी॥
कह गिरधर 'कविराय' नाथ हो तुम ही खेवैया।
उठे दया को डाँड़ घाट पर आवै नैया॥

भैरवी

हे जग-त्राता, विश्व विधाता,
हे सुख शान्ति निकेतन हे।
प्रेम के सिन्धो दीन के बन्धो,
दुःख दारिद्र विनाशन हे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

नित्य अखण्ड अनन्त अनादी,
पूरण ब्रह्म सनातन हे ।
जग-आश्रय, जगपति, जगबन्दन,
अनुपम, अलख, निरंजन हे ॥
प्राण–सखा त्रिभुवन–प्रतिपालक,
जीवन के अवलम्बन हे ॥

भीम पलासी

पितु मातु सहायक स्वामि सखा,
तुम ही इक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और अधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो ॥
प्रतिपाल करो सिगरे जगको,
अतिशय करुणा उर धारे हो ।
भुलिहैं हम ही तुमको तुमतो,
हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ॥
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।
महाराज महा महिमा तुमरी,
समुझै बिरले बुधवारे हो ॥
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे,
मन-मन्दिर के उजियारे हो ।
यहि जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो ॥
तुमसों प्रभु पाय 'प्रताप' हरि,
केहि के अब और सहारे हो ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राग बिहारी

जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मन का ।
सुख सम्पति गृह आवे, कष्ट मिटे तन का ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आश करूं जिसकी ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥
तुम कृपाल करुणा के सागर, तुम पालन करता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पती ।
किस विधि मिलूं गुसाईं, तुमको मैं कुमती ॥
दीन बन्धु दुख हरता, ठाकुर तुम मेरे ।
अपने हाथ उठावो, द्वार पर्‌या तेरे ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ावो, सन्तन की सेवा ॥

द्रौपदी पुकार

कालिंगड़ा—तीनताल

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी ।
दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी ॥
दुःशासन वंश-कुठार महा दुखदाई ।
कर पकरत मेरो चीर लाज नहिं आई ॥
अब भयो धर्म को नाश पाप रह्यो छाई ।
लखि अधम सभा की ओर नारि बिलखाई ॥
शकुनी दुर्योधन कर्ण खड़े खल घेरी ॥ दुख० ॥

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

तुम दीनन की सुधि लेत देवकीनन्दन ।
महिमा अनन्त भगवन्त भक्त-भय-भंजन ॥
तुम किया सिया दुख दूर शंभु-धनु-खंडन ।
हे तारण दीन गोपाल मुनिन मन रंजन ॥
करूणा निधान भगवान करी क्यों देरी ॥ दुख० ॥

बैठे जँह राजसमाज नीति सब खोई ।
नहिं कहत धर्म की बात सभा में कोई ॥
पांचों पति बैठे मौन कौन गति होई ।
लै नन्दनन्दन को नाम द्रौपदी रोई ॥
करि करि विलाप सन्ताप सभा में टेरी ॥ दुख० ॥

तुम सुनि गजेन्द्र की टेर विश्वअघनाशी ।
ग्रह मारि छुड़ाई बंदि काटि पग फांसी ॥
मैं जपौं तुम्हारो नाम द्वारकावासी ।
अब काहे राज समाज करावत हांसी ॥
अब कृपा करौ यदुनाथ जानि चित चेरी ॥ दुख० ॥

तुम पत राखी प्रह्लाद दीन दुख टारो ।
भये खम्भ फारि नरसिंह असुर संहारो ॥
ब्रज खेलत केशी आदि बकासुर मारो ।
मथुरा मुष्टिक चाणूर कंस मद झारो ॥
तुम मात पिता की आनि कटाई बेरी ॥ दुख० ॥

ले भक्तन हित अवतार कन्हाई तुमने ।
यमलार्जुन की जड़ योनि छुड़ाई तुमने ॥
जल बरसत प्रभुता अगम दिखाई तुमने ।
नख पर गिरिधर ब्रज लिये उबारी तुमने ॥
प्रभु अब विलम्ब क्यों करी हमारी बेरी ॥ दुख० ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुन दीनबन्धु भगवान भक्त हितकारी ।
हरि भये चीर में प्रगट हरो दुख भारी ॥
खैंचत हारो मतिमन्द वीर बलकारी ।
रखि लई दीन की लाज आप बनवारी ॥
बरसत हरपत सुर सुमन बजावत भेरी ॥ दुख० ॥

क्या करी द्वारिकानाथ मनोहर माया ।
अम्बर का लगा पहाड़ अन्त नहीं पाया ॥
तिहुँ लोक चहूँ दिशि भुवन चीर दरसाया ।
वन्दित गणेश परसाद कृष्ण गुण गाया ॥
दीनन की दीनानाथ बिपति निरबेरी ॥ दुख० ॥

भैरवी

हे प्रभु विपत बिनासन हार,
छन में नाश करत जग तूही, तूही सिरजन हार ।
ब्रह्मादिक तेरी महिमा को, पाय सकैं नहिं पार ॥
तूही जब जब पाप होत नित, तब तब धरि अवतार ।
दुष्टन करि उच्छिन्न जगत ते, हरत भूमि को भार ॥
एक समय यहि भारत, रावण कीन्हों अत्याचार ।
ताही छन तू रामरूप धरि, कीन्हों तेहि संहार ॥
यहि विधि कृष्ण नृसिंह आदि, धरि रूप अनेकन बार ।
दुष्टन रहित भूमि कीन्ही प्रभु, तब गति अपरम्पार ॥
भक्तन टेर सुनत तूं धावत, जग के काज बिसार ।
आपु कष्ट सहि तुरत देत प्रभु, तिनके दुःख निवार ॥
होत आज प्रभु! तबते दूनो, भारत पाप अपार ।
कलियुग अरु अधर्म गहि नास्यो, करि अपनो अधिकार ॥
पै न सुनत हमरी कछु हे प्रभु, लखि जग हाहाकार ।
भयो आज तोसों मेरे क्यों, अस निष्ठुर व्यवहार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

रे मन तू नहिं सत्य हृदय से, प्रभु ढिग करत पुकार ।
तासे 'माधव' दोष तोर नहिं, है सब दोष हमार ॥

देश

मूढ़ मन अब तो चेत सही ।
हाय हाय करि जन्म गंवायो,
कहो कहा जीवन फल पायो ।
बनि कायर नित दांत दिखायो,
मान्यो नाहिं कही ॥

लाज हया हिय में नहिं आन्यो,
भला बुरा कछु नहिं पहिचान्यो ।
झूठ सांच को ताना तान्यो,
खोयी बात रही ॥

कौन आपनो कौन परायो,
अविवेकी तू सबै भुलायो ।
बनि मूरख दोउ लोक नसायो,
देखो खोलि वही ॥

बहार-पीलू-मिश्रित

जागो आर्य वीर बली ।
तेरी सम्पत्ति लूट रहे हैं, कायर क्रूर छली ॥
छलियों को मत अपना मानो, सच्चे बंधू को पहचानो ।
भले बुरे को अब तो जानो, खोलो हृदय कली ॥
तुम हो सिंह भेड़ क्यों होते, साहसहीन बने क्यों रोते ।
अपनी शक्ति भला क्यों खोते, फिरते गली गली ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बौद्ध, सिक्ख, जैनी हैं भाई, आर्य सनातन सबै मिलाई ।
वैर फूट मतभेद मिटाई, ले लो बुद्धि भली ॥

धर्म हमारा ही है सच्चा, मत मतांत औरों का कच्चा ।
हम अनादि दूजे हैं बच्चा, छोड़ो दलादली ॥

राग—भीमपलासी, ताल—चौताला

जय जय जय जन्म भूमि, जननी मम प्यारी ।
जल की जहँ वहत धार, डोलत शीतल बयार ।
गिरिवर शोभा अपार, अनुपम छवि वारी ॥

उपजत जहँ विपुल धान, केसर फल-फूल पान ।
पंक्षी गण गरत गान हरषित नर नारी ॥

चन्द्रगुप्त नृप महान, चानक सम नीतिवान ।
भये जहँ गुण निधान जाऊं वलिहारी ॥

जोगिया

साधो भाई क्या मूरखता छाई ।
हिन्दू धरम सभी धरमन ते, ऊंचो धर्म कहाई ।
तेहिका छांड़ि बनत तुम काहे, मुसलमान ईसाई ॥

आपन धर्म छांड़ि जो प्रानी, बहकत धरम गँवाई ।
वेद बतावत सोइ पापी नर, परत नरक मँह जाई ॥

धाय धाय तुम कवर पीर, पूजत निलज्ज हबुआई ।
निज अमृत भण्डार छाँड़ि, टूटत पर-जूठन पाई ॥

बड़े भाग हिन्दू तन पाये, पूरब करी कमाई ।
सब तजि भजौ रामको 'माधव' भव-बन्धन कटि जाई ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

राग मालकोष—तीन ताल

प्रभु ! ऐसो दिन कब अइहैं ।
भारत को धन भारत रहिहैं,
कबहूं विदेश न जइहैं ।
शिल्प कला नित नूतन बढ़ि बढ़ि,
दुःख दारिद्र मिटैहैं ॥
कोउ नहि करन दासता चहिहैं,
उद्यम करि करि खैहैं ।
सारी वस्तु देश में मिलि हैं,
कोउ न विदेशी लैहैं ॥
बढ़ि हैं प्रेम एकता दिन दिन,
फूट बैर विनसैहैं ।
ईर्षा द्वेष कलह करि अपनो,
कोउ नहिं समय वितैहैं ॥
जैसो नाम रह्यो आरज को
फिर वैसो वह पैहैं ।
'जगन्नाथ' तजि और प्रपंचहिं,
तुमरो गुण नित गैहैं ॥

राग तिलककामोद—चौताल

अब तो लाज तोरे हाथ ।
राखो शरण सैयां ॥
अलख ज्योति अपरम्पार ।
निरंजन निराकार ॥
तूही कर जग निस्तार ।
राखो अपनी छैयां ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalo

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आयु सारी खेल खोई ।
अवगुणन की बेल बोई ॥
तुम बिन नहीं नाथ कोई ।
पकड़ सजन बैयां ॥

राग काफी ताल कहरवा

ऐसो जी राम नाम रसखान ।
मूरख याको कभी न पीवे—पीवे चतुर सुजान ॥
नारद जी ने, शारद जी ने पीयो याको बोल बोल ।
वाल्मीकि, व्यास जी ने पीयो याको तोल तोल ॥
गोपीचन्द, भरथरी ने पीयो याको डोल डोल ।
पारवती, शंकर जी ने पीयो याको घोल घोल ॥
तुलसी, कबीर, गुरुनानकजी ने पियो जाको खोल खोल ।
दादु, सुन्दर, अहिल्या, मीरा, पीयो याको मोल मोल ॥
रोल रोल पीयो हनुमान, ऐसो जी राम नाम रसखान ॥

राग—भैरवी, ताल—झपताल

संसार सागर तरन को 'करणधार,
तेरो नाम प्रेम गुण भक्ति तरणी ।
खेवनिहारो तिहारो कृपा कोर,
ध्यान तव करूवार निस्तार करनी ॥

सप्त दीप नव खण्ड फैल्यो सुजश चारु,
याते रटत रहत सुर शंभु धरनी ।
अष्ट सिद्धि नव निधि पावत ततछिन,
देहू अभय वर तू घनवरनी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

राग—देश, ताल—चौताला

काहे को भटकत फिरत रे मन ले हरी नाम जासों काम ।
तीरथ व्रत नेम धर्म पट कर्म त्यज भये एक नाम ॥
कलि काल औरन हिय के रह्यो हरि,
व्योहार वही जपतप वही है धाम ।
कहै बैजू बावरो सुन हो गुणी जन सांचो,
संसार मध एक ही है राम ॥

卐

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आर्य-गान

राग मिश्र बहार (तीन ताल)

जागो हिन्दू बहुबल धारी ,
जागो जग-मंगलकारी ।

चन्द्र-सूर्य के सग तुम्हीं ने जगकर जगत जगाया ।
तुमसे सभ्यता धर्म मानव-समाज ने पाया ॥
पृथ्वी पर आदर्श सृष्टि भारत के आविष्कारी ।
बोलो २ कहाँ गई अद्भूत शक्तियाँ तुम्हारी ॥ जागो जग० ॥

रत्नमयी कहँ भूमि भारती सी शोभा आगारा ।
सुधामयी सन्ताप हारिणी कहाँ गंग-सी धारा ॥
हिम किरीट सर्वोच्च हिमालय तपोधाम कैलाश ।
आर्य-धर्म सा कहाँ धर्ममंगलमय वेद प्रकाश ॥
तेरी समता कौन विश्व में कर सकता संसारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

तन्त्र, मन्त्र, विज्ञान, स्वस्तिका ज्योतिष का निर्माता ।
जगद्गुरु तू ही है, तू ही जग का आश्रय दाता ॥
तेरे ही गीता, वेदों का ले ले कर आधार ।
प्रचलित हुए विश्व में अगणित धर्म अनेक प्रकार ॥
प्राणीमात्र का संरक्षक भूमण्डल का भण्डारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

ऋषि वशिष्ठ, वाल्मीकि, व्यास, शुक मुनिवर नारद ज्ञानी ।
कौशिक, परशुराम से प्रतिभा-पुंज ब्रह्म-विज्ञानी ॥

BajiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

कपिल, सांख्य, गौतम, पातंजलि, सृष्टितत्व के ज्ञाता ।
योगसूत्र उपनिषद् प्रणेता श्रुति वेदान्त विधाता ॥
उपजाये तू ने धन्वन्तरि आयुर्वेद प्रसारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥जागो जग० ॥

था सर्वस्व धर्म ही तेरा जीवन का आधार ।
इसकी रक्षाहित महारथी विविध लिया अवतार ॥
राम कृष्ण ने धर्मद्वेषियों का करके संहार ।
आर्य-धर्म की ध्वजा उड़ायी, हरा भूमि का भार ॥
जपते जिनका नाम भारती, भक्ति सहित नरनारी ।
बोलो २ कहाँ गई ॥ जागो जग० ॥

योगी-जनक, त्यागी दधीचि-सा, हरिश्चन्द्र-सा दानी ।
हनुमान-सा सेवक, द्रोणाचार्य युद्ध-विज्ञानी ॥
सत्यव्रती युधिष्ठर-सा, भीमार्जुन-सा बलशाली ।
कँह जननी प्रणपाल भीष्म-सा पुत्र जनाने वाली ॥
आस्तिकता, बल, वीर्य, त्याग, तप की तेरी बलिहारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ।

बालक, ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, लव-कुश, अभिमन्यु समान ।
है कोई इतिहास दिखावे ऐसे प्रतिभावान् ॥
कँह सीता-सी सती, द्रौपदी, विदुला-सी मातायें ।
स्वाभिमानिनी सावित्री, पद्मिनी आर्य ललनायें ॥
कँह चित्तोड़-मेवाड़-वीरजा, भारत की सी नारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

जीव दशा अनुभव कर जिसने भौतिक ममता छोड़ी ।
क्रूर निदय हृदयों पर जिसने करुणा दया निचोड़ी ॥
सत्य, अहिंसा, दया मोक्ष का करते मन्त्र प्रदान ।
यहीं आर्य गौतम प्रकटे थे, बुद्धदेव भगवान् ॥
है जिसकी उदार दीक्षा का आधा विश्व पुजारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jai

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ऋषभदेव, शंकर, रामानुज, नानक आदि प्रचारक ।
भिन्नप्रणाली के थे पर थे आर्य-धर्म प्रतिपालक ॥
वेदविहित है बौद्ध-जैनमत सत्य अहिंसा सार ।
सब का है उद्देश्य एक ही, आर्य-धर्म-विस्तार ॥
स्वामी दयानन्द ने दे दी, जिसमें नई उजारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

उच्च आत्मविद्या का तू था सदा शक्ति का केन्द्र ।
अगणित महाप्राण जाये अगणित सुरेन्द्र राजेन्द्र ॥
उपजाया चाणक्य राजगुरु, चन्द्रगुप्त नृप मौर्य ।
अलक्षेन्द्र सिहरा था जिसका देख रणोद्यम शौर्य ॥
भारत सारा वलख, बुखारा तक जिसने विस्तारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

तेजस्वी धर्मिष्ठ दयामय, नृप-कुल का अभिमान ।
हुआ न अब तक पृथ्वी पर, सम्राट अशोक समान ॥
प्रजा-हितैषी, न्याय-शील आदर्श-राज्य विस्तारी ।
द्वीपान्तर में बौद्ध-सनातन-हिन्दू-धर्म प्रसारी ॥
स्तम्भ शिलालेखों में जिसकी, विदित कीर्तियां सारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

सरस्वती सुत हर्ष, भर्तृहरि, गोरख से गुरुदेव ।
कविवर भारवि, कालिदास, भवभूति, माघ, जयदेव ॥
जनक प्रतापी, भोजराज, शक, विक्रम नृपति समान ।
जिसके यश का संवत्सर कर रहा आर्य गुणगान ॥
हिन्दूपति प्रताप से जाये, तू ने सुत बलधारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

रामदास गुरु, वीर शिवाजी, गो-ब्राह्मण प्रतिपालक ।
गुरु गोविन्द सा आत्मत्यागी, तेरे ही ये बालक ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

सूर, कबीर, भक्तवर तुलसी, रामकृष्ण गुणगायक ।
तेरी समता कौन विश्व में, कर सकता संसारी ॥
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

तिलक बाल गंगाधर पण्डित हिन्दूराष्ट्र के नेता ।
अद्भुत हुए तपस्वी त्यागी—गीता-भाष्य-प्रणेता ॥
है प्रत्यक्ष आज भी तेरी गुरुता का अभिमान ।
विश्व-पूज्य गांधी-सा नेता तू ने दिया महान् ॥
सत्य अहिंसा धर्म प्रसारक, छुआछूत उद्धारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

हो वैभव सम्पन्न गुणाकर शक्ति बुद्धि का स्वामी ।
जीव अमर है मृत्यु वस्त्र पवितंन का अनुगामी ॥
पाकर गीता वेदों का आध्यात्मिक-ज्ञान प्रकाश ।
अरे आर्य ! उठ जाग, हो रहा क्यों निश्चेष्ट हताश ॥
पांचजन्य वह शख फूक दे तज निर्बलता सारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

अरे भ्रांत ! ज्यों चंचल जल में रवि का रूप अनेक ।
किन्तु वही प्रतिबिम्ब दीखता नीर स्थिर में एक ॥
इसी भांति इस आर्य-धर्म के बिखर रहे है दाने ।
इन्हें गूंथ कर प्रेम-सूत्र में फिर तू देख सयाने ॥
देखेगा हिन्दुत्व-शक्ति जग विस्तृत अचरज कारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

वही हिमालय, सागर गंगा, वही प्रकृतियां दासी ।
आर्य सुसंस्कृत उच्च गुणों का अब भी तू अभ्यासी ॥
नया ज्ञान भण्डार शक्ति संग्रह कर नई प्रवीणा ।
अरे बन्धु ! उठ जाग बजादे जगनिनादिनी वीणा ॥
सजग हो उठे सकल सुप्त संसार मार किलकारी ।
बोलो २ कहाँ गई० ॥ जागो जग० ॥

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एक बार फिर उठे हिमालय पर हिन्दुत्व-पताका ।
करें समुज्ज्वल सिंह लाड़ले मुख हिन्दू माता का ॥
हम बन्धू हैं कहें एक मिल लंका चीन जापान ।
पूर्ण बुद्ध, जिन, नानकादि का हो उद्देश्य महान् ॥
'माधव' तेरी महाशक्ति पर जावे जग बलिहारी ।
बोलो २ कहाँ गई अद्भुत शक्तियां तुम्हारी ॥

जागो जग मंगलकारी ।
जागो हिन्दू-बहुबल धारी ॥

नाम ध्वनि

सत चित आनन्द राजा राम ।
पतित पावन श्री पति राम ॥
गति भर्त्ता प्रभु साखी राम ।
सत्यं शिवं सुन्दरम् राम ॥
दुःख हर्ता सुख कर्ता राम ।
पतित पावन प्रभु तेरो नाम ॥

ओ३म् नाम ओ३म् नाम ओ३म् नामजी ।
सत नाम सत नाम सत नाम जी ॥
धन्य प्रभू धन्य प्रभू धन्य प्रभू जी ।
नमो प्रभू नमो प्रभू नमो प्रभू जी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो ।
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ॥
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः ।
सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥

—हनुमन्नाटक

卐

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation,

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.